

# Living The Maximum Life With Power and Purpose

Steve Flatt

You are encouraged to study your Bible to prove the truth presented in these lessons or any other lesson. The comments presented herein are those of the compiler. You should verify them and anything else taught by others; e.g., a pastor, preacher, priest, some Bible scholar, commentator, or BibleWay Publishing as it is YOUR responsibility to seek, know and do God's will.

In verifying you may wish to read different Bible translations – ESV, NIV, NASU, RSV, KJV. Also use Strong's Greek and Hebrew Dictionary, Thayer's Greek-English Lexicon and Vines Expository Dictionary for meaning of words or phrases you do not know. Be careful with definitions as all dictionaries give both current and old meaning of words and phrases.

The meaning of words and phrases change over time. Also, several Greek words may be translated into one word in English and may distort the original meaning. For instance, the Greek words *de* and *kai* were translated as "and" in English. *De* is used to separate two nouns whereas *kai* connects two nouns

Let God speak to you from His Holy Word as recorded in the Bible.

Table of Contents

What Am I Doing Here?

What Are My Values?

Your Function Within the Body

Commitment to Christ

Setting Spiritual Based Goals

Organizing My Time

Right Relationships

The Art of Finishing

# अधिकतम जीवन जिउने

शक्ति और उद्देश्य के साथ अधिकतम जीवन जीना

Steve Flatt

## विषयसूची

मैं यहां क्या कर रहा हूँ?  
मेरे मूल्य क्या हैं?  
शरीर के भीतर आपका कार्य  
मसीह के प्रति प्रतिबद्धता  
आध्यात्मिक आधारित लक्ष्य निर्धारित करना  
मेरा समय व्यवस्थित करना  
सही रिश्ते  
फिनिशिंग की कला

## परिचय

परमेश्वर ने अपनी बुद्धि से एक अद्वितीय सृष्टि, मनुष्य की रचना की। उसने उसे अपनी समानता में बनाया। उनकी अन्य सभी रचनाएँ प्रकृति में रोबोटिक हैं, जैसा कि वे करने के लिए बनाए गए थे, कोई शिकायत नहीं और कोई विद्रोह नहीं; यानी, चुनने की क्षमता के बिना।

मानवजाति को भी एक उद्देश्य के साथ और तर्क और तार्किक क्षमताओं के साथ बनाया गया था। वे निर्णय ले सकते हैं और चुन सकते हैं। हमारे विकल्प हमारे उद्देश्य को पूरा करने में हमारी उत्पादकता को या तो सहायता करते हैं या नुकसान पहुंचाते हैं। वे एक पूर्ण जीवन जीने की हमारी क्षमता में सहायता या चोट भी पहुंचाते हैं। "शक्ति और उद्देश्य के साथ अधिकतम जीवन जीना" में प्रस्तुत पाठों को हमारी पूरी क्षमता तक पहुंचने में हमारी सहायता करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

अध्याय 1

## मैं यहां क्या कर रहा हूँ?

एक बार एक बंदा था जो जब भी बोलने जाता, जहां जाता, हर भाषण की शुरुआत सवाल पूछ कर करता; तुम यहां क्यों हो? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कहाँ गया, वह कहाँ गया, उसने उठकर कहा, "तुम यहाँ क्यों हो?" खैर एक दिन उन्होंने एक पागलखाने में बात की। वह खड़ा हुआ और हमेशा की तरह शुरू हुआ। उसने कहा, "तुम यहाँ क्यों हो?" एक लंबा ठहराव था, एक साथी पीछे से खड़ा हुआ और बोला, "ठीक है, हम सब यहाँ हैं क्योंकि हम सब वहाँ नहीं हैं।"

आज आप उस प्रश्न का उत्तर कैसे देंगे? तुम यहाँ क्यों हो और कहाँ जा रहे हो? ओलिवर वेंडेल होम्स, प्रसिद्ध सुप्रीम कोर्ट जस्टिस,



BibleWay Publishing grants permission to reproduce for

non-commercial purposes lessons in their entirety without change or charge.

Randolph Dunn, Publisher - Roberto Santiago Editor

Website: [thebiblewayonline.com](http://thebiblewayonline.com)

Contact us at [info.BiblewayPublishing@gmail.com](mailto:info.BiblewayPublishing@gmail.com)

August 1, 2006

## Introduction

**God in His wisdom created one unique creation, man. He created him in his likeness. All other of His creations are robotic in nature by doing only as they were created to do, no complaining and no rebelling; i.e., without the ability to choose.**

**Mankind was also created with a purpose and with logic and reasoning abilities. They can decide and choose. Our choices either aid or harm our productivity in fulfilling our purpose. They also help or hurt our ability to live a fulfilled life. The lessons presented in the "Living The Maximum Life with Power and Purpose" are designed to assist us in reaching our full potential.**

## Chapter 1

What Am I Doing Here?

**Once there was a fellow who whenever he went to speak, wherever he went, he began each speech by asking the question; Why are you here? It didn't matter where he went, wherever he went, he got up and said, "Why are**

अनुपस्थित दिमागी होने के लिए जाने जाते थे। एक बार वह ट्रेन में था, कंडक्टर उसके पास आया और देखा, उसका टिकट खो गया है। कंडक्टर ने उसे पहचान लिया और उससे कहा, "अब, माननीय, आप इसके बारे में चिंता न करें। आपको वह टिकट बाद में मिल जाएगा। जब आप कर लेंगे, तो बस इसे हमें डाक से भेज दें।" ओलिवर वेन्डेल होम्स ने उसे देखा और कहा, "मेरे अच्छे आदमी, मैं तुम्हारे टिकट पाने के बारे में चिंतित नहीं हूँ।" उन्होंने कहा, "मुझे यह जानने की जरूरत है कि मैं कहां जा रहा हूँ।"

अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर जानता है कि आप यहाँ क्यों हैं और वह जानता है कि आपको कहाँ जाना है। वह आपको जीवन जीने के लिए सशक्त बनाना चाहता है। आपके जीवन के लिए परमेश्वर का एक बहुत स्पष्ट और विशिष्ट उद्देश्य है। ईश्वर बिना उद्देश्य के कुछ भी नहीं बनाता है। यदि आप जीवित हैं, तो उसके पास आपके लिए एक उद्देश्य है। त्रासदी यह है कि ज्यादातर लोग अपना पूरा जीवन बिना यह जाने कि वह उद्देश्य क्या है, कभी भी अपनी जगह की खोज नहीं करते हैं और कभी यह पता नहीं लगाते हैं कि वे कहाँ फिट होते हैं।

लोग जीवन के तीन स्तरों में से एक पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

### 1. प्लोडर

इस दुनिया का लगभग आधा हिस्सा हल चलाने वाला है। वे ऐसे लोग हैं जिनका जीवन रोबोटिक है। वे वास्तव में नहीं रहते; वे बस मौजूद हैं और बस इसे बाहर निकालें। वे जीवन भर मेहनत करते हैं। अगर आप उनसे पूछें कि आप किस लिए जीते हैं? वे कहते थे, "सप्ताहांत" या "अगस्त में मेरी दो सप्ताह की छुट्टी।" वे हल चलाने वाले हैं। वे जीवन भर मेहनत करते हैं और वे इसे चूक जाते हैं।

### 2. ढकेलनेवाला

लगभग आधी आबादी पुशर है। धक्का देने वाले गाजर का पीछा करने वाले हैं, वे सीढ़ी पर चढ़ने वाले हैं और वे वही हैं जिन्हें दुनिया सफल मानती है। ये वे लोग हैं जिनसे हल चलाने वाले ईर्ष्या करते हैं क्योंकि उन्होंने पैसा, संपत्ति और प्रतिष्ठा अर्जित की है। एक हल चलाने वाले को, वह ढकेलने वाले का जीवन बहुत अच्छा दिखता है। लेकिन सच तो यह है कि आखिरकार धक्का देने वाले को हल चलाने वालों का खालीपन महसूस होता है। क्योंकि जब उन्होंने इतना पैसा, कई अच्छी कारें अर्जित की हैं और अपने बच्चों को सब कुछ दिया है, तो वे खुद से पूछते हैं: मुझे तृप्ति का अनुभव क्यों नहीं होता?

यह आश्चर्यजनक है कि पिछले कुछ वर्षों में किताबों की दुकान की अलमारियों को भरने वाली पुस्तकों की संख्या सफलता की शून्यता को दर्शाती है। यहाँ कुछ पुस्तकों के चार या पाँच शीर्षक हैं जो प्रकाशित हुई हैं: द प्राइस ऑफ़ सक्सेस, इज़ इट वर्थ इट? या इनके बारे में क्या ख्याल है, अगर मैं इतना सफल हूँ, तो मुझे जीवन नकली क्यों लगता है? और द सक्सेस

you here?" Well one day he spoke at a mental institution. He stood up and began like he always did. He said, "Why are you here?" There was a long pause, a fellow stood up in the back and said, "Well, we're all here because we're not all there."

How would you answer that question today? Why are you here and where are you going? Oliver Wendell Holmes, the famous Supreme Court Justice, was known for being absent-minded. One time he was on a train, the conductor came up to him and lo and behold, he had lost his ticket. The conductor recognized him and said to him, "Now, your honor, don't you worry about it. You'll find that ticket later. When you do, just mail it to us." Oliver Wendell Holmes looked at him and said, "My good man, I'm not worried about you getting your ticket." He said, "I need it to know where I'm going."

The good news is God knows why you're here and He knows where you need to go. He wants to empower you to live the life. God has a very clear and distinct purpose for your life. God does not make anything without a purpose. If you are alive, He has a purpose for you. The tragedy is that most people live their entire life never learning what that purpose is, never discovering their niche and never finding out where they fit.

People tend to live out their lives on one of *three levels of living*.

### 1. Plodders

Almost half of this world are plodders. They are people whose lives are robotic. They don't really live; they just exist and just eke it out. They plod through life. If you were to ask them, what do you live for? They'd say, "The weekend" or "my two weeks vacation in August." They're plodders. They plod through life and they miss it.

### Pushers

Almost the other half of the population are pushers. The pushers are the carrot chasers, they're the ladder climbers and they're the ones the world deems successful. These are the folks that the plodders envy because they've made money, possessions and prestige.

टैप, री-थिंकिंग योर एम्बिशनस। यहां एक है। अर्थ की खोज। मैं आपको एक और देता हूँ, बियॉन्ड सक्सेस, कॉपिंग विद द फास्ट-ट्रैक ब्लूज़। आपको यह जानने के लिए उन पुस्तकों को पढ़ने की भी आवश्यकता नहीं है कि वे क्या कह रहे हैं, है ना?

वो क्या कह रहे थे? वे कह रहे हैं कि जिसे यह दुनिया सफलता कहती है, वह संतुष्ट नहीं करती। क्यों? क्योंकि यह हमारा उद्देश्य नहीं है। भगवान ने आपको इस धरती पर पैसे कमाने के लिए नहीं रखा है। जीने के लिए उनका आदर्श वाक्य यह नहीं है: "जो कुछ आप कर सकते हैं उसे प्राप्त करें और अपने कैन पर बैठें।" यह परमेश्वर का उद्देश्य नहीं है। भगवान ने आपको सफलता की किसी मनमानी सीढ़ी पर चढ़ने के लिए नहीं बनाया है जो उन्होंने नहीं बनाया।

### 3. उद्देश्यपूर्ण जीवन

इस पुरानी दुनिया में केवल कुछ अनमोल लोग ही इसे महसूस कर पाते हैं। इसे उद्देश्यपूर्ण जीवन कहा जाता है। ये कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना की खोज की है और जैसे ही वे उस उद्देश्य को प्राप्त करते हैं, वे शक्ति प्राप्त करते हैं, वे महत्व पाते हैं और उन्हें संतुष्टि मिलती है। और तो और, ये वे लोग हैं जो इस पुरानी दुनिया पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं।

जब आप इतिहास में उन लोगों को देखते हैं जिन्होंने इस दुनिया पर सबसे बड़ा प्रभाव डाला है, तो वे सबसे प्रतिभाशाली नहीं हैं, सबसे अच्छे शिक्षित नहीं हैं और न ही सबसे धनी हैं। नहीं, जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छे या बुरे के लिए सबसे बड़ा अंतर पैदा किया है, वे वे लोग थे जिनके पास सबसे गहरा विश्वास था जो एक वास्तविक उद्देश्य से उपजा था। चाहे वह लिंकन, बुद्ध, मार्क्स, या जीसस थे, सही या गलत, अच्छा या बुरा, जिन्होंने सबसे बड़ा अंतर किया है वे हैं जो एक उद्देश्य से प्रेरित थे। महान जीवन उद्देश्यपूर्ण जीवन हैं, वे हल चलाने वाले नहीं हैं और वे ढकेलने वाले नहीं हैं।

यदि आप अधिकतम जीवन जीना चाहते हैं, तो आपको अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य का पता लगाने और उसे खोजने, विकसित करने और बनाए रखने की आवश्यकता है।

निम्नलिखित पुरुषों के लिए कुछ संदर्भ हैं जिन्होंने जीवन को तीसरे स्तर पर पाया और जीया - उद्देश्यपूर्ण जीवन। पहले दाऊद, पुराने नियम से इस्राएल का राजा है। नया नियम प्रेरितों के काम 13:36 में कहता है, "क्योंकि जब दाऊद ने अपनी पीढ़ी में परमेश्वर की इच्छा पूरी की, तो वह सो गया (मर गया); उसे दफनाया गया था।" क्या यह एक महान श्लोक नहीं है? कोई कहता है, "इसमें इतनी बड़ी बात क्या है? उसने परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा किया और फिर वह मर गया।" आप किसी के बारे में और क्या कह सकते हैं? उसने वही किया जो परमेश्वर चाहता था कि वह अपने जीवन में करे। फिर वह मर गया। वह मर गया, महान, और कुछ नहीं करना है। वह वही था जो परमेश्वर चाहता था कि वह हो और फिर

**To a plodder, he pusher's life looks pretty good. But the fact is, eventually the pusher feels the emptiness of the plodders. Because after they've earned so much money, many nice cars and given their kids everything, they ask themselves: Why don't I feel fulfilled?**

**It's amazing the number of books that fill the bookstore shelves in the last couple of years that show the emptiness of success. Here are four or five titles of some books that have come out: *The Price of Success, Is it Worth It?* Or how about these, *If I'm So Successful, Why Do I Feel Life a Fake?* and *The Success Trap, Re-Thinking Your Ambitions*. Here's one. *The Search for Meaning*. Let me give you one more, *Beyond Success, Coping With the Fast-Track Blues*. You don't even have to read those books to know what they're saying, do you?**

**What are they saying? They're saying that what this world calls success does not satisfy. Why? Because it's not our purpose. God didn't put you on this earth to make money. His motto for living is not: "Get all you can and sit on your can." That's not God's purpose. God didn't make you to climb some arbitrary ladder of success that He did not build.**

### **3. Purposeful Living**

**Only a precious few in this old world ever realize it. It's called purposeful living. These are the few folks who've discovered God's plan for their lives and as they tap into that purpose, they find power, they find significance and they find satisfaction. What's more, these are the people who make the greatest impact on this old world.**

**When you look across history at the people who've made the greatest impact on this world, they are not the ones who are the brightest, not the best educated and not the wealthiest. No, the people who have made the biggest difference in this world, for good or for bad, were those with the deepest convictions that stem from a genuine purpose. Whether it was Lincoln, Buddha, Marx, or Jesus, right or wrong, good or bad, the ones who've made the greatest difference are the ones who were driven by a purpose. Great lives are purposeful lives, they're not plodders and they're not pushers.**

**If you want to live the maximum life, you need to tap**

वह मर गया-क्या एक समाधि-लेख है। उसने अपनी पीढ़ी में परमेश्वर के उद्देश्यों की सेवा की।

दूसरा उदाहरण प्रेरित पौलुस का है। अब एक आदमी था जो अपने जीवन के उद्देश्य को जानता था। उसने प्रेरितों के काम 20:24 में कहा, "मैं अपने प्राण को अपने लिये कुछ भी नहीं समझता, यदि केवल दौड़ पूरी करूं, और जो काम प्रभु यीशु ने मुझे दिया है उसे पूरा करूं।" अपनी बाइबल में उन शब्दों को रेखांकित करें: जो काम प्रभु यीशु ने मुझे दिया है उसे पूरा करो।

इस श्रृंखला में, मैं चाहता हूँ कि आप उस कार्य की खोज करें जिसे प्रभु चाहता है कि आप उसे पूरा करें। यह आवश्यक नहीं है कि यह ठीक वैसा ही हो जैसा पौलुस का था, वास्तव में, ऐसा नहीं होगा। लेकिन हमारी श्रृंखला के अंत तक, मेरा लक्ष्य है कि आपके पास कुछ ऐसा हो जो अभी आपके पास नहीं है। मैं चाहता हूँ कि आपके पास एक लिखित जीवन योजना हो, हाँ, एक लिखित जीवन योजना! आप कह सकते हैं "ठीक है, मैंने ऐसा कभी नहीं किया है।" शायद इसलिए तुम एक हल चलाने वाले हो। शायद इसीलिए आप उस पुशर ट्रेडमिल पर अटके हुए हैं। मैं चाहता हूँ कि हम बाइबल का अध्ययन करें और प्रार्थना करें। मैं चाहता हूँ कि आप अपनी खुद की जीवन योजना लिखें। यह मुझे आश्चर्यचकित करता है कि कितने व्यवसायी लोग अपने निगम के लिए एक लिखित व्यवसाय योजना तैयार करने में सप्ताह व्यतीत करेंगे। या कितने शिक्षक अपनी कक्षाओं के लिए पाठ योजनाओं पर काम करते हुए अनगिनत घंटे बिताएंगे, और फिर भी वास्तव में जीवन योजना बनाने के बारे में कभी नहीं सोचेंगे।

आइए लोगों के लिए परमेश्वर के सामान्य उद्देश्यों पर विचार करके अधिकतम जीवन के लिए एक जीवन योजना विकसित करना शुरू करें। इस श्रृंखला के अन्य पाठों में, द मैक्सिमम लाइफ, हमारे अपने जीवन के लिए विशिष्ट अनुप्रयोग बनाया जाएगा क्योंकि उनका पुनरीक्षण किया जाएगा।

### **अपने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य क्या हैं?**

#### **1. परमेश्वर का प्रेम पाना।**

इफिसियों 2:4-5 में पौलुस ने कहा, "परन्तु दया के धनी परमेश्वर ने हम से अपने बड़े प्रेम के कारण हमें जीवित किया..." उसने हमें हमसे प्रेम करने के लिए बनाया। 1 यूहन्ना 4:10, "यह प्रेम है: यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि यह कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" क्रूसीकरण के पीछे यही संपूर्ण प्रेरणा है।

अब दोस्तों, अगर आप इसे याद करते हैं, तो आप वास्तव में जीने का मूल कारण खो देते हैं। मैं हैरान हूँ कि कितने लोग जो इसे याद करते हैं, यह सोचते हैं कि भगवान उन्हें पसंद नहीं करते हैं और यह कि भगवान ने उन्हें यहां एक चक्रव्यूह के माध्यम से चलाने के लिए रखा है, यह देखने के लिए कि

into God's purpose for your life and discover, develop and maintain it.

The following are a couple of references to men who found and lived life at the third level - purposeful living. First is David, King of Israel from the Old Testament. The New Testament says in Acts 13:36 "For when David had served God's purpose in his own generation, he fell asleep (died); he was buried." Isn't that a great verse? Somebody says, "What's so great about that? He served God's purpose and then he died." What more could you say about somebody? He did what God wanted him to do with his life. Then he died. He died, great, nothing else to do. He was what God wanted him to be and then he died—what an epitaph. He served God's purposes in his generation.

Another example is the Apostle Paul. Now there was a man who knew his purpose in life. He said in Acts 20:24 "I consider my life worth nothing to me, if only I may finish the race and complete the task the Lord Jesus has given me." Underline those words in your Bible: Complete the task the Lord Jesus has given me.

In this series, I want you to discover the task that the Lord wants you to complete. It won't necessarily be exactly the same as Paul's, in fact, it will not. But by the end of our series, my goal is for you to have something that you don't have right now. I want you to have a written out life plan, Yes, a written out life plan! You might say "Well, I've never done that." Maybe that's why you're a plodder. Maybe that's why you're stuck on that pusher treadmill. I want us to Bible study and pray. I want you to write out your own life plan. It amazes me how many business people will spend weeks crafting out a written business plan for their corporation. Or how many teachers will spend countless hours working on lesson plans for their classes, and yet would never think about actually constructing a life plan. That's not just ironic, that's foolish.

Let's get started developing a life plan for the maximum life by considering God's general purposes for people. In the other lessons in this series, The Maximum Life, specific application for our own lives will be made as they are revisited.

What are God's purposes for his people?

वह उन्हें कैसे फंसा सकता है। नहीं! अपने आप को उस तरह की सोच से मुक्त करें जो कहती है कि परमेश्वर आपसे प्रेम नहीं करता। अन्यथा, आप जीवन में अपने उद्देश्य की खोज कभी नहीं कर पाएंगे। भगवान आपको किसी भी चीज से ज्यादा प्यार करता है या कोई भी संभवतः कर सकता है।

2. उसकी रचना का प्रबंधन करने के लिए।

उसने उस उद्देश्य को अदन की वाटिका में स्थापित किया। "इस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और मादा उसने उन्हें बनाया। परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और भूमि पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:27-28)

लोग, यह भण्डारीपन की अवधारणा है। हमारे परमेश्वर के पास जो कुछ है उसका स्वामी है और हमें यहाँ भण्डारी के रूप में रखा गया है। दूसरे शब्दों में, हमें यहाँ प्रबंधकों के रूप में रखा गया है। यह बड़े किराने की दुकान पर साथी की तरह है। वह शेल्फ पर सभी स्टॉक का मालिक नहीं है, लेकिन वह इसके लिए जिम्मेदार है। उसे उस स्टोर के मालिक ने वहाँ उसका प्रभारी होने के लिए रखा था। परमेश्वर ने मनुष्यों को विवेकपूर्ण ढंग से तब और अब पूरी पृथ्वी का प्रबंधन करने के लिए बनाया था। हम यहां क्यों हैं इसका एक हिस्सा है।

3. अच्छे कार्य करना।

उसने हमें अच्छे काम करने के लिए बनाया है। इफिसियों 2:10 इसे पूरी तरह से स्पष्ट करता है, "क्योंकि हम परमेश्वर के बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।" अब बाद में हम यह देखने जा रहे हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिए किस तरह की अच्छी चीजें रची हैं, और आपके पास अपने जीवन का विश्लेषण करने और उन अच्छे कामों को प्राथमिकता देने का अवसर भी होगा जो परमेश्वर वास्तव में चाहता है कि आप अपने जीवन में करें। आपके अपने अस्तित्व के संदर्भ में क्योंकि हम सभी के अलग-अलग अस्तित्व हैं। हम अलग-अलग जीवन जीते हैं।

4. जीवन का आनंद।

यूहन्ना 8, यीशु हमें बताता है कि शैतान झूठा है; वास्तव में, वह सभी झूठों का जनक है। निश्चित रूप से, सबसे बड़ा झूठ जो शैतान ने मानवता को खरीदने के लिए दिया है वह यह है कि हमारा परमेश्वर चाहता है कि हम दुखी हों। अदन की वाटिका में, शैतान ने हव्वा से अनिवार्य रूप से कहा जब वह उस फल को देख रही थी, "ओह, परमेश्वर नहीं चाहता कि तुम कोई मज़ा करो। परमेश्वर नहीं चाहता कि तुम वास्तव में जीवन का आनंद लो।" तब से वह उस पुराने झूठ से लाखों लोगों द्वारा हमें नष्ट कर रहा है।

## 1. To be loved by God.

In Ephesians 2:4-5 Paul said, "But because of His great love for us, God, who is rich in mercy, made us alive..." He made us to love us. 1 John 4:10, "This is love: not that we loved God, but that he loved us and sent His own Son as an atoning sacrifice for our sins." That's the whole motivation behind the crucifixion.

Now folks, if you miss that, you really miss the core reason for living. I'm amazed at how many people who miss that tend to think that God doesn't like them and that God put them here to run through a maze to see how he could trip them up. NO! Rid yourself of the kind of thinking that says God does not love you. Otherwise, you'll never discover your purpose in life. God loves you more than anything or anyone else possibly could.

## 2. To manage his Creation.

He set that purpose forth in the Garden of Eden. "So God created man in his own image, in the image of God he created him; male and female he created them. God blessed them and said to them, "Be fruitful and increase in number; fill the earth and subdue it. Rule over the fish of the sea and the birds of the air and over every living creature that moves on the ground." (Genesis 1:27-28)

People, this is the concept of stewardship. Our God owns everything that is and we are put here as stewards. In other words, we're put here as managers. It's like the fellow at the big grocery store. He doesn't own all of the stock on the shelf, but he's responsible for it. He was put there by the owner of that store to be in charge of it. God made humans to prudently manage the whole earth, then and now. That's part of why we're here.

## To do good things.

He made us to do good things. Ephesians 2:10 makes that perfectly clear, "For we are God's workmanship, created in Christ Jesus to do good works, which God prepared in advance for us to do." Now later we're going to look at what kind of good things that God created for us to do, and you'll even have the opportunity to analyze your own life and to prioritize the good works that God really wants you to do within

यीशु ने कहा, "मैं इसलिए आया हूँ कि तुम जीवन पाओ और पूरा पाओ।" (यूहन्ना 10:10) इस पूरी श्रृंखला के लिए यही हमारा विषय पद है। "मैं इसलिए आया हूँ कि आपके पास जीवन हो और आप इसे पूरी तरह से पाएं।"

पौलुस ने 1 तीमुथियुस 6:17 में कहा, "परमेश्वर पर आशा रखो, जो हमारे सुख का भरपूर प्रबन्ध करता है।" मुझे सुनें क्योंकि यह कुछ ऐसे झूठों को तोड़ देगा जिन पर शैतान ने आपको विश्वास दिलाया है। भगवान ने आपको मस्ती करने के लिए बनाया है। उसने आपको जीवन का आनंद लेने के लिए बनाया है, लेकिन यह हमारे लिए उसके उद्देश्य को जीने से आता है, शैतान के सभी झूठों पर विश्वास करने से नहीं। यह उस कुंजी का हिस्सा है जिसे हम शेष पाठों में खोजने जा रहे हैं। लोग, इन चार उद्देश्यों को अच्छी तरह से चिन्हित करें क्योंकि हम उनके पास वापस आएंगे।

## परमेश्वर के उद्देश्य को जीना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

### 1. यह मेरा उत्साह बढ़ाता है.

यह मेरी प्रेरणा को बढ़ाता है क्योंकि उद्देश्य प्रेरणा प्रदान करता है। जब आप प्रश्न का उत्तर खोज लेते हैं, तो मैं यहाँ क्यों हूँ? यह आपको चकित कर देगा कि आपके पास कितनी अधिक ऊर्जा है। आप यह कहते हुए बिस्तर से उठ जाएंगे, "सुप्रभात, भगवान!" इसके बजाय, "गुड लॉर्ड, सुबह हो गई है!" परमेश्वर ने यिर्मयाह 29:11 में कहा, "क्योंकि मैं तुम्हारे लिए अपनी योजनाएँ जानता हूँ, यहीवा की यह वाणी है, 'तुम्हारी भलाई की योजनाएँ हैं न कि हानि पहुँचाने की, योजनाएँ तुम्हें भविष्य की आशा देती हैं।'" यह कैसे बनता है। आपको लगता है?

जब आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों से जुड़ते हैं, तो आप उत्साहित हो जाते हैं। वास्तव में, क्या आप जानते हैं कि हमें उत्साह शब्द कहाँ से मिलता है? उत्साह दो ग्रीक शब्दों से मिलकर बना है - एन थियोस, जिसका अर्थ है "ईश्वर में।" जब आप ईश्वर में, उसकी इच्छा में, उसकी योजना में और उसके उद्देश्य में होते हैं, तो आप उत्साही होते हैं। यह स्वचालित है।

अब स्पष्ट रूप से, मैं केवल एक ईसाई होने के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। मुझे यह कहने से नफरत है, लेकिन आप इसे पहले से ही जानते हैं, वैसे ही बहुत से ईसाई उत्साही बिल्कुल नहीं हैं। इसका कारण यह है कि सुसमाचार का पालन करने के बाद जो उनके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की नींव है, उन्होंने परमेश्वर के उद्देश्य की तलाश करना छोड़ दिया। उन्होंने यहां देखना छोड़ दिया। उन्होंने दूसरे विश्वासियों को देखना छोड़ दिया। यह ऐसा है जैसे उन्होंने मसीह में विश्वास करके, पश्चाताप करके, अंगीकार करके और बपतिस्मा लेकर सुसमाचार का पालन किया और कहा, "धन्यवाद यीशु, क्षमा और उद्धार के लिए, मैं इसे यहाँ से ले लूँगा।" वे कूदते हैं और वे प्लोडिंग के रेगिस्तान, या

the context of your own existence because all of us have different existences. We live different lives.

### To enjoy life.

John 8, Jesus tells us the devil is a liar; in fact, he is the father of all lies. Surely, the biggest lie that Satan has ever gotten humanity to buy into is that our God wants us to be miserable. In the Garden of Eden, Satan essentially told Eve as she was looking at that fruit, "Oh, God doesn't want you to have any fun. God doesn't want you to really enjoy life." He's been destroying us by the millions with that old lie ever since.

Jesus said "I have come that you may have life and have it to the full." (John 10:10) That is our theme verse for this whole series. "I have come that you may have life and have it to the full." Read that again "I have come that you may have life and have it to the full."

Paul said in 1 Timothy 6:17 "put your hope in God who richly provides for our enjoyment." Hear me because this will bash some of the lies that Satan has had you believe. God made you to have fun. He made you to enjoy life, but that comes by living out his purpose for us, not by believing all the devil's lies. That's part of the key that we are going to discover over the remaining lessons. People, mark these four purposes well because we will come back to them.

Why living out God's purpose so important?

### It increases my motivation.

It increases my motivation because purpose provides motivation. When you discover the answer to the question, why am I here? It will amaze you how much more energy you have. You will hop out of bed saying, "Good morning, Lord!" instead of, "Good Lord, it's morning!" God said in Jeremiah 29:11, "For I know the plans I have for you," declares the Lord, "plans to prosper you and not harm you, plans to give you hope for a future." How does that make you feel?

When you plug into God's purposes for your life, you get enthusiastic. In fact, do you know where we get the word enthusiasm? Enthusiasm comes from two Greek words put together—*en theos*, meaning "in God." When you are in God, in His will, in His plan and in His

धक्का देने के रेगिस्तान में तब तक चले जाते हैं जब तक कि वे गैस से बाहर नहीं निकल जाते। लेकिन हर रोज अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना के भीतर रहने से आपका टैंक भरा रहता है और आप प्रेरित रहते हैं। इससे दुनिया में फर्क पड़ता है।

2. यह व्याकुलता को दूर करता है। यह कुंजी है! इस पीढ़ी के नुकसान में से एक यह है कि हमारे पास बहुत सारे विकल्प हैं, है ना? जब मैं बड़ा हो रहा था, तब हमारे पास तीन टीवी चैनल थे जो हमें हमारे पुराने ब्लैक एंड व्हाइट टेलीविजन पर मिलते थे। खरगोश के कानों के साथ केवल एक ही स्पष्ट आवाज। केबल और उपग्रह और सैकड़ों चैनलों के साथ, कई समाचार, खेल, फिल्में, अश्लील साहित्य, कॉमेडी या कार्टून के लिए समर्पित हमारे पास कई विकल्प हैं। अब आईपॉड और सेल फोन और भी अधिक विकल्प प्रदान करते हैं। विकल्प भरपूर हैं।

हमने गतिशीलता के साथ प्रौद्योगिकी को बढ़ाया है। हमारे समय को भरने के विकल्प असीमित हैं, लेकिन हमारा समय सीमित है। हमारे पास अभी भी 24 घंटे हैं। सच कहूँ तो, हममें से बहुतों के पास सब कुछ करने का समय नहीं है। मेरे पास सब कुछ करने का समय नहीं है। पुशर, और वहाँ बहुत सारे पुशर हैं जिन्हें यह सुनने की आवश्यकता है। धक्का देने वाले सोचते हैं कि वे जितना अधिक काम करेंगे, वे उतने ही अधिक संतुष्ट होंगे। गलत! गलत! गलत! प्रभावशीलता के लिए चयन खेल का नाम है। अपनी ऊर्जा को इस बात पर केंद्रित करना कि परमेश्वर आपसे क्या चाहता है, न कि वह जो हर कोई आपसे करना चाहता है। जब आप इस बात पर ध्यान देते हैं कि आपके जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है, तो यह न केवल आपको बताता है कि आपको क्या करने की आवश्यकता है, यह आपको यह भी बताता है कि आपको क्या करने की आवश्यकता नहीं है।

आप में से बहुत से लोग बहुत कुशल हैं, लेकिन आप प्रभावी नहीं हैं। क्या आप जानते हैं कि कुशल और प्रभावी के बीच क्या अंतर है? कार्यकुशलता सही कार्य कर रही है, प्रभावशीलता सही कार्य कर रही है। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मैं सही चीजें कर रहा हूँ, न कि सिर्फ चीजें सही कर रहा हूँ। यदि आप सावधान नहीं हैं, तो आप टाइमिंग पर डेक कुर्सियों की व्यवस्था करेंगे। क्या आपने कभी उसके बारे में सोचा है? यह अच्छा लग रहा है, यह सब साफ है और यह क्रम में है, लेकिन जहाज डूब रहा है। प्रभावशीलता!

पीटर डूकर शायद पिछली शताब्दी के अग्रणी प्रबंधन गुरु थे। उनसे एक बार पूछा गया था: वह कौन सी बुनियादी बात है जो हर व्यवसाय के मालिक को पता होनी चाहिए? डूकर ने कहा, "व्यवसाय से संबंधित केवल दो प्रश्न हैं जो मालिक को जानने की आवश्यकता है। पहला, मेरा व्यवसाय क्या है? और दूसरा, व्यवसाय कैसा है?" आपको यही पूछने की जरूरत है। जीवन में मेरा व्यवसाय क्या है? और प्रश्न संख्या दो, व्यापार

purpose, you are enthusiastic. It's automatic.

Now obviously, I'm not just talking about being a Christian. I hate to say this, but you already know it, way too many Christians aren't enthusiastic at all. The reason is, after obeying the gospel which is the foundation of God's purpose for their life, they quit looking for God's purpose. They quit looking here. They quit looking through other believers. It's like they obeyed the gospel, by believing, repenting, confessing and being baptized into Christ and say, "Thank you Jesus, for forgiveness and salvation, I'll take it from here." They jump in and they drive off into the desert of plodding, or the desert of pushing until they run out of gas. But by living within God's plan for your life everyday your tank stays full and you stay motivated. It makes all the difference in the world.

#### It eliminates distraction.

This is key! One of the pitfalls of this generation is we just have too many options, don't we? When I was a boy growing up, we had three TV channels we received on our old black and white television. Only one came in clear with rabbit ears. With cable and satellite and hundreds of channels, many devoted to news, sports, movies, pornography, comedy or cartoons we have many options. Now Ipods and cell phones provide even more options. Distractions are plentiful.

We've enhanced technology with mobility. The options to fill our time are limitless, but our time is limited. We still have 24 hours a day. Frankly, many of us don't have time to do everything. I don't have time to do everything. Pushers, and there are a lot of pushers out there who need to hear this. Pushers think the more they get done, the more satisfied they will be. Wrong! Wrong! Wrong! Selection is the name of the game for effectiveness. Concentrating your energy on what God wants you to do, not what everybody else wants you to do. When you hone in on what your real purpose for life is, it not only tells you what you need to do, it also tells you what you don't need to do.

Too many of you are very efficient, but you're not effective. Do you know what the difference is between efficient and effective? Efficiency is doing things right, effectiveness is doing right things. I want to make sure

कैसा चल रहा है?

लाइफ फोकस में जबरदस्त शक्ति होती है: यह एक प्रकाश की तरह है जो केंद्रित है। एक प्रकाश लें और इसे एक आवर्धक कांच के माध्यम से फोकस करें। आप प्रकाश की ऊर्जा को वहां केंद्रित करेंगे जहां यह कागज के एक टुकड़े को आग लगा सकता है। यदि आप इसे लेते हैं और इसे और भी अधिक केंद्रित करते हैं तो आप लेज़र नामक एक चीज़ बनाते हैं जो किसी भी चीज़ को काट सकती है। केंद्रित प्रकाश में शक्ति होती है, विसरित प्रकाश में वह शक्ति नहीं होती - ठीक उसी तरह जैसे जीवन के साथ होती है। एकाग्र जीवन में शक्ति है। फैले हुए जीवन में जरा भी शक्ति नहीं है। पौलुस इसे समझ गया, उसने फिलिप्पियों 3:13 में कहा, "परन्तु मैं एक काम करता हूँ: जो पीछे रह गया है उसे भूल कर, आगे की ओर बढ़ता हुआ, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ।" अभी अमेरिका में नंबर एक गेम टिवियल परस्यूट है और मैं बोर्ड गेम की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं जीवन के बारे में बात कर रहा हूँ। हास्यास्पद तरीके से हम अपने जीवन को उन चीज़ों से भर देते हैं जो नहीं हैं

औसत अमेरिकी जो लगभग 85 वर्ष की आयु तक जीवित रहेगा, टेलीविजन देखने में लगभग दस वर्ष व्यतीत करेगा। मुझे बताओ, जो कुछ भी तुमने देखा है, क्या तुमने इतना देखा है कि 10 साल देने लायक है?

आप में से कुछ बहुत व्यस्त हैं। आप में से कुछ, हम में से कुछ, बहुत सी दिशाओं में खिंचे चले आते हैं, बुरा काम नहीं कर रहे हैं, लेकिन तुच्छ चीज़ों का पीछा कर रहे हैं। अंतिम परिणाम निराशाजनक है। अधिकतम जीवन विकर्षणों को समाप्त करता है।

3. यह सहायता को आकर्षित करता है।

बहुत कम लोग हैं जो जानते हैं कि वे जीवन में कहाँ जा रहे हैं कि यदि आप इसका पता लगा लेंगे; वे आपके साथ जाना चाहेंगे। वह जानवर की प्रकृति है। यदि उन्हें लगता है कि आपके पास उद्देश्य है, तो वे जाना चाहेंगे। यह उद्देश्य से संचालित लोगों के लिए भी सच है जो गलत दिशा में जा रहे हैं। इस दुनिया में डेविड कोरेश, लुई फर्खान और शर्ली मैकलेन जैसे बहुत से लोग हैं, जो दूसरों को गलत दिशा में ले जाते हैं। उनके फॉलोइंग सिर्फ इसलिए हैं क्योंकि उनका एक उद्देश्य है। यदि आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य का पालन करते हैं, तो आपका सम्मान किया जाएगा, आपका अनुकरण किया जाएगा और आपका अनुसरण किया जाएगा।

दूसरों की मदद करने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप वह बनें जो परमेश्वर ने आपको बनाया है। यह दूसरों की मदद करने का सबसे अच्छा तरीका है, बस वही बने रहें जो परमेश्वर ने आपको बनने के लिए बनाया है। यदि दाऊद की तरह, आप अपनी पीढ़ी में परमेश्वर के उद्देश्यों की सेवा करते हैं। परमेश्वर



**I'm doing the right things, rather than just doing things right. If you're not careful, you'll end up arranging deck chairs on the Titanic. Have you ever thought about that? It looks good, it's all neat and it's in order, but the ship is sinking. Effectiveness!**

**Peter Drucker was perhaps the leading management guru of this past century. He was asked one time: What's the basic thing that every business owner needs to know? Drucker said, "There are only two questions related to business that the owner needs to know. Number one, what is my business? And number two, how is business?" That's what you need to ask. What is my business in life? And question number two, how's business?**

**Life focus has tremendous power; it's like a light that is focused. Take a light and focus it through a magnifying glass. You will concentrate the energy of the light to where it can set a piece of paper on fire. If you take it and concentrate it even more you create a thing called a laser that can cut through anything. Light concentrated has power, light diffused doesn't have that power—the same way with life. Life concentrated has power. Life diffused has no power at all. Paul understood this, he said in Philippians 3:13, "But one thing I do: Forgetting what is behind and straining toward what is ahead, I press on to win the goal." The number one game in America right now is Trivial Pursuit and I'm not talking about the board game. I'm talking about life. The ridiculous way we fill our lives with things that don't matter.**

**The average American who will live to about age 85 will spend about ten years watching television. Tell me, of all the things that you have watched, have you seen enough that's worth giving up 10 years for?**

**Some of you are too busy. Some of you, some of us, are pulled into too many directions, not doing bad things, but chasing trivial things. The end result is disappointing. The maximum life eliminates distractions.**

### **3. It attracts assistance.**

**There are so few people who know where they're going in life that if you'll figure it out; they'll want to go with**

आपके द्वारा बहुत, बहुतों के जीवनो को आशीषित करेगा।

#### **4. यह मुझे परमेश्वर के मूल्यांकन के लिए तैयार करता है।**

यह वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण है। इन दिनों में से एक, हम मरने जा रहे हैं। इन दिनों में से एक, मैं मरने जा रहा हूँ। इन दिनों में से एक, तुम मरने वाले हो। इन दिनों में से एक दिन, जिसे हम इतिहास कहते हैं, वह समाप्त होने जा रहा है और हम परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे, ऐसा इब्रानियों 9:26-27, रोमियों 14:10 और पवित्रशास्त्र के कई अन्य अंश कहते हैं। मैंने कुछ लोगों को यह कहते सुना है कि जब हम उस न्याय आसन के सामने खड़े होते हैं, तो वह जीवन की अंतिम परीक्षा होगी। नहीं, ऐसा नहीं है, तभी आपको अपना परीक्षा पत्र वापस मिलेगा। हम अभी अंतिम परीक्षा में हैं क्योंकि हमारे पास पहले से ही प्रश्न हैं। हम उत्तरों पर काम कर रहे हैं। हर दिन हम रिक्त स्थान भर रहे हैं।

आप कहते हैं, "एक मिनट रुकिए, मुझे नहीं पता कि अंतिम परीक्षा में कौन से प्रश्न हैं।" खैर, अभी दो हैं। जब तुम परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़े होते हो, तो मैं अभी तुम्हें बता दूंगा कि वे क्या हैं। केवल दो प्रश्न हैं। वे हैं, व्याख्यात्मक और सामान्य रूप से कहा गया है, "आपने मेरे बेटे यीशु मसीह के साथ क्या किया?" और "आपने अपने जीवन के साथ क्या किया?" हमारा परमेश्वर सृष्टिकर्ता और स्वामी है। उसने आप में कुछ प्रतिभाओं, क्षमताओं और उपहारों का निवेश किया है और उसने आपके लिए शरीर, चर्च के भीतर कुछ कार्यों की योजना बनाई है। आप अपनी परीक्षा में कैसा कर रहे हैं? आपने पिछले सप्ताह में कौन से उत्तर भरे हैं? इस सप्ताह आप अपने कार्यों से क्या लिखने जा रहे हैं?

हमारा लक्ष्य है कि इस श्रृंखला के अंत तक आपके पास एक जीवन योजना होगी, जो वास्तव में आपके लिए परमेश्वर के उद्देश्यों पर आधारित होगी। लेकिन, इस पाठ को समाप्त करने के लिए मैं दूसरा प्रश्न पहले पूछना चाहता हूँ। "आज आपने अपने जीवन के साथ क्या किया?" क्योंकि जीवन को सर्वोत्तम तरीके से जीना जो हम संभवतः अपनी पहल और शक्ति से कर सकते हैं, हमें एक भी पाप से छुटकारा नहीं दिलाएगा। हम पाप से इतने दूषित हो गए हैं कि हम हमेशा के लिए स्वर्ग में परमेश्वर के साथ नहीं रह सकते क्योंकि वह सर्व पवित्र है। उसमें प्रकाश है और अंधकार बिल्कुल नहीं है। हम अपने अधर्म के कामों के साथ स्वर्ग में नहीं जाएंगे, और हम सब के अधर्म हैं। तो, परमेश्वर के पहले प्रश्न का आपका उत्तर क्या है "आपने मेरे पुत्र यीशु मसीह के साथ क्या किया?" अच्छी खबर यह है, उसने अपने बेटे को उस क्रूस पर मरने के लिए भेजा, ताकि यदि विश्वास से हम उस क्रूस से जुड़ें, भरोसा और विश्वास करते हुए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, किसी के सामने यह स्वीकार करने के इच्छुक हैं, पश्चाताप, जिसका अर्थ है मुड़ना; अर्थात्, अपने जीवन को तुच्छ और सांसारिक चीजों से दूर करके, अपने सांसारिक और पापमय जीवन को यह कहते हुए बदलकर, "मैं उसका अनुसरण

you. That's the nature of the beast. If they sense you have purpose, they'll want to go. That's true with even purpose-driven people who are headed in the wrong direction. There are lots of folks, David Koresh's, Louis Farrakhan's and Shirley MacLaine's of this world, leading others in a wrong direction. They've got followings just because they've got a purpose. If you follow God's purpose for your life, you will be respected, you will be emulated and you will be followed.

The greatest way to help other people is to BE what God made you to be. That's the greatest way to help other people, to just BE what God made you to be. If like David, you serve God's purposes in your generation. God will bless many, many lives through you.

#### 4. It prepares me for God's evaluation.

This is really the most important of all. One of these days, we are going to die. One of these days, I'm going to die. One of these days, you're going to die. One of these days, all of what we call history is going to end and we will stand before God's judgment seat, so says Hebrews 9:26-27, Romans 14:10 and a host of other passages in Scripture. I've heard some people say that when we stand before that judgment seat, that's going to be the final exam of life. No it's not, that's when you get your test paper back. We're in the final exam right now because we've already got the questions. We're working on the answers. Every day, we are filling in the blanks.

You say, "Wait a minute, I don't know what questions are on the final exam." Well, there are just two. When you stand before the judgment seat of God, I will tell you right now what they are. There are only two questions. They are, paraphrased and stated generically, "What did you do with my son Jesus Christ?" And "What did you do with your life?" Our God is the Creator and the Master. He has invested certain talents, abilities and gifts in you and he has planned certain functions within the Body, the Church, for you to do. How are you doing on your exam? What answers have you filled in last week? What are you going to write down by your actions this week?

Our goal is that by the end of this series you will have a life plan, genuinely based on God's purposes for you.

करना चाहता हूँ।" फिर उस विश्वास प्रतिक्रिया को बपतिस्मा लेकर, मसीह की मृत्यु, दफनाने और पुनरुत्थान को फिर से क्रियान्वित करने के द्वारा समाप्त करें, ताकि आप अपने पाप से मुक्त हो सकें। वही आरंभ है, वही जन्म है। उस बिंदु से आगे, यह यीशु से प्रेम करना है, आपको बचाने के लिए यीशु से प्रेम करना है, यीशु से प्रेम करना है क्योंकि उसने पहले आप से प्रेम किया। वह जन्म है। उस बिंदु से आगे, यह यीशु से प्रेम करना है, आपको बचाने के लिए यीशु से प्रेम करना है, यीशु से प्रेम करना है क्योंकि उसने पहले आप से प्रेम किया। वह जन्म है। उस बिंदु से आगे, यह यीशु से प्रेम करना है, आपको बचाने के लिए यीशु से प्रेम करना है, यीशु से प्रेम करना है क्योंकि उसने पहले आप से प्रेम किया।

न्याय के दिन पर प्रश्न संख्या एक है: "तूने मेरे पुत्र यीशु मसीह के साथ क्या किया?" क्या आप अभी उसके प्रति वचनबद्धता करने को तैयार हैं? याद रखें कि यह आधारशिला है, यही वह उद्देश्य है जो परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए रखा है। यहीं से इसकी शुरुआत होती है। आज ही मसीह के पास आइये। पाठ # 1296 12 जनवरी, 1997

अध्याय दो

## मेरे मूल्य क्या हैं?

अपनी पुस्तक ऑर्डरिंग योर प्राइवेट वर्ल्ड में, गॉर्डन मैकडोनाल्ड एक दोस्त के बारे में बताता है जो भूमध्य सागर में एक परमाणु पनडुब्बी पर ड्यूटी ऑफिसर था। एक अवसर पर जब कप्तान अपने क्वार्टर में था, तब ड्यूटी अधिकारी पनडुब्बी के भीतर था। उपरि नौसैनिक यातायात बहुत था इसलिए उसे किसी भी संभावित टकराव से बचने के लिए कुछ अचानक और अचानक युद्धाभ्यास करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

कुछ ही पलों में कप्तान ब्रिज यानी कंट्रोल रूम पर आ गया। उसने ड्यूटी ऑफिसर की ओर देखा और पूछा, "क्या सब ठीक है?" "हाँ सर," कर्तव्य अधिकारी ने उत्तर दिया। कप्तान ने चारों ओर एक त्वरित नज़र डाली और अपनी सांस के नीचे बुदबुदाते हुए सीढ़ी पर वापस जाने लगा, "मुझे भी सब कुछ ठीक लग रहा है।"

जब मैंने उस छोटे से दृष्टांत को पढ़ा, तो इसने मुझे जीवन की बहुत याद दिला दी। चारों ओर खतरा मंडरा रहा है—हमारे ऊपर, हमारे चारों ओर और हमारे नीचे। ऐसी चीजें हैं जो हमारे जीवन को बर्बाद कर सकती हैं। सतर्क कप्तान, बल्कि अपने रास्ते में आने वाली हर विकर्षण को आवश्यक रूप से संभालने की कोशिश कर रहा था, तुरंत नियंत्रण कक्ष में गया और चारों ओर देखा और पूछा "क्या यहाँ सब कुछ ठीक है?"

मैं चाहता हूँ कि आप अस्थायी रूप से वह सब भूल जाएं जो आपके

**But, to close this lesson I want to ask the second question first. "What did you do with your life today?" Because living life to the best that we possibly can by our own initiative and power will not rid us of a single sin. We are so contaminated by sin that we cannot live with God forever in heaven because He is all Holy. In Him is light and there is no darkness at all. We will not go to heaven with our iniquities, and all of us have iniquities. So, what is your answer to God's first question "What did you do with my son Jesus Christ?" The good news is, He sent His son to die on that cross, so that if by faith we connect to that cross, trusting and believing that Jesus is God's Son, being willing to confess that before anybody, repenting, which means turning; i.e., turning your life away from the trivial and worldly things, changing your worldly and sinful life saying, "I want to follow Him." Then culminating that faith response by being baptized, re-enacting the death, burial and resurrection of Christ, so that you can be free from your sin. That's the beginning, that's the birth. From that point forward, it is loving Jesus, loving Jesus for saving you, loving Jesus because He loved you first.**

**Question number one on the Judgment Day is: "What did you do with my Son Jesus Christ?" Are you willing to make the commitment to Him now? Remember this is the cornerstone, it is the purpose that God has for your life. This is where it starts. Come to Christ today.**

Lesson # 1296 January 12, 1997

## Chapter 2

### What Are My Values?

**In his book, *Ordering Your Private World*, Gordon MacDonald tells about a friend that was the duty officer on a nuclear submarine in the Mediterranean. On one occasion while the captain was in his quarters, the duty officer was in the very bowels of the submarine. There was a lot of naval traffic overhead so he was forced to make some rather abrupt and sudden maneuvers to avoid any potential collisions.**

**Within a matter of moments the captain came down to the bridge, the control room. He looked at the duty officer and asked "Is everything all right?" "Yes sir," replied the duty officer. The captain took a quick look around and began to go back up the ladder while muttering under his breath, "Everything looks all right**

आसपास चल रहा है। विकर्षणों, कुंठाओं और खतरों को भूलने की पूरी कोशिश करें, जो आपके नियंत्रण कक्ष के भीतर गहराई तक जाती हैं। वह स्थान जहाँ शास्त्र हृदय कहता है। इधर-उधर देखें और देखें कि क्या आपको भी वहाँ सब कुछ ठीक लग रहा है।

देखिए, अधिकतम जीवन के निर्माण की कुंजी यह नहीं है कि वहाँ क्या है, इसका ध्यान रखा जाए, बल्कि यहाँ जो है, दिल, दिमाग या बुद्धि का ध्यान रखा जाए। उस पनडुब्बी की तरह, यह वही है जो स्टीयर करता है।

अंदर गहराई में रास्ता जो या तो यात्रा की सफलता या असफलता को निर्धारित करता है। मानव जीवन में वे वस्तुएँ मूल्य कहलाती हैं। वे मुख्य चीजें जिन्हें आप संजोते हैं और जिनके लिए जीते हैं, वे आपकी आत्मा की गहराई में हैं। वे जीवन का सार हैं। आइए नीचे जाएं और अपने मूल्यों को देखें।

### आपके मूल्य क्या हैं?

a. आपके मूल्य आपकी दिशा तय करते हैं। क्या आपने कभी गौर किया है कि कितने लोग जीवन में दिशाहीन होते हैं? आपके पड़ोसी या सहकर्मी जैसे लोग प्रवाह के साथ चलते हैं और पंच के साथ लुढ़कते हैं। अगर कोई सनक आती है, तो वे सनक का पीछा करते हैं। वे सिर्फ इधर-उधर उछालते हैं। जेम्स ने कहा, "एक दुचित्ता व्यक्ति अपने सभी कार्यों में अस्थिर होता है।" (याकूब 1:8) कुछ आयतें पहले, वह उस दुचित्त व्यक्ति की तुलना समुद्र पर एक काग या बोया से करता है जिसे लहरें आगे पीछे उछालती हैं।

आज हम अक्सर उस शब्दावली का प्रयोग नहीं करते हैं। हम दोगले लोगों की बात नहीं करते। अच्छा, जेम्स वहाँ किस बारे में बात कर रहा है? एक दोहरे दिमाग वाला पुरुष या महिला केवल वह है जो अपने मूल्यों के बारे में अनिश्चित है। ऐसे लोगों की एक पूरी पीढ़ी है जो अधिकतम जीवन जीने के करीब नहीं हैं क्योंकि उन्हें पता नहीं है कि उनके मूल्य क्या हैं।

जॉर्ज गैलप ने हाल ही में नंबर एक का समापन करने के लिए एक सर्वेक्षण किया। बेबी बूमर पीढ़ी के सामने तनाव कारक, समस्या या समस्या धन की कमी, समय की कमी या संबंधपरक संघर्ष नहीं है, और इसे वह "असंगत मूल्य" कहते हैं। दूसरे शब्दों में, वे कहते हैं, हम कहते हैं कि हम एक बात पर विश्वास करते हैं और फिर हम पूरी तरह से अलग तरीके से जीते हैं।

उदाहरण के लिए, हम बेबी बूमर्स कहते हैं, "हम परिवार में विश्वास करते हैं। हमें लगता है कि यह सबसे महत्वपूर्ण बात है;" हालाँकि, औसत पिता प्रत्येक बच्चे के साथ एक दिन में दो मिनट से भी कम समय तक निर्बाध बातचीत करता है। वह अपने करियर की पूजा करता है। हम कहते हैं कि अच्छा स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है। लेकिन, जब पूछा गया, "क्या आप सही खाते हैं?" "नहीं, वास्तव में नहीं।" आप पूछते हैं, "क्या आप व्यायाम करते हैं?" "नहीं, हम वास्तव में व्यायाम नहीं करते,

to me, too."

When I read that little illustration, it reminded me so much of life. All around danger is lurking—above us, around us and below us. There are things that would wreck our lives. The alert captain, rather trying to necessarily handle every distraction that might come their way, immediately went to the control room and looked around and asked "Is everything all right down here?"

I want you to temporarily forget all that's going on around you. Try your best to forget the distractions, the frustrations and the dangers that go way down deep inside, all the way down to your control room. The place the Scripture calls the heart. Look around and see if everything looks all right there to you, too.

See, the key to building the maximum life is not so much of taking care of what's out there but taking care of what's in here, the heart, mind or intellect. Like that submarine, it's what steers.

Way down deep inside that determines either the success or the failure of the journey. In the human life, those things are called values. Those core things that you cherish and live for are in the very bowels of your soul. They are the essence of life. Let's go down and look at our values.

What are your values?

Your values determine your direction.

Have you ever noticed how many people are directionless in life? People like your neighbors or co-workers go with the flow and roll with the punch. If a fad comes up, they chase the fad. They just toss to and fro. James said "A double-minded man is unstable in all he does." (James 1:8) A couple of verses earlier, he compares that double-minded man to a cork or a buoy on the sea that is tossed back and forth by the waves.

Now we don't use that terminology often today. We don't talk about double-minded people. Well, what is James talking about there? A double-minded man or a woman is simply someone who is unsure of his or her values. There is a whole generation of people who are nowhere close to living the maximum life because they have no idea what their values are.

George Gallup did a poll not long ago concluding the

लेकिन अच्छा स्वास्थ्य मेरे लिए महत्वपूर्ण है।" हम ऐसी बातें कहते हैं, "भौतिकवाद बुरा है।" फिर जोसिस के साथ रहने की कोशिश में कर्ज में डूब जाते हैं।

जब आपके पास प्रतिस्पर्धी मूल्य होते हैं, तो आप पानी में डूबे जहाज की तरह होते हैं। तुम कहीं नहीं जा रहे हो। इसीलिए नीतिवचन 4:23 में सुलैमान ने कहा, "सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का सोता वही है।" वह कह रहा है: आप जिसे महत्व देते हैं वह आपके जीवन को निर्देशित करता है। यदि आप ईमानदारी से मुझे बताएं कि आप जीवन में क्या महत्व रखते हैं, तो मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि आपका जीवन कहाँ जा रहा है। आपके द्वारा किया गया हर निर्णय आपके मूल्यों पर आधारित होता है; वे आपके जीवन को निर्देशित करते हैं।

बी। आपके मूल्य आपके भाग्य का निर्धारण करते हैं।

क्या इसका कोई मतलब नहीं है? यदि मेरे मूल्य उस पाठ्यक्रम को चार्ट करते हैं जिसका मैं पालन करने जा रहा हूँ तो वे बहुत अच्छी तरह आश्वस्त करते हैं कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। यीशु ने मरकुस 8, पद 36 और 37 में कहा, "मनुष्य को क्या लाभ है कि वह सारे जगत को प्राप्त करे, तौभी अपने प्राण की हानि उठाए? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या दे सकता है?" आप अपना जीवन देते हैं, और अंततः यह वह है जिसे आप अपनी आत्मा देने जा रहे हैं। इसलिए मूल्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, वे धुरी हैं जो पहिया को घुमाती है।

**मुझे अपने मूल्य कहाँ से मिलेंगे?**

आप उन्हें बहुत सी जगहों से प्राप्त करते हैं, लेकिन अंततः दो मूल स्रोत हैं। आप उन्हें ईसा मसीह या संस्कृति से प्राप्त करते हैं। इसे दूसरे तरीके से रखने के लिए, आप अपने मूल्यों को वचन से या संसार से प्राप्त करते हैं। अब यह निर्धारित करना बहुत आसान है कि मसीह के मूल्य क्या हैं यदि आप उसकी पुस्तक, बाइबल को जानते हैं और आपको उसकी मूल्य प्रणाली के बारे में वास्तव में अच्छी जानकारी होगी।

किसी ने कहा, "दुनिया की मूल्य प्रणाली, हमारी संस्कृति के बारे में क्या? वे कौन से मूल्य प्रस्तावित करते हैं?" मेरा सुझाव है कि दुनिया के मूल्यों का थोड़ा सा सारांश प्राप्त करने का पक्का स्थान विज्ञापन है। 15 सेकंड में, आप पता लगा सकते हैं कि दुनिया आपके लिए क्या महत्व रखती है क्योंकि यही वह बटन है जिसे वे दबाने की कोशिश कर रहे हैं। वे आपकी मूल प्रेरणा के लिए अपील कर रहे हैं। आप इसे तीन शब्दों में अच्छी तरह लपेट सकते हैं। हम इनके बारे में पहले बात कर चुके हैं।

a. आनंद.

हमारी संस्कृति आनंद को महत्व देती है। यह अभी अमेरिका में नंबर एक उद्योग है-मनोरंजन उद्योग। यह किसी भी अन्य एकल उद्योग की तुलना में अधिक पैसा कमाता है। हम एक बहुत ही कामुक समाज हैं। हम सिर्फ मजा करना चाहते हैं, इसलिए अगर यह अच्छा लगता है तो हम इसे करते हैं। यह एक ऐसा मूल्य है जिसे दुनिया प्रस्तावित करती है।

number one stress factor, problem or issue facing the Baby Boomer generation is not a lack of money, a lack of time or relational conflict, and it is what he calls, "incongruent values." In other words, he says, we say we believe one thing and then we live in a totally different way.

For example, we Baby Boomers say, "We believe in family. We think that's the most important thing;" however, the average father spends an uninterrupted interaction with each child of less than two minutes a day. He worships his career. We say that good health is important. But, we admit when asked, "Do you eat right?" "Well no, not really." You ask, "Do you exercise?" "Well no, we don't really exercise, but good health is important to me." We say things like, "Materialism is bad." Then go deep in debt trying to keep up with the Joneses.

When you have competing values, you're a ship dead in the water. You are going nowhere. That's why Solomon said in Proverbs 4:23, "Above all else, guard your heart, for it is the wellspring of life." He is saying: What you value directs your life. If you were to honestly tell me what you value in life, I could predict where your life is going to go. Every decision you make is based upon your values; they direct your life.

#### **b. Your values end up determining your destiny.**

Doesn't that make sense? If my values chart the course I'm going to follow then they pretty well assure where I'm going to end up. Jesus said in Mark 8, verses 36 and 37, "What good is it for a man to gain the whole world, yet forfeit his soul? Or what can a man give in exchange for his soul?" What you value is what you give your life to, and ultimately it's what you are going to give your soul to. So values are extremely important, they're the axle that turns the wheel.

Where do I get my values?

You get them from a lot of places, but ultimately there are two basic sources. You get them from Christ or culture. To put it another way, you get your values from the Word or from the world. Now it's pretty easy to determine what Christ's values are if you get to know His Book, the Bible and you'll have a real good handle on what His value system is all about.

#### **b. संपत्ति.**

आप जानते हैं कि अमेरिकी जीवन, स्वतंत्रता और खुशी की खरीद में विश्वास करते हैं, है ना? हम सेवन से भस्म हो जाते हैं। हम इस आदर्श वाक्य से जीते हैं कि जिसके पास सबसे अधिक खिलौने होंगे वही जीतेगा। दुनिया चुपचाप, लेकिन बहुत बलपूर्वक हमें संदेश दे रही है: आपका आत्म मूल्य आपके निवल मूल्य के बराबर है।

#### **c. शक्ति – प्रतिष्ठा – स्थिति.**

वे सभी एक साथ जुड़े हुए हैं। यह सांस्कृतिक मूल्य प्रणाली का तीसरा चरण है। विज्ञापनों को देखें। क्या आपने कभी गौर किया है कि वे आपको कैसे चाहते हैं? वह आदमी अपने रेसिंग दस्ताने पहनता है, वह काला चश्मा, उस स्पोर्ट कूप के अंदर जाता है और उद्घोषक कहता है, "सड़क के मालिक हो।" वह वहीं शक्ति है। उनमें से एक जो इतना विडंबनापूर्ण है वह विज्ञापनदाता और क्रेडिट कार्ड है जो कहता है, "अपने जीवन पर नियंत्रण प्राप्त करें!" क्या आप शक्ति के उस कथित मूल्य की अपील देखते हैं?

इसे समझो। शैतान के प्रचार के विपरीत, परमेश्वर उन सब बातों के विरुद्ध नहीं है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस झूठ पर विश्वास करते हैं कि ईश्वर कोई घमंडी है जो कहता है, "यदि आप एक ईसाई हैं, तो आपको कोई आनंद नहीं मिल सकता है, कोई मजा नहीं है। यदि आप एक ईसाई हैं, तो आपके पास बहुत अधिक नहीं हो सकते हैं।" संपत्ति। आपको लगभग एक कंगाल होना है। यदि आप एक ईसाई हैं, तो आपको एक नम्र, कमजोर, छोटा कीड़ा होना चाहिए। क्या आपके पास कभी कोई शक्ति नहीं है?" यह परमेश्वर के कहे के विपरीत है। नहीं! नहीं! भगवान ऐसा कभी नहीं कहते। वे कभी नहीं कहते कि तुम सुखी नहीं हो सकते, वे कभी नहीं कहते कि तुम्हारे पास संपत्ति नहीं हो सकती। वह कभी नहीं कहते कि आपके पास कुछ शक्ति नहीं हो सकती। भगवान क्या कहते हैं कि वे आपके मूल्य नहीं हो सकते। वे आपके दिल की मुख्य इच्छाएं नहीं हो सकती हैं, या आप अधिकतम जीवन खो देंगे।

जॉन, जो अपने नब्बे के दशक में था और एक वृद्ध प्रेरित था, ने कहा "संसार या संसार की किसी भी वस्तु से प्रेम मत करो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं। दुनिया में हर चीज के लिए; पापी मनुष्य की लालसा, उसकी आंखों की अभिलाषा, और उसके पास जो है और जो वह करता है, उस पर घमण्ड करना पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है।" (एनआईवी) द न्यू किंग जेम्स वर्जन कहता है, "दुनिया या दुनिया की चीजों से प्यार मत करो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं। क्योंकि संसार में जो कुछ है - शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीवन का घमण्ड।" (1 यूहन्ना 2:15-16)

क्या आप जानते हैं कि वे क्या हैं? वे तीन चीजें हैं जिनके बारे

Somebody said, "What about the world's value system, our culture? What are the values that they propose?" I suggest that the surest place to get a little synopsis of the world's values is commercials. In 15 seconds, you can find out what the world thinks you value because that's the button they're trying to push. They're appealing to your basic motivation. You can pretty well wrap it up in three words. We've talked about these before.

### Pleasure.

Our culture values pleasure. It's the number one industry in America right now—the entertainment industry. It grosses more money than any other single industry. We are a very sensual society. We just want to have fun, so if it feels good we do it. That's a value that the world proposes.

### Possessions.

You know Americans believe in life, liberty and purchase of happiness, don't we? We are consumed with consuming. We kind of live by the motto that the one with the most toys is going to win. The world is silently, but very forcefully giving us the message: Your self worth is equal to your net worth.

### Power – Prestige – Position.

They're all linked together. It's the third leg of the cultural value system. Look at the commercials. Have you ever noticed how they insidiously want you? The guy puts on his racing gloves, those dark glasses, gets inside that sport coupe and the announcer says, "Own the road." That's power right there. One of the ones that's so ironic is the advertiser and the credit card which says, "Get control of your life!" Do you see the appeal to that perceived value of power?

Understand this. Contrary to the devil's propaganda, God is not against all those things. There are so many people who believe the lie that God is some prude who says, "If you're a Christian, you can't have any pleasure, no fun. If you're a Christian, you can't have very many possessions. You've got to almost be a pauper. If you're a Christian, you've got to be a meek, weak, little worm. Don't you ever have any power?" That is contrary to what God says. No! No! God never

में हमने अभी बात की है। शरीर की वासना—सुख, आंखों की वासना—संपत्ति और जीवन का अहंकार—शक्ति। यूहन्ना के द्वारा परमेश्वर जो कहता है वह यह है, कि उन वस्तुओं से प्रेम न रखो, वे पिता की ओर से नहीं हैं, वे संसार से आती हैं।

नीतिवचन 21:21 कहता है, "जो धर्म और प्रेम का पीछा करता है, वह जीवन, समृद्धि और सम्मान पाता है।" हम इसे अपने पतन के लिए उपेक्षित करते हैं। क्या आपने उन लाभों पर ध्यान दिया? यदि आप सही चीजों को महत्व देते हैं, तो परमेश्वर आपको वे चीजें देंगे जिनकी दुनिया को लालसा है। भगवान आपको जीवन देगा। वह आपको समृद्धि देगा। वह आपको सम्मान देगा। वे मोटे तौर पर आनंद, संपत्ति और शक्ति के बराबर हैं। यदि आप धार्मिकता को महत्व देते हैं और भगवान से प्यार करते हैं, तो भगवान कहते हैं, "मैं बाकी का ध्यान रखूंगा, और मैं उन्हें उचित मात्रा में दूंगा ताकि आपका जीवन जितना हो सके उतना अच्छा हो।" संस्कृति की मूल्य प्रणाली की प्रशंसा मत करो। मसीह की मूल्य प्रणाली की प्रशंसा करें।

**मैं अपने जीवन को सही और स्थायी मूल्यों पर कैसे बना सकता हूँ?  
मुझे वह कैसे करना चाहिए?**

- मूल्यांकन करें कि क्या महत्वपूर्ण है।  
"आइए हम अपने लिए विचार करें कि क्या सही है; आइए हम एक साथ सीखें कि क्या अच्छा है।" (अय्यूब 34:4) देखिए, इससे पहले कि हम कुछ अच्छा करें, हमें यह समझना होगा कि क्या अच्छा है। किसी के जीवन में क्या महत्वपूर्ण है यह तय करना अमेरिका की बुनियादी समस्याओं में से एक है।

जैसा कि पहले कहा गया है, इस पीढ़ी को असंगत मूल्यों की विशेषता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम शायद ही कभी यह पूछने के लिए समय निकालते हैं: मैं क्या महत्व रखता हूँ? मेरे लिए वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है? मुझे यकीन है कि आप में से कई लोगों ने हाल के अध्ययन को देखा होगा जिसमें दिखाया गया है कि माता-पिता की तुलना में टेलीविजन बच्चों के मूल्यों को अधिक आकार देता है। अब यह दुख की बात है! लेकिन हम सब जानते थे कि यह सच था। एक बच्चा दिन में पांच घंटे टेलीविजन देखता है। एक बच्चा शायद ही कभी माता-पिता के साथ इतना समय बिता पाता है। टेलीविज़न आज अमेरिका में माता-पिता से अधिक बच्चों के मूल्यों को आकार देता है। लेकिन यहां दूसरी बात है, मामला सिर्फ बच्चों का नहीं है। हम, वयस्क टीवी, वीडियो और फिल्मों के वर्तमान मूल्यों को इकट्ठा करना शुरू करते हैं। हम जो पहले देख सकते हैं, हम अपनी आंखें घुमा सकते हैं, या हम हाँफ भी सकते हैं, और फिर हम देखते ही रह जाते हैं और समय बीत जाता है। हम इसके बारे में हंस सकते हैं और थोड़ी देर बाद, हम अवचेतन रूप से इसे गले लगा लेते हैं।

यह कुंजी है। अधिकांश अमेरिकी अपने जीवन, अपने भविष्य

says that. He never says you cannot have pleasure, He never says you can't have possessions. He never says you can't have some power. What God says is those can't be your values. Those cannot be the core desires of your heart, or you'll miss the maximum life.

John, who was in his nineties and an aged apostle, said "Do not love the world or anything in the world. If anyone loves the world, the love of the Father is not in him. For everything in the world; the cravings of sinful man, the lust of his eyes and the boasting of what he has and does—comes not from the Father but from the world." (NIV) The New King James Version states "Do not love the world or the things in the world. If anyone loves the world, the love of the Father is not in him. For all that is in the world — the lust of the flesh, the lust of the eyes, and the pride of life." (1 John 2:15-16)

Do you know what those are? Those are the three things we just talked about. The lust of the flesh—pleasure, the lust of the eyes—possessions and the pride of life—power. What God says through John is, don't love those things, they are not from the Father, they come from the world.

Proverbs 21:21 states, "He who pursues righteousness and love finds life, prosperity, and honor." We neglect this to our own downfall. Did you notice those benefits? If you will value the right things, God will give you the things the world craves. God will give you life. He'll give you prosperity. He'll give you honor. Those are roughly equivalent to pleasure, possessions, and power. If you value righteousness and love God says, "I'll take care of the rest, and I'll give them to you in proper measure to make your life all it can be." Don't praise the value system of culture. Praise the value system of Christ.

How can I build my life on right and lasting values?

How do I go about doing that?

Assess what's important.

"Let us discern for ourselves what is right; let us learn together what is good." (Job 34:4) See, before we can do

और अपने बच्चों के भविष्य को उन मूल्यों पर आधारित कर रहे हैं जिन्हें हमने चुना ही नहीं था। यह बहुत स्मार्ट नहीं है, है ना? हम अपनी पूरी नियति को उन मूल्यों पर आधारित कर रहे हैं जिनके बारे में हम सोच भी नहीं रहे हैं। रुकें और तय करें कि जीवन में वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है! फिर आपको अपने जीवन में सफलता की अपनी परिभाषा लिखनी होगी।

यदि आप इन पाठों को वास्तव में अपने जीवन के लिए कुछ मायने रखते हैं, तो आप सफलता की अपनी परिभाषा लिखेंगे। फिर आप किसी को या किसी चीज़ को अपने आप को केंद्र से दूर न जाने दें ताकि आप उनकी सफलता की परिभाषा को स्वीकार कर सकें।

क्या आप जानते हैं कि सफलता क्या है? यह बहुत पैसा नहीं बना रहा है। यह एक शक्तिशाली स्थिति नहीं है। यह हर मिनट आनंद नहीं ले रहा है। सफलता अपने मूल्यों के साथ जी रही है। यह वही है। यह कोई मंजिल नहीं है; यह वह यात्रा है जिसे आप यात्रा करते हैं क्योंकि आप उन मूल्यों को जीते हैं जिन्हें आप महत्वपूर्ण मानते हैं। किसी और को यह आपके लिए निर्धारित न करने दें। सफलता आपके मूल्यों को जी रही है।

अब संयोग से, किशोर, एकल, युवा विवाहित, मध्यम आयु वर्ग या वरिष्ठ संत, आप अपने जीवन के किसी भी चरण में सफल हो सकते हैं क्योंकि फिर से, सफलता इस बात पर आधारित नहीं है कि आप कैसा महसूस करते हैं, आपके पास क्या है या आप क्या करते हैं। सफलता अपने मूल्यों को दिन-ब-दिन जी रही है। यदि आप अपने मूल्यों को जी रहे हैं तो आप अभी सफलता का आनंद उठा सकते हैं। अब स्पष्ट रूप से यदि वे मूल्य मसीह और उनके वचन और उनके वादों पर आधारित हैं, तो आप जिस सफलता का आनंद लेते हैं वह ईश्वर प्रदत्त है और शाश्वत है।

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ: क्या आपने यह विश्लेषण करने के लिए समय लिया है कि आप वास्तव में क्या महत्व रखते हैं? बेहतर अभी तक, क्या आपने उन्हें लिख लिया है ताकि आप उनकी कभी भी इतनी बार समीक्षा कर सकें? अधिकतम जीवन की नींव पहले यह आकलन करना है कि क्या महत्वपूर्ण है।

मुझे लगता है कि यह जानने का एक सबसे अच्छा तरीका है कि आप क्या महत्व रखते हैं, कुछ सरल प्रश्नों का उत्तर देना है। कल्पना कीजिए कि आप 90 वर्ष के हैं, आप में से कुछ हो सकते हैं, लेकिन आप में से अधिकांश नहीं हैं। क) अपने जीवन पर पीछे मुड़कर देखें और उन पांच चीज़ों को लिखें जिन्हें आप अपने जीवन में सबसे ज्यादा करना चाहते थे। ख) वे कौन से पांच तरीके या चीज़ें हैं जो आप चाहते हैं कि लोग आपके बारे में याद रखें। वे 10 चीज़ें, वे पाँच चीज़ें जो आप सबसे अधिक करना चाहते हैं और वे पाँच चीज़ें जो आप चाहते हैं कि लोग सबसे अधिक याद रखें, ये आपके मूल मूल्य हैं।

what is good we've got to discern what is good. Deciding what's important in one's life is one of the basic problems in America.

As stated earlier, this generation is characterized by incongruent values. That's because we seldom take the time to ask: What do I value? What is really important to me? Several of you I am sure saw the recent study which showed that television shapes children's values more than parents. Now that's sad! But we all knew that was true. A child watches television five hours a day. A child seldom spends that much time with a parent. Television shapes children's values in America today more than parents. But here's the other thing, it's not just the children. We, adults begin to assemble TV, videos and movies present values. What we first may see, we may roll our eyes, or we may even gasp, and then we just kind of keep watching and time passes. We may laugh about it and after a while, we subconsciously embrace it.

**This is key. Most Americans are basing their lives, their futures, and their children's future on values we didn't even choose. That's not too smart, is it? We're basing our whole destinies on values we're not even thinking about. Stop and decide WHAT'S REALLY IMPORTANT IN LIFE! Then you need to write out your definition of success in your life.**

**If you these lessons to really mean something to your life, you'll write your own definition of success. Then don't you let anyone or anything move you off center to cause you to buy into their definition of success.**

**Do you know what success is? It is not making lots of money. It is not having a powerful position. It's not having pleasure every minute. SUCCESS IS LIVING OUT YOUR VALUES. That's what it is. It's not a destination; it's the journey you travel as you live out the values that you believe are important. Don't let anyone else determine that for you. Success is living out your values.**

**Now incidentally, teens, singles, young marrieds, middle agers or senior saints, you can be successful at any stage of your life because again, success is not some point down the road based on how you feel, what you have or what you do. Success is living out your values day by day. You can enjoy success right now if you're living out**

आप ऐसा क्यों नहीं करते?

समस्या यह है कि जब तक हमारे ऊपर कोई संकट नहीं आता तब तक हम शायद ही कभी अपने मूल्यों की जांच करने के लिए समय निकालते हैं। जब चीजें बहुत अच्छी चल रही होती हैं और आप मजे कर रहे होते हैं, तो आप रुकते नहीं हैं और पूछते हैं कि क्या वास्तव में जीवन यही है? क्या आप इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि क्या महत्वपूर्ण है? नहीं, तुम बस जीवन से गुजरो और मजे करो। लेकिन, जब आपके जीवन को किसी संकट से झटका लगता है, जैसे किसी प्रियजन की मृत्यु, तलाक, दिवालिएपन, ले-ऑफ, बड़ी बीमारी या बच्चों की गड़बड़ी, तो अपने दर्द में, आप पूछना शुरू करते हैं: वास्तव में क्या मायने रखता है? मेरी बात सुनो; अपने मूल्यों को स्पष्ट करने के लिए घाटियों की प्रतीक्षा न करें। उन्हें अभी सेट करें, और यदि आप करते हैं, तो आप बहुत अधिक दर्द से बचेंगे और आप बाकी को कम कर देंगे। उन एंकरों को अपने जहाज के बहुत ही नियंत्रण कक्ष के भीतर सेट करें, आकलन करें कि क्या महत्वपूर्ण है।

b. बेल-आउट जो महत्वहीन है।

मुझे पता है। आपके पास सब कुछ करने का समय नहीं है। सच कहूँ तो, जीवन में अधिकांश चीजें करने योग्य नहीं हैं, भले ही हमारे पास समय हो। हमें इसे पास करना चाहिए। अधिकतम जीवन का प्रमुख आधार यह है कि जीवन बर्बाद करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अपना समय कबाड़ से न भरें। भजन संहिता 119:37 को देखें, "मेरी आंखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे।"

जब मैं कॉलेज से निकला ही था, शायद 22 या 23 साल का था, तब वीडियो युग का उदय हुआ। मैं वीडियो गेम का आदी हो गया। उसके बाद, उनके पास केवल दो थे, आप पुराने समय के लोग जो याद कर सकते हैं कि उनके पास पीएसी मैन और क्षुद्रग्रह थे। अब वे सब कुछ कर सकते हैं। बहुत पहले और थोड़े कौशल के साथ मैं एक चौथाई के लिए 45 मिनट से एक घंटे तक खेल सकता था। मैं अपने आप को पकड़ लूंगा, जैसा कि मूर्खतापूर्ण लगता है, मेरे दोपहर के भोजन के समय खत्म हो रहा है और देख रहा हूँ कि क्या मैं अन्य स्कोर को हरा सकता हूँ। काम से घर के रास्ते में, मैं बस रुक जाता और थोड़ा खेल खेलता। फिर अचानक यह मेरे दिमाग में आया, मैं दिन में तीन से चार घंटे बिना किसी चीज के खर्च कर रहा था। कुछ नहीं। आज आपके पास कंप्यूटर गेम हैं।

अब दोस्तों, थोड़ी देर बाद, हम समयबद्धन के बारे में बात करने जा रहे हैं। गलत मत समझिए- हर जीवन में कुछ मनोरंजन की जरूरत होती है। हर जीवन की जरूरत होती है जिसे मैं ठंड का समय कहता हूँ, लेकिन कुत्ते को पूँछ मत हिलाने दो। जीवन को बेकार की किताबों, पत्रिकाओं, टीवी या बेकार खेलों पर बर्बाद करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है - यह लगभग बेमानी है, है ना? -बेकार खेल।



**your values. Now obviously if those values are based upon Christ and His Word and His promises, then the success you enjoy is God-given and is eternal.**

**Let me ask you a question: Have you taken the time to analyze what you really value? Better yet, have you written them down so that you can review them ever so often? The foundation to the maximum life is to first assess what's important.**

**I think one of the best ways to know what you value is to answer a couple of simple questions. Imagine that you're 90 years old, some of you may be, but most of you aren't. a) Look back on your life and write down the five things you will have most wanted to do in your life. b) Write down what are the five ways or things that you most want people to remember about you. Those 10 things, the five things you most want to have done and the five things you want people most to remember, are your core values. Why don't you do that?**

**The problem is we rarely take the time to examine our values until we have a crisis. When things are going great and you're having fun, you don't stop and ask if that is what life is really all about? Are you focusing on what's important? No, you just go through life and have fun. But, when your life gets jolted by some crisis i.e., the death of a loved one, a divorce, bankruptcy, lay-off, major illness or the kids mess up, then in your pain, you start asking: What does it really matter? Hear me; don't wait for the valleys to clarify your values. Set them now, and if you do, you will avoid a great deal of pain and you will minimize the rest. Set those anchors deep within the very control room of your ship, assess what's important.**

#### **Bail-Out of what's unimportant.**

**I know. You don't have time to do everything. Frankly, most things in life aren't worth doing even if we did have the time. We should pass on it. The key premise to the maximum life is that life is too important to waste. Don't fill your time with junk. Look at Psalm 119:37, "Turn my eyes away from worthless things."**

**When I was just out of college, probably 22 or 23 years old, the video age dawned. I got hooked on video games. Back then, they only had two, for you old-timers who can remember they had Pac Man and Asteroids. Now they can do everything. Before long and with a little skill I could play 45 minutes to an hour for a quarter. I would**

यहाँ एक गतिविधि है जो आपको करनी है। चार्ट बनाएं कि आप अगले सात दिनों के लिए अपना दिन कैसे व्यतीत करते हैं। अब आपको वैसे भी ऐसा करना चाहिए। लेकिन इसे इस हफ्ते करें। फिर इसे अपने मूल्यों के साथ रखें और खुद से पूछें कि क्या आप जी रहे हैं कि वास्तव में आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है। जैसा कि आप अपनी गतिविधियों को देखते हैं क्या कुछ ऐसी चीजें हैं जो आप चाहते हैं कि आपने नहीं की होती? क्या कुछ चीजें हैं जो आप चाहते हैं कि आप अभी-अभी पूर्ववत् छोड़ दें और समय को कुछ अधिक मूल्यवान से भर दें।

फिलिपियों 3:8 में, पौलुस ने कहा, "मसीह को जानने में लाभ के मूल्य की तुलना में सब कुछ व्यर्थ है।" एक व्यक्ति है जो अपने मूल्यों को जानता है और उसके जीवन के बारे में सब कुछ उसके मूल मूल्यों के आधार पर आकार दिया गया था। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम एक पॉल बनोगे, भगवान ने हम सभी को अलग तरह से बनाया है। लेकिन अगर हम अधिकतम जीवन जीने जा रहे हैं, तो परमेश्वर चाहता है कि हम यह आकलन करें कि क्या महत्वपूर्ण है और महत्वहीन को बचाना है और शाश्वत पर ध्यान केंद्रित करना है - जो वास्तव में रहता है उस पर ध्यान केंद्रित करें।

कुछ साल पहले टोनी कैपोला की एक किताब आई थी, हू स्विच्ड द प्राइस टैग? उस किताब की तैयारी के दौरान कैपोला ने बड़ी संख्या में 90 साल के लोगों से पूछा, "अगर आप वापस जा सकते हैं और अपना जीवन फिर से जी सकते हैं, तो आप ऐसा क्या अलग करेंगे जो आपने पिछली बार नहीं किया था?" उन 90 वर्ष के लोगों ने जो पहला उत्तर दिया, वह था "मैं उन चीजों में अधिक समय लगाऊंगा जो मेरे बाद भी जीवित रहेंगी।" क्या यह बहुत अच्छा उत्तर नहीं है? मैं अपना अधिक समय उन चीजों में लगाऊंगा जो मुझे पता है कि सहन करेंगे।

जब आप इस सप्ताह अपने मूल मूल्यों को लिखते हैं और उनका विश्लेषण करते हैं, तो उस विश्लेषण को इस प्रश्न के साथ समाप्त करें: यह मूल्य कितने समय तक चलने वाला है? यदि आपके मूल्यों में से एक खुशी है, तो क्या आप जानते हैं कि आपका ईमानदार उत्तर क्या होगा - कुछ सेकंड - क्योंकि वह सब आनंद के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह कॉटन कैडी की तरह है- POOF- यह चला गया है। यह कुछ सेकंड तक चलेगा और यह खत्म हो गया है। यदि आपका कोई मूल्य संपत्ति है, तो मैं आपको बताता हूँ कि यह कितने समय तक चलेगा, यह तब तक चलेगा जब तक कि यह सड़ न जाए, टूट न जाए, टूट न जाए या चोरी न हो जाए। यदि आपका मूल्य शक्ति, स्थिति या अधिकार है, तो यह कितने समय तक चलने वाला है? यह या तो तब तक चलेगा जब तक कोई होशियार, तेज या तेज नहीं आता और इसे आपसे दूर ले जाता है, या जब तक आप मर नहीं जाते। यह कितने समय तक चलने वाला है। लेकिन, टिकता क्या है? पूरी बाइबल इसी के बारे में है। यह वास्तव में क्या रहता है इसके बारे में है।

catch myself, silly as it sounds, on my lunch hour going over and seeing if I could beat the other scores. On the way home from work, I'd just stop by and play a little game. Then all of a sudden it dawned on me, I was spending three to four hours a day on NOTHING. NOTHING. Today you have the computer games.

Now folks, a little later on, we're going to talk about scheduling. Don't misunderstand—every life needs some recreation. Every life needs what I call some chill time, but don't let the tail wag the dog. Life is far too important to waste it on worthless books, magazines, TV or worthless games—that's almost redundant, isn't it?—worthless games.

Here's an activity you need to do. Chart how you spend your day for the next seven days. Now you should be doing that anyway. But do it this week. Then lay it along side your values and ask yourself if you're living out what's really important to you. As you look at your activities are there some things that you wish you hadn't done? Are there some things you wish you had just left undone and filled the time with something more valuable.

In Philippians 3:8, Paul said, "Everything else is worthless when compared to the price of gain in knowing Christ." There's a man who knew his values and everything about his life was shaped around what his core values were. I'm not saying you will be a Paul, God made all of us differently. But if we're going to live the maximum life, God wants us to assess what's important and to bail out the unimportant and to concentrate on the eternal—concentrate on what really lasts.

There was a book that came out a few years ago by Tony Campolla called, *Who Switched the Price Tag?* In preparing for that book, Campolla asked a large number of 90 year olds, "If you could go back and live your life again, what would you do differently that you didn't do last time?" The number one answer those 90 year olds gave was "I would invest more time in things that would outlast me." Isn't that a great answer? I would invest more of my time in things that I know would endure.

When you write out your core values this week and analyze them, close that analysis with this question: How long is this value going to last? If one of your values is pleasure, do you know what your honest answer will

"हम तो देखी हुई वस्तुओं पर नहीं, परन्तु अनदेखी वस्तुओं पर ध्यान लगाते हैं। क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, और अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।" मैंने आपको वहां दो या तीन चीजें दी हैं। परन्तु यीशु ने कहा, "पहले परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो।" मुझे लगता है कि परमेश्वर के राज्य का एक उचित पर्याय उसकी मूल्य प्रणाली है, उसे हमारे हृदय का स्वामी होने देना। उस पद का शेष भाग कहता है, "बाकी सब कुछ जो तुझे आवश्यक है, तुझ में मिला दिया जाएगा।" (2 कुरिन्थियों 4:18)

1 कुरिन्थियों 13 में, पौलुस उन सभी बातों के बारे में बात करता है जो अंत में लुप्त हो जाती हैं या समाप्त हो जाती हैं, परन्तु पद 13 में वह कहता है, "परन्तु ये तीनों बने रहते हैं:" और वह आगे कहता है, "विश्वास, आशा और प्रेम।" आप जानते हैं कि जब बाकी सब कुछ मिट जाता है तो यही चीजें रह जाती हैं। उन्हें मेरे मूल्य प्रणाली में कहीं न कहीं प्रतिनिधित्व करना चाहिए। क्या आप उस के साथ सहमत करेंगे? अगर मैं मूल्यों को चाहता हूँ जो टिके रहें, तो विश्वास, आशा और प्रेम ही ऐसी चीजें हैं जो बनी रहेंगी। मैं निश्चित रूप से उन्हें चाहता हूँ। वैसे, कविता यह कहते हुए समाप्त होती है, इनमें से सबसे बड़ा प्रेम है।

"केवल एक चीज जो मायने रखती है वह है प्यार में विश्वास व्यक्त करना।" (गलतियों 5:6) जब आप अपने मूल्यों को लिखते हैं तो क्या आप देखेंगे कि क्या वे मूल्य उन स्पष्ट शिक्षाओं को प्रतिबिंबित करते हैं जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं? स्थायी सफलता उन मूल्यों पर निर्मित होती है जो टिकते हैं; विश्वास, आशा, प्रेम, परमेश्वर का वचन और यीशु मसीह। वह कल, आज और युगानुयुग एक सा है। इसीलिए यीशु ने मत्ती 16:26 में कहा, "मनुष्य को क्या लाभ होगा यदि वह सारे जगत को प्राप्त करे, परन्तु अपने प्राण की हानि उठाए।" आपकी आत्मा हमेशा के लिए रहने वाली है, और यह दुनिया नहीं है। यह शीर्ष मूल्य होने के लायक नहीं है।

"मेरे लिए जीना मसीह है, और मरना है।" क्या? "पाना।" जीना मसीह है, और मरना लाभ है। पॉल का मूल्य मसीह था और परिणाम अनंत काल है, यह स्वर्ग का भविष्य है। यह बहुत अच्छा है। आप उसमें कोई अन्य मान डालें और देखें कि आपको क्या उत्तर मिलता है। मेरे लिए जीना पैसा है, और मरना है - मैं यह सब खो दूंगा। मेरे लिए जीना आनंद है, और मरना है - मेरे पास अब कभी नहीं होगा। मेरे लिए जीना शक्ति है, और मरना है - यह खत्म हो गया है।

जब आप अपने मूल्यों की सूची बनाते हैं, तो मैं आपको आश्चर्य करना चाहता हूँ कि वास्तव में केवल एक ही है जिसे मुख्य स्थान लेना चाहिए। यह केवल एक है जिसे आप रिक्त स्थान में फिट कर सकते हैं, पॉल का छोटा वाक्य, "मेरे लिए जीना है \_\_\_\_\_ और मरना है \_\_\_\_\_। यह केवल एक है जिसे आप इसमें फिट कर सकते हैं जो इसे काम करता है।

be—a few seconds—because that is all pleasure is designed for. It's like cotton candy—POOF—it's gone. It will last a few seconds and it's over. If one of your values is possessions, I'll tell you how long it will last, it will last until it rots, tears up, breaks, or gets stolen. If your value is power, position or authority, how long is it going to last? It is either going to last until somebody smarter, brighter or faster comes along and takes it away from you, or until you die. That's how long it's going to last. But, what does last? That's what the whole Bible is about. It's about what really lasts.

"We focus not on the things which are seen, but on the things which are unseen. For that which is seen is temporary, and what is unseen is eternal." I've given you two or three things there. But Jesus said, "Seek first the kingdom of God and His righteousness." I think a fair synonym for the kingdom of God is His value system, letting Him be the Lord of our heart. The rest of that verse says, "everything else will be added to you that you need." (2 Corinthians 4:18)

In 1 Corinthians 13, Paul talks about all things eventually fading or passing away, but in verse 13 he states "But these three remain:" and he goes on to say, "faith, hope, and love." You know those are the things that are going to remain when everything else fades away. They should be represented in my value system somewhere. Would you agree with that? If I want values that last, then faith, hope, and love are the only things that are going to remain. I sure want those. By the way, the verse concludes by saying, the greatest of these is LOVE.

"The only thing that counts is faith expressing itself in love." (Galatians 5:6) When you write out your values will you see if those values reflect those clear teachings we're studying? Lasting success is built on values that last; Faith, hope, love, God's Word and Jesus Christ. He is the same yesterday, today, and forever. That's why Jesus said in Matthew 16:26, "What would it profit a man if he were to gain the whole world, yet he were to lose his own soul." Your soul is going to last forever, and this world isn't. It's not worth being a top value.

"For me to live is Christ, and to die is." What? "Gain." To live is Christ, and to die is gain. Paul's value was Christ and the outcome is eternity, it's the future of heaven. It's great. You plug in any other value in that and see what answer you get. For me to live is MONEY,

"मेरे लिए जीना है क्राइस्ट, और मरना (वास्तव में) लाभ है।" सफल, महत्वपूर्ण शक्तिशाली जीवन का आधार सही मूल्यों को अपनाना है; चेतना, उनका नियमित रूप से विश्लेषण करना और उन्हें कभी जाने नहीं देना।

इस सप्ताह, अपने जीवन के नियंत्रण कक्ष में जाएं और चारों ओर देखें। क्या आप ईमानदारी से कह पाएंगे, "यहाँ भी सब कुछ ठीक दिखता है।" यह सबसे बड़ी चीज होगी जो आप इस सप्ताह कर सकते हैं।

क्या मसीह सूची के शीर्ष पर है? क्या वह आपके जहाज का असली कप्तान है? अब बहुत से लोग हाँ कहते हैं, लेकिन हममें से बहुत से लोग इस तरह नहीं जीते हैं। यह असंगत मूल्य की बात है। लेकिन क्या वह आपका भगवान और आपका उद्धारकर्ता है? सफलता केवल मसीह के साथ ही संभव है क्योंकि वही जीवन में एकमात्र वास्तविक मूल्य है। पाठ # 19 जनवरी, 1997

अध्याय 3

## शरीर के भीतर आपका कार्य

चर्च एक आध्यात्मिक निकाय है। वास्तव में, यह मसीह की देह है जिसका सिर है। यह यीशु ही है जो शरीर का मार्गदर्शन, आयोजन, देखरेख और चरवाही करता है ताकि हम वह बनें जो वह चाहता है कि हम बनें और वह करें जो वह चाहता है कि हम करें।

"और परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे कलीसिया के लिये सब वस्तुओं का प्रधान ठहराया, जो उसकी देह है, और उसकी परिपूर्णता है, जो सब बातों में सब बातों को परिपूर्ण करता है।" (इफिसियों 1:22-23)

"यह वह (यीशु) था जिसने कुछ को प्रेरित होने के लिए दिया, कुछ को भविष्यद्वक्ता होने के लिए, कुछ को इंजीलवादी होने के लिए, और कुछ को पादरी और शिक्षक होने के लिए, सेवा के कार्यों के लिए भगवान के लोगों को तैयार करने के लिए, ताकि मसीह का शरीर बनाया जा सके। जब तक कि हम सब के सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और सिद्ध न हो जाएं, और मसीह की परिपूर्णता के पूरे माप तक न पहुंच जाएं।" (इफिसियों 4:11-13)

चर्च की तुलना हमारे भौतिक शरीर से की जाती है ताकि हमें इसकी संरचना और भागों या सदस्यों की विविधता को समझने में मदद मिल सके, जो सभी चर्च या शरीर के लिए अपने कार्य, कार्य या कार्य को एकता और सद्भाव में कुशलता से करने के लिए आवश्यक हैं। ऐसा तभी हो सकता है जब शरीर का हर अंग अपनी विशेषता का प्रदर्शन कर रहा हो। अब यह सच है कि हमारे शरीर बिना कुछ खास अंगों के काम किए या अप्रभावी रूप से काम किए बिना काम करना जारी रख सकते हैं; जैसे, दृष्टि या श्रवण की कमी, एक हाथ या पैर का गायब होना, केवल एक फेफड़ा इत्यादि। लेकिन यह भी सच है कि यह तब अधिक कुशलता से प्रदर्शन

and to die is - *I will lose it all*. For me to live is PLEASURE, and to die is - *I will never have anymore*. For me to live is POWER, and to die is - *it's over*.

When you make your values list, I want to assure you that there is really only one that should take the chief seat. It's the only one that you can fit into the blank, Paul's little sentence, "For me to live is \_\_\_\_\_ and to die is \_\_\_\_\_. It's the only one you can fit in that makes it work." "For me to live is Christ, and to die is (actually) gain." The foundation for successful, significant powerful living is to embrace right values; consciousness, to analyze them regularly and to never ever let them go.

This week, go down in the control room of your life and look around. Will you honestly be able to say, "Everything looks all right here, too." It will be the greatest thing that you can ever do this week.

Is Christ at the head of the list? Is he the real captain of your ship? Now a lot say yes, but many of us don't live that way. That's the incongruent value thing. But is He your Lord as well as your Savior? Success is only possible with Christ because He is the only real value in life. Lesson # January 19, 1997

### Chapter 3

#### Your Function Within The Body

The church is a spiritual body. In fact, it is the Body of Christ with Him being the head. It is Jesus who guides, organizes, oversees and shepherds the body in order for us to be what He wants us to be and to do what He wants us to do.

"And God placed all things under his feet and appointed him to be head over everything for the church, which is his body, the fullness of him who fills everything in every way." (Ephesians 1:22-23)

"It was he (Jesus) who gave some to be apostles, some to be prophets, some to be evangelists, and some to be pastors and teachers, to prepare God's people for works of service, so that the body of Christ may be built up until we all reach unity in the faith and in the knowledge of the Son of God and become mature, attaining to the whole measure of the fullness of Christ." (Ephesians 4:11-13)

करता है जब सभी भाग मौजूद होते हैं और डिजाइन के अनुसार कार्य करते हैं। यह भी सच होना चाहिए कि आध्यात्मिक शरीर बहुत अधिक प्रभावी होता है यदि इसके सभी सदस्य एकता और सद्भाव में अपना उपहार (कार्य) करते हैं जैसा कि भगवान ने डिजाइन किया है।

यीशु कलीसिया को व्यवस्थित करता है ताकि हम ठीक से काम कर सकें। वह उपहार देकर अपने शरीर को व्यवस्थित करता है; यानी प्रत्येक सदस्य को मंत्रालय या कार्य सौंपना। आप वह हैं जो आप मसीह की देह में हैं क्योंकि यीशु ने तय किया कि आपका भाग क्या होगा। आपको सौंपी गई सेवकाई आपका निर्णय नहीं है। यीशु ही है जो निर्णय करता है। "वही है जिस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को पास्टर और शिक्षक नियुक्त करके परमेश्वर के लोगों को सेवा के कामों के लिये तैयार किया, ताकि मसीह की देह तब तक बनी रहे जब तक कि हम सब के सब विश्वास में, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक हो जाते हैं, और सिद्ध हो जाते हैं, और मसीह की परिपूर्णता का पूरा माप प्राप्त करते हैं।" (इफिसियों 4:11-13) हम केवल उसके निर्णय को पहचानना और उसके प्रति समर्पित होना चाहते हैं।

यीशु की मांग है कि सभी सदस्य शामिल हों - 100%। कोई अनावश्यक नहीं है। कोई भी महत्वहीन नहीं है। किसी को बहिष्कृत या क्षमा नहीं किया गया है। मसीह की देह के सभी सदस्यों को उपहार या सेवकाई दी गई है।

चर्च के कार्य को मोटे तौर पर तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है: इंजीलवाद, संपादन और सेवा। सुसमाचार प्रचार के द्वारा, राज्य का विस्तार होता है। संपादन प्रत्येक ईसाई के लिए परिपक्वता तक बढ़ने और वफादार बने रहने के लिए है। सेवा में, हम परमेश्वर के चरित्र को व्यक्त करते हैं क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। हमें दूसरों की ज़रूरतों में उनकी सक्रिय चिंता है। ये तीन क्षेत्र व्यवहार में बहुत अधिक ओवरलैप करते हैं।

उपहार प्राकृतिक प्रतिभा या विकसित कौशल नहीं हैं। वे व्यक्तित्व प्रकार नहीं हैं। उपहार समारोह, मंत्रालय, सेवाएं या भूमिकाएं हैं। वे प्रत्येक की विशिष्ट सेवाएं हैं। याद रखें कि सभी ईसाइयों को दयालु होना चाहिए, लेकिन कुछ के पास दया दिखाने का उपहार है। यही उनकी विशेषता या उनकी विशेष सेवकाई है। आप जो कुछ भी करते हैं वह आपके उपहार या मंत्रालय के रूप में वर्गीकृत नहीं होता है। एक ईसाई के रूप में कई चीजें आपके कर्तव्य का एक हिस्सा हैं। "अब सबकी भलाई के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। (1 कुरिन्थियों 12:7) परन्तु कुछ ऐसी सेवा है जिसके लिए आपको स्वयं को समर्पित करना है, जिसमें विशेषज्ञता हासिल करनी है। यह आपकी सेवकाई है। हमारे उपहार के अभ्यास के माध्यम से, अर्थात हमारे कार्य या सेवकाई को करते हुए, हम सब एक साथ काम करते हैं। विविध व्यक्तित्व, उम्र, सभी अनुभव एक सामान्य उद्यम में शामिल होने के लिए आवश्यक है कि हम अच्छी तरह से मिलें और हम एक

**The church is compared to our physical body to help us understand its structure and diversity of parts or members, all of which are necessary for the church or body to perform its task, function or work in unity and harmony efficiently. This can only happen when every body part is performing its specialty. Now it is true that our bodies can continue to function without certain parts functioning or functioning ineffectively; i.e., lack of sight or hearing, a missing arm or leg, only one lung, etc. But it is also true that it performs more efficiently when all parts are present and functioning as designed. It must also be true that the spiritual body is much more effective if all its members perform their gift (function) in unity and harmony as God designed.**

**Jesus organizes the church so that we may function properly. He organizes His body by giving a gift(s); i.e., assigning ministries or functions to each and every member. You are who you are in the body of Christ because Jesus decided what your part is to be. Your assigned ministry is not your decision. Jesus is the one who decides. "It was he who gave some to be apostles, some to be prophets, some to be evangelists, and some to be pastors and teachers, to prepare God's people for works of service, so that the body of Christ may be built up until we all reach unity in the faith and in the knowledge of the Son of God and become mature, attaining to the whole measure of the fullness of Christ." (Ephesians 4:11-13) We just want to recognize and submit to His decision.**

**Jesus demands that all members be involved - 100%. No one is unnecessary. None are unimportant. No one is excluded or excused. All members of the body of Christ have been given a gift or ministry.**

**The work of the church can be roughly divided into three areas: Evangelism, Edification and Service. Through evangelism, the kingdom expands. Edification is for each Christian to grow to maturity and remain faithful. In service, we express God's character for God is love. We have active concern for others in their necessities. These three areas overlap greatly in practice.**

**Gifts are not natural talents or developed skills. They are not personality types. Gifts are functions, ministries, services or roles. They are each one's specialized services. Remember that all Christians should be merciful, but some have the gift of showing**

दूसरे के साथ सम्मान और विचार के साथ व्यवहार करें। यदि एक या अधिक सदस्य अपना कार्य करने में विफल रहते हैं, तो शरीर ईश्वर की इच्छा के अनुसार प्रभावी रूप से कार्य करने में विफल रहता है।

अपना उपहार निर्धारित करने में आपकी मदद करने के लिए कुछ कदम

आत्मिक उपहार (पवित्र आत्मा के उपहार) आपको परमेश्वर द्वारा दिए गए थे जब आप एक ईसाई बने थे। नया नियम किसी के आत्मिक वरदान को निर्धारित करने के चरणों की सूची नहीं देता है। हमें उपहारों का पीछा करने, उन्हें तैयार करने और उनका उपयोग करने के लिए कहा गया है, लेकिन हमें यह नहीं बताया गया है कि उन्हें कैसे निर्धारित किया जाए, कम से कम संक्षिप्त सूची में तो नहीं। निम्नलिखित कदम सुझाव हैं कि कैसे आगे बढ़ना है और इस विषय पर अंतिम, आधिकारिक शब्द नहीं माना जाता है।

1. अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर के निपटान में रखें: यह आपका एक वस्तुनिष्ठ निर्णय है जो आपके ईसाई बनने के निर्णय से निहित है। यशायाह की तरह परमेश्वर से कहो: "मैं यहां हूँ, मुझे भेज।" यशायाह 6:8. परमेश्वर के सामने घोषणा करें: "मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" इस रवैये के बिना, हम परमेश्वर से उत्तर की अपेक्षा क्यों करेंगे जब हम उससे पूछते हैं कि वह हमें कैसे उपयोग करना चाहता है?
2. प्रार्थना करें: आप जानते हैं कि मसीह की देह में परमेश्वर का आपके लिए एक उद्देश्य है। तो अब आप उससे पूछें कि वह आपको दिखाए कि वह क्या है, यह जानते हुए कि वह इसके लिए उत्तर देगा, यह उसकी इच्छा है। भजन 25:12। इसके लिए प्रार्थना करते हुए हम केवल परमेश्वर से हमें यह प्रकट करने के लिए कह रहे हैं कि यीशु ने हमें क्या करने के लिए निर्धारित किया है।
3. नए नियम में उपहारों की सूची की समीक्षा करें: आपको यह सोचने की आवश्यकता है कि परमेश्वर किसे सेवकाई कहता है। निम्नलिखित उपहार या सेवकाई के कुछ उदाहरण हैं (अस्थायी या चमत्कारी सहित नहीं) जो आपको एक विचार देना चाहिए।
  - a. "और परमेश्वर ने कलीसिया में सब से पहिले प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर आश्चर्यकर्म करनेवाले, और चंगा करनेवाले, औरोंकी सहायता करनेवाले, प्रशासन के वरदानवाले, और नाना प्रकार की बातें बोलनेवाले नियुक्त किए हैं। जीभा। (1 कुरिन्थियों 12:28)
  - b. "वही है जिस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को पास्टर और शिक्षक नियुक्त करके परमेश्वर के लोगों को सेवा के कामों के लिये तैयार किया, ताकि मसीह की देह तब तक बनी

mercy. That is their specialty or their special ministry. Not everything you do is classified as your gift or ministry. Many things are just a part of your duty as a Christian. "Now to each one the manifestation of the Spirit is given for the common good. (1 Corinthians 12:7) But there is some service to which you are to dedicate yourself, to specialize in. This is your ministry. Through the exercise of our gift, i.e. performing our function or ministry, we all work together. Diverse personalities, ages, experiences all joined in a common enterprise requires that we get along well and that we treat each other with respect and consideration. If one or more member fails to do their task, the body fails to operate as effectively as God desires.

#### Some Steps To Help You Determine Your Gift(s)

Spiritual gifts (gifts of the Holy Spirit) were given to you by God when you became a Christian. The New Testament does not give a list of steps for determining one's spiritual gift. We are told to pursue gifts, to prepare and to use them, but we are not told how to determine them, at least not in a concise list. The following steps are suggestions on how to proceed and are not considered the final, authoritative word on the subject.

**Place Yourself Entirely At God's Disposal:** This is an objective decision of yours which is implied by your decision to become a Christian. Say to God as Isaiah did: "Here am I, send me." Isaiah 6:8. Declare to God: "Not my will but Your will be done." Without this attitude, why would we expect God to answer us when we ask Him how He wants to use us?

**Pray:** You know that God has a purpose for you in the body of Christ. So now you ask Him to show you what it is, knowing that He will answer for it is His will. Psalm 25:12. Praying for this we are simply asking for God to reveal to us what Jesus has determined for us to be doing.

**Review The Lists Of Gifts In The New Testament:** You need to start thinking about what God calls a ministry. The following are some examples of gifts or ministries (not including temporary or miraculous ones) that

रहे जब तक कि हम सब के सब विश्वास में, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक हो जाते हैं, और सिद्ध हो जाते हैं, और मसीह की परिपूर्णता का पूरा माप प्राप्त करते हैं।" (इफिसियों 4:11-13)

c. "क्योंकि अपने उस अनुग्रह के कारण जो मुझे मिला है, मैं तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि अपने आप को जितना समझना चाहिए, उस से बढ़कर न समझो, परन्तु परमेश्वर के दिए हुए विश्वास के अनुसार अपने आप को संयम से समझो। जिस प्रकार हम में से प्रत्येक के पास एक शरीर है जिसमें कई अंग हैं, और इन सभी अंगों का एक ही कार्य नहीं है, इसलिए मसीह में हम जो अनेक हैं, एक शरीर हैं, और प्रत्येक अंग अन्य सभी का है। हमें दिए गए अनुग्रह के अनुसार, हमारे पास भिन्न-भिन्न वरदान हैं। यदि किसी मनुष्य का वरदान भविष्यद्वाणी करना है, तो वह अपने विश्वास के अनुसार उसका उपयोग करे। यदि वह सेवा कर रहा है, तो उसे सेवा करने दो; यदि वह सिखाता है, तो उसे सिखाने दो; अगर यह उत्साहजनक है, तो उसे प्रोत्साहित करने दो; अगर यह दूसरों की जरूरतों में योगदान दे रहा है, तो उसे उदारता से दे; यदि यह नेतृत्व है, तो उसे लगन से शासन करने दो; यदि वह दया करता है, तो प्रसन्नता से करे।" (रोमियों 12:3-8)

d. "हर एक को जो कुछ भी उपहार मिला है, उसे दूसरों की सेवा करने के लिए उपयोग करना चाहिए, भगवान की कृपा को उसके विभिन्न रूपों में विश्वासपूर्वक प्रशासित करना चाहिए। यदि कोई बोलता है, तो उसे ऐसा करना चाहिए जैसे वह परमेश्वर के वचनों को बोलता है। यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है, ताकि सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की स्तुति हो। उसकी महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे।" (1 पतरस 4:10-11)

चूँकि ये सूचियाँ समान नहीं हैं, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि ये संपूर्ण नहीं हैं।

एसचरवाहा, पादरी, बिशप  
इंजीलवादी, उपदेशक, मंत्री

अध्यापक

डेकन

वह जो दया दिखाता हो

वह जो सहायता करता/देती हो

exhorter

देने वाला

प्रशासक

निम्नलिखित इनमें से कुछ कार्यों का सारांश देता है।

इंजीलवादी और उपदेशक

"परमेश्वर को और मसीह यीशु को जो जीवतों और मरे हुआओं का न्याय करेगा, और उसके प्रगट होने और उसके राज्य को निहारने के लिये, मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ, कि वचन का प्रचार कर; मौसम और मौसम के बाहर तैयार रहना; बड़े धैर्य और

should give you an idea.

“And in the church God has appointed first of all apostles, second prophets, third teachers, then workers of miracles, also those having gifts of healing, those able to help others, those with gifts of administration, and those speaking in different kinds of tongues.” (1 Corinthians 12:28)

“It was he who gave some to be apostles, some to be prophets, some to be evangelists, and some to be pastors and teachers, to prepare God's people for works of service, so that the body of Christ may be built up until we all reach unity in the faith and in the knowledge of the Son of God and become mature, attaining to the whole measure of the fullness of Christ.” (Ephesians 4:11-13)

“For by the grace given me I say to every one of you: Do not think of yourself more highly than you ought, but rather think of yourself with sober judgment, in accordance with the measure of faith God has given you. Just as each of us has one body with many members, and these members do not all have the same function, so in Christ we who are many form one body, and each member belongs to all the others. We have different gifts, according to the grace given us. If a man's gift is prophesying, let him use it in proportion to his faith. If it is serving, let him serve; if it is teaching, let him teach; if it is encouraging, let him encourage; if it is contributing to the needs of others, let him give generously; if it is leadership, let him govern diligently; if it is showing mercy, let him do it cheerfully.” (Romans 12:3-8)

“Each one should use whatever gift he has received to serve others, faithfully administering God's grace in its various forms. If anyone speaks, he should do it as one speaking the very words of God. If anyone serves, he should do it with the strength God provides, so that in all things God may be praised through Jesus Christ. To him be the glory and the power forever and ever.” (1 Peter 4:10-11)

Since these lists are not identical we conclude that they are not exhaustive.

Shepherd, Pastor, Bishop

Evangelist, Preacher, Minister

Teacher

सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ सही, फटकार और प्रोत्साहित करें। क्योंकि वह समय आएगा, जब मनुष्य खरा उपदेश न सह सकेंगे। इसके बजाय, अपनी इच्छाओं के अनुरूप, वे अपने आस-पास बड़ी संख्या में शिक्षकों को इकट्ठा करेंगे, जो उनके खुजली वाले कानों को सुनना चाहते हैं। वे अपने कानों को सच्चाई से फेर लेंगे और मिथकों की ओर मुड़ेंगे। परन्तु तू सब बातों में सिर झुकाए, कष्ट सह, सुसमाचार प्रचार का काम कर, और अपनी सेवकाई के सारे कर्तव्यों का पालन कर।” (2 तीमुथियुस 4:1-5)

पादरी, ओवरसियर और बुजुर्ग

1. सेवा के कार्यों के लिए परमेश्वर के लोगों को तैयार करें
2. ओवरसियर के रूप में सेवा करें
3. एक सैद्धांतिक प्रश्न पर विचार करें
4. जागते रहो, और अपक्की और सारे भेड़-बकरियोंकी चौकसी रखो
5. उदाहरण बनें
6. चर्च के मामलों को निर्देशित करें (प्रचार करें, संपादित करें, पुनर्स्थापित करें, फटकारें, अनुशासन दें और एक उदाहरण बनें)
7. सेवा करने को आतुर
8. भरोसे के लायक संदेश को मजबूती से थामे रहिए
9. खरे उपदेशों से दूसरों का उत्साहवर्धन करो
10. विरोध करने वालों का खंडन करें
11. प्रार्थना
12. शरीर द्वारा आवश्यक कार्य के लिए चुने गए व्यक्तियों पर हाथ रखना।
13. दूसरों के काम की रिपोर्ट प्राप्त करें
14. फटकार और अनुशासन

शिक्षकों की

“हर एक को जो कुछ भी उपहार मिला है, उसे दूसरों की सेवा करने के लिए उपयोग करना चाहिए, भगवान की कृपा को उसके विभिन्न रूपों में विश्वासपूर्वक प्रशासित करना चाहिए। यदि कोई बोलता है, तो उसे ऐसा करना चाहिए जैसे वह परमेश्वर के वचनों को बोलता है। यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है, ताकि सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की स्तुति हो। उसकी महिमा और सामर्थ्य युगानुयुग रहे।” (1 पतरस 4:10-11)

ईसाइयों

“जिस प्रकार हम में से प्रत्येक के पास एक शरीर है जिसमें कई सदस्य हैं, और इन सभी अंगों का एक ही कार्य नहीं है, इसलिए मसीह में हम जो कई हैं, एक शरीर हैं, और प्रत्येक अंग अन्य सभी का है। हमारे पास अलग-अलग उपहार (कार्य) हैं - करिश्मा, करिश्मा, चारिजोमाई अनुग्रह का उपहार; एक एहसान जिसे कोई अपनी योग्यता के बिना प्राप्त करता है) हमें दिए गए अनुग्रह के अनुसार। यदि किसी मनुष्य का वरदान भविष्यद्वाणी करना है, तो वह अपने विश्वास के अनुसार उसका उपयोग करे। यदि वह सेवा कर रहा है, तो

<p><b>Deacon</b></p> <p><b>One who shows mercy</b></p> <p><b>One who gives aid/helps</b></p> <p><b>Exhorter</b></p> <p><b>One who gives</b></p> <p><b>Administrator</b></p> <p><b>The following summarizes some of these functions.</b></p> <p><b><u>Evangelists and preacher</u></b></p> <p><b>“In the presence of God and of Christ Jesus, who will judge the living and the dead, and in view of his appearing and his kingdom, I give you this charge: Preach the Word; be prepared in season and out of season; correct, rebuke and encourage-with great patience and careful instruction. For the time will come when men will not put up with sound doctrine. Instead, to suit their own desires, they will gather around them a great number of teachers to say what their itching ears want to hear. They will turn their ears away from the truth and turn aside to myths. But you, keep your head in all situations, endure hardship, do the work of an evangelist, discharge all the duties of your ministry.” (2 Timothy 4:1-5)</b></p> <p><b><u>Pastors, Overseers and Elders</u></b></p> <p><b>Prepare God's people for works of service</b></p> <p><b>Serve as overseers</b></p> <p><b>Consider a doctrinal question</b></p> <p><b>Keep watch and be on guard over yourselves and all the flock</b></p> <p><b>Be examples</b></p> <p><b>Direct the affairs of the church (evangelize, edify, restore, rebuke, discipline and be an example)</b></p> <p><b>Eager to serve</b></p> <p><b>Hold firmly to the trustworthy message</b></p> <p><b>Encourage others by sound doctrine</b></p> <p><b>Refute those who oppose</b></p>	<p>उसे सेवा करने दो; यदि वह सिखाता है, तो उसे सिखाने दो; अगर यह उत्साहजनक है, तो उसे प्रोत्साहित करने दो; अगर यह दूसरों की जरूरतों में योगदान दे रहा है, तो उसे उदारता से दें; यदि यह नेतृत्व है, तो उसे लगन से शासन करने दो; यदि वह दया करता है, तो प्रसन्नता से करे।” (रोमियों 12:4-8)</p> <p><b>उपयाजकों</b></p> <p>कुछ लोग सोचते हैं कि अधिनियम 6 उपयाजकों के कार्य को निर्दिष्ट करता है अन्य असहमत हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि लूका उन्हें उपयाजक नहीं कहता है और न ही ऐसा कोई संकेत है कि चुने गए लोग 1 तीमुथियुस में निर्दिष्ट योग्यताओं को पूरा करते हैं। उनके काम को डायकोनोस, सर्व के अर्थ में ठीक से पहचाना जाता है। अतिरिक्त अध्ययन के लिए वर्क ऑफ डीकन, 28 नवंबर, 2005 देखें।</p> <p>4. चर्च की जरूरतों पर विचार करें: पतरस स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि हमें परमेश्वर के विविध अनुग्रह के अच्छे भण्डारी के रूप में एक दूसरे की सेवा करने के लिए अपने उपहारों का उपयोग करना है (1 पतरस 4:10)। उपहार मंत्रालय या सेवाएं हैं। सेवा करना एक आवश्यकता को पूरा करना है। उपहारों का उद्देश्य लोगों को व्यस्त रखना नहीं है बल्कि चर्च की जरूरतों को पूरा करना है न कि हमारी व्यक्तिगत जरूरतों को। इसलिए हमें चर्च की जरूरतों को देखना चाहिए। जैसे-जैसे ये जरूरतें स्पष्ट होती जाती हैं, उन्हें पूरा करने में अपनी इच्छाओं का पालन करें।</p> <p>5. अवसरों की तलाश करें: दरवाजे की एक पत्रिका शुरू करें जो भगवान ने आपके लिए खोली है। जैसे-जैसे समय बीतता है आप उस दिशा को देखना शुरू कर सकते हैं जिसमें वह आपकी अगुवाई कर रहा है।</p> <p>6. कलीसिया के नेतृत्व से मार्गदर्शन प्राप्त करें: इफिसियों 4:11, 12 कहता है कि कलीसियाई नेतृत्व के वरदान संतों को सुसज्जित करने के लिए कलीसिया को दिए जाते हैं। नेतृत्व के इन उपहारों का सदुपयोग करें।</p> <p>7. पहल करें: आपने प्रभु से प्रार्थना की है, नए नियम में मंत्रालयों की सूची की समीक्षा की है, कलीसिया की उन जरूरतों को ध्यान में रखा है जिन्हें प्रभु ने आपके ध्यान में लाया है और संभवतः आपमें पूरी करने की इच्छा भी रखी है। आपने ध्यान दिया है कि भगवान हमेशा कुछ दिशाओं में अवसर के द्वार खोल रहे हैं और आपने चर्च में नेतृत्व के साथ बात की है। अब और प्रतीक्षा न करें, पहल करें और उस पर आगे बढ़ें जो प्रभु चाहता है कि आप करें।</p> <p>यदि कोई आपको अपनी सेवकाई के अनुसार कार्य करने से रोकने का प्रयास करता है, तो आपको मार्गदर्शन के लिए पतरस और अन्य प्रेरितों की ओर देखना आवश्यक हो सकता है। "पतरस और अन्य प्रेरितों ने उत्तर दिया: 'हमें मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए!'" (प्रेरितों के काम</p>
--	--



## Pray

Lay hands upon individuals selected for a work needed by the body.

Receive reports of work of others

Rebuke and discipline

## Teachers

"Each one should use whatever gift he has received to serve others, faithfully administering God's grace in its various forms. If anyone speaks, he should do it as one speaking the very words of God. If anyone serves, he should do it with the strength God provides, so that in all things God may be praised through Jesus Christ. To him be the glory and the power forever and ever." (1 Peter 4:10-11)

## Christians

"Just as each of us has one body with many members, and these members do not all have the same function, so in Christ we who are many form one body, and each member belongs to all the others. We have different gifts (functions) - *charisma, charismatos, charizomai* a gift of grace; a favor which one receives without any merit of his own) according to the grace given us. If a man's gift is prophesying, let him use it in proportion to his faith. If it is serving, let him serve; if it is teaching, let him teach; if it is encouraging, let him encourage; if it is contributing to the needs of others, let him give generously; if it is leadership, let him govern diligently; if it is showing mercy, let him do it cheerfully." (Romans 12:4-8)

## Deacons

Some think Acts 6 specifies the work of Deacons others disagree. It should be noted that Luke does not call them deacons nor is there any indication that those selected met the qualifications specified in 1 Timothy. Their work is properly identified in the meaning of the *diakonos*, serve. For additional studies refer to Work of Deacons, Nov. 28, 2005.

Consider The Needs Of The Church: Peter plainly tells us that we are to employ our gifts for serving one another as good stewards of God's varied grace (1 Peter 4:10). Gifts are ministries or services. To serve is to

5:29)

अध्याय 4

## मसीह के प्रति समर्पण

इस श्रृंखला के पिछले पाठों में दो महत्वपूर्ण कदमों पर जोर दिया गया है: अ) अपने मूल्यों को स्पष्ट करना और ब) अपने जीवन को अधिकतम करने की दिशा में अपने ईश्वर प्रदत्त श्रृंगार, अपने आकार की पहचान करना। लेकिन जब तक आप अपना जीवन यीशु मसीह को समर्पित नहीं करते, जो कि इस पाठ का केंद्रबिंदु है, वे बिल्कुल बेकार हैं।

अब हम ऐसे समय में रहते हैं जब हमारा समाज प्रतिबद्धता से डरता है। दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के समाजशास्त्री रॉबर्ट बेला ने हैबिट्स ऑफ द हार्ट लिखा है। उन्होंने कहा, "अमेरिकी कुछ भी करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं हैं। अगर हम किसी भी चीज के लिए प्रतिबद्ध हैं तो यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता है और हमारे विकल्प खुले हैं।" अब इसके साथ समस्या यह है कि यह कहाँ जाता है। अगर मैं किसी चीज के लिए प्रतिबद्ध नहीं हूँ, तो मुझे जीवन से कुछ भी नहीं मिलने वाला है। यह एक कैफेटेरिया लाइन के नीचे जाने और कहने जैसा है, "ठीक है, मैं अभी अपना प्रवेश नहीं करने जा रहा हूँ, मैं अपने विकल्प खुले रखना चाहता हूँ। मैं सब्जियों पर इंतजार करूँगा। मैं अपने विकल्प खुले रखने जा रहा हूँ।" जब तक आप लाइन के अंत तक पहुंच जाते हैं। आपके पास ट्रे में कुछ भी नहीं है, और यही कई जन्मों में होता है।

इस श्रृंखला में पहले हमने कहा था कि गैर-जरूरी चीजों पर समय बर्बाद न करके अधिकतम जीवन के लिए फोकस बनाए रखना आवश्यक है। ध्यान केंद्रित करने की कुंजी प्रतिबद्धता है। वास्तव में परिपूर्ण जीवन जीने के लिए सबसे पहली आवश्यक बात यह है कि आप अपने जीवन को परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा उसकी इच्छा के अनुसार समर्पित करें। पौलुस ने रोमियों 12:1 में कहा, "भाइयों, मैं तुम से विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाओ, जो कि तुम्हारी उचित सेवा है (आध्यात्मिक सेवा-एएसवी)। अब मेरी सुनिये, जब मैं कहता हूँ, "मसीह के प्रति समर्पित हो जाइए," मैं निर्णय से अधिक की बात कर रहा हूँ। मैं एक प्रतिबद्धता के बारे में बात कर रहा हूँ।

आप में से कई लोगों ने मसीह के बारे में निर्णय लिया है, लेकिन मुझे लगता है कि यह कहना उचित है कि आप में से कई ऐसे हैं जिन्होंने वास्तव में उसके प्रति समर्पण नहीं किया है। आप वह उद्धार चाहते हैं जो वह प्रदान करता है, लेकिन आप सुनिश्चित नहीं हैं कि आप वह प्रभुत्व चाहते हैं जिसकी वह माँग करता है। यही हम प्रतिबद्धता के साथ बात कर रहे हैं।

**हमें अपना जीवन मसीह को समर्पित करने की आवश्यकता है क्योंकि:**

1. यह हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा है। "हम परमेश्वर के बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले

meet a need. The purpose of the gifts is not to keep people busy but to meet needs of the church not our individual needs. So we must look to the needs of the church. As these needs become apparent, follow your desires in fulfilling them.

**Look For Opportunities:** Start a journal of doors that God has opened for you. As time goes on you may begin to see a direction in which He is leading you.

**Seek Guidance From Church Leadership:** Ephesians 4:11, 12 says that the gifts of church leadership are given to the church for the equipping of the saints. Make good use of these gifts of the leadership.

**Take The Initiative:** You have prayed to the Lord, reviewed the list of ministries in the New Testament, taken into account the needs of the church that the Lord has brought to your attention and possibly even put the desire in you to fulfill. You have noted that God is always opening up doors of opportunity in certain directions and you have talked things over with the leadership in the church. Wait no longer, take the initiative and get on with what the Lord would have you to be doing.

Should someone attempt to prevent you from performing what you perceive your ministry to be, you may find it necessary to look to Peter and the other apostles for guidance. "Peter and the other apostles replied: 'We must obey God rather than men!'" (Acts 5:29)

## Chapter 4

### Committing to Christ

Previous lessons in this series emphasized two critical steps: a) clarifying your values and b) identifying your God-given make-up, your shape, toward maximizing your life. But they're absolutely worthless unless you commit your life to Jesus Christ, which is the focus of this lesson.

कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।" (इफिसियों 2:10) ऐसी अच्छी चीजें हैं जिन्हें करने के लिए उसने हमें बनाया है। ध्यान दें, "हम मसीह यीशु में भले काम करने के लिए (कैसे?) सृजे गए हैं।" दूसरे शब्दों में, मसीह के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता के अलावा, हम कभी भी जीवन के अधिकतम उद्देश्य, हमारी क्षमता को तब तक महसूस नहीं कर पाएंगे जब तक कि प्रतिबद्धता पूरी नहीं हो जाती।

मैं अपने उद्धार के लिए आभारी हूँ।

पौलुस ने 2 तीमुथियुस 1:9 में कहा [यीशु] ने हमें बचाया और पवित्र जीवन के लिये बुलाया, न कि हम ने कुछ किया है, परन्तु अपनी युक्ति और अनुग्रह के कारण। मुझे अपना जीवन परमेश्वर को देना है क्योंकि उसने अपना जीवन मुझे दिया है। तथास्तु? परमेश्वर ने अंतिम प्रतिबद्धता तब दी जब उसने मनुष्य का रूप धारण किया और पाप के पूर्ण प्रायश्चित के रूप में हमारे लिए उस क्रूस पर मरने के लिए पृथ्वी पर आया। यह बहुत स्पष्ट है, लेकिन साथ ही बेहद शक्तिशाली है।

यदि परमेश्वर ने मेरे लिए कभी दूसरा काम नहीं किया, मेरे जीवन में कभी किसी और चीज को आशीषित नहीं किया, कभी दूसरी प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया, कभी मुझे भोजन का एक और ग्रास नहीं दिया या मेरे तरीके से कभी भी एक और दयालु शब्द नहीं कहा, तो उसने जो किया उसके कारण मैं उसका एहसानमंद हूँ मेरे लिए क्रूस पर। पॉल ने 1 कुरिन्थियों 15:10 में अपनी खुद की प्रेरणा के बारे में लिखा है, "परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, वह परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ, और मैं उन सब से बढ़कर परिश्रम भी करता हूँ - तौभी मैं नहीं, परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह जो मुझ पर था।" मैं मसीह को समर्पित हूँ क्योंकि मैं अपने उद्धार के लिए आभारी हूँ।

2. भगवान उस प्रतिबद्धता को पुरस्कृत करने का वादा करता है। अगर मैं कूदता हूँ, मेरा मतलब है कि अगर मैं वास्तव में कूदता हूँ, तो वह उस प्रतिबद्धता को पुरस्कृत करेगा। लूका 6:38 को देखें, कई लोग इस पद को पैसा देने के बारे में बात करने के लिए मानते हैं, लेकिन यह वास्तव में पूरे जीवन को संदर्भित करता है। "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। पूरा नाप दबा दबाकर, हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डाला जाएगा।" मत्ती ने यीशु को उसी बात के बारे में बताते हुए रिकॉर्ड किया है "पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब चीजें तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती 6:33)

पवित्र शास्त्र में वे दर्जनों और दर्जनों शानदार वादों में से केवल दो हैं जहाँ परमेश्वर कहता है कि यदि आप अपना जीवन मेरे हाथों में दे देंगे, तो मैं आपके लिए ऐसी आशीषें और लाभ लाऊंगा जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं - यदि आप केवल मुझ पर भरोसा करेंगे . जितना अधिक तुम मेरे लिए प्रतिबद्ध होगे, उतना ही अधिक मैं तुम्हारे माध्यम से पूरा करूंगा।

Now we live in a time when our society fears commitment. Robert Bella, sociologist at the University of Southern California, wrote *Habits of the Heart*. He said, "Americans are committed to nothing. If we're committed to anything it's individual freedom and keeping our options open." Now the problem with that is where it leads. If I don't commit to anything, then I'm not going to get anything out of life. It's like going down a cafeteria line and saying, "Well, I'm not going to choose my entree right now, I want to keep my options open. I'll wait on the vegetables. I am going to keep my options open." By the time you get to the end of the line. You don't have anything on the tray, and that's what happens in so many lives.

Earlier in this series, we said that maintaining a focus is essential to the maximum life by not wasting time on things that don't matter. The key to focus is commitment. The number one thing necessary to living a life that is really full is to commit your life to God's will through his son, Jesus Christ. Paul said in Romans 12:1, "I beseech you brethren to present your bodies as a living sacrifice which is your reasonable service (spiritual service-ASV)." Now hear me, when I say, "Commit to Christ," I'm talking about more than a decision. I'm talking about a commitment.

Many of you have made a decision about Christ, but I think it's fair to say that there are many of you who have not really committed to Him. You want the salvation that He offers, but you're not sure you want the lordship that He demands. That's what we're talking about with commitment.

We need to commit our life to Christ because:

It is part of God's plan for our life.

"We are God's workmanship, created in Christ Jesus to do good works, which God prepared in advance for us to do." (Ephesians 2:10) There are good things that He created us to do. Notice "We are created (how?) in Christ Jesus to do good works." In other words, apart from a genuine commitment to Christ, we will never realize life's maximum purpose, our potential until that

क्या वे अच्छे कारण नहीं हैं; क्या वे मसीह को अपना जीवन समर्पित करने के महान कारण नहीं हैं? मैं कोई बेहतर कारण नहीं सोच सकता। तो तुरंत कोई कहता है, "फिर हर कोई ऐसा क्यों नहीं करता? हर कोई यीशु के प्रति प्रतिबद्ध क्यों नहीं होता?" हर कोई वास्तव में प्रतिबद्ध होने के प्रतिरोध के कारण मसीह के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होता है, जिनमें से तीन की चर्चा नीचे की गई है।

### मसीह के प्रति प्रतिबद्धता का विरोध:

1. निकट दृष्टि दोष-लंबी नज़र रखने में विफलता.

हम 20 या 30 वर्षों के मार्ग को नहीं देखते हैं, शाश्वत दृष्टिकोण से तो बिल्कुल भी नहीं। हम अभी के लिए जीते हैं। सी.एस. लुईस ने अपनी एक पुस्तक में कुछ उत्कृष्ट लिखा है, "हमारे पास गलत दृष्टिकोण है। हम अपने आप को मनुष्य के रूप में सोचते हैं जिनके पास आध्यात्मिक आयाम है, जबकि वास्तव में, हम आध्यात्मिक प्राणी हैं जो केवल मानवीय अनुभव से गुजर रहे हैं। बड़ा चित्र है, मैं एक आध्यात्मिक प्राणी हूँ, और मैं हमेशा के लिए कहीं रहने जा रहा हूँ। लेकिन, हम निकट दृष्टि प्राप्त कर लेते हैं और अपने आप को शरीर में बंधा हुआ देखते हैं। निकट दृष्टि दोष हमारा ध्यान इस बात पर केंद्रित रखता है कि आसान चीज़ क्या है, मज़ेदार चीज़ और सुविधाजनक चीज़ क्या है, हमारे दीर्घकालिक मूल्यों की अनदेखी करते हुए।

यीशु ने कहा, "परन्तु इस जीवन की चिन्ता, धन का धोखा, और और वस्तुओं का लोभ आकर वचन को दबा देता है, और उसे निष्फल कर देता है।" (मरकुस 4:19) हमारे प्रभु ने ठीक सिर पर कील ठोंकी। हम अत्यावश्यक पर ध्यान केंद्रित करते हैं, महत्वपूर्ण नहीं। हम उन वास्तविक मूल्यों को भूल जाते हैं जिनका मूल्यांकन हमने "मेरे मूल्य क्या हैं" पाठ में किया था। हमने यह पूछना बंद कर दिया, "जब मैं 90 साल का हो जाता हूँ और पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो ऐसा क्या है जो मैं सबसे ज्यादा करना चाहता हूँ? मैं सबसे ज्यादा कैसे याद किया जाना चाहता हूँ?" हम अभी के बारे में सोचते हैं। हम प्रतिबद्ध नहीं हैं!

मुझे जॉन स्कली की कहानी बहुत पसंद है। 70 के दशक के मध्य में, वह पेप्सी कोला के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी थे। वे 34 साल की उम्र में राष्ट्रपति बने थे। हर बड़ी मैगज़ीन के कवर पर उनका चेहरा था। 42 साल की उम्र में, वह दुनिया में सबसे ज्यादा पैसा कमा रहे थे, जितना वह खर्च कर सकते थे, अगर वह इसे हर सेकेंड में खर्च करते। स्टीव जॉब के नाम से एक साथी ने Apple कंप्यूटर नामक एक छोटी सी कंप्यूटर कंपनी शुरू की थी। जहाँ तक वह ले जा सकता था, उसने इसे ले लिया था। वह इस आदमी को जानता था जॉन स्कली ही वह आदमी था जो इसे अभी तक अगोचर ऊंचाइयों तक ले जा सकता था। उसने भीख माँगी, और भीख माँगी, और भीख माँगी, और उसे आने के लिए भीख माँगी, लेकिन स्कली बहुत अधिक पैसा कमा रही थी। अंत में, न्यूयॉर्क के एक

commitment is made.

### I'm grateful for my salvation.

Paul said in 2 Timothy 1:9 [Jesus] saved us and called us to a holy life, not because of anything we have done, but because of His own purpose and grace. I need to give my life to God because He's given His life to me. Amen? God made the ultimate commitment when He took on the form of man and came to earth to die on that cross for us as the perfect sin atonement. It's pretty obvious, but at the same time extremely powerful.

If God never did another thing for me, never blessed anything else in my life, never answered another prayer, never gave me another morsel of food or never said another kind word my way, I owe Him my all right now because of what He did for me on the cross. Paul writing about His own motivation in 1 Corinthians 15:10 stated, "But by the grace of God I am what I am, and I labor more abundantly than they all—yet not I, but the grace of God that was with me." I commit to Christ because I'm grateful for my salvation.

### God promises to reward that commitment.

If I'll jump in, I mean if I'll really jump in, He'll reward that commitment. Look at Luke 6:38, many consider this verse to talk about giving money, but it really refers to all of life. "Give, and it will be given to you. A good measure, pressed down, shaken together and running over, will be poured into your lap." Matthew records Jesus stating about the same thing "Seek ye first the kingdom of God and His righteousness, and all these things will be added unto you." (Matthew 6:33)

Those are just two of dozens and dozens of fantastic promises in Scripture where God says if you'll just put your life in my hands, I'll bring you blessings and benefits you can't even imagine—if you'll just trust me. The more you commit to me, the more I will accomplish through you.

Are those not good reasons; are those not great reasons to commit your life to Christ? I can't think of any better

पेंटहाउस में, उसने जॉन की ओर देखा और उसने उससे यह घातक प्रश्न पूछा: "जॉन, क्या तुम अपना शेष जीवन मीठा-पानी बनाने में बिताना चाहते हो,

लेकिन कंप्यूटर से परे भी ऊंचाइयां हैं। 1 यूहन्ना 2:17 में प्रेरित यूहन्ना ने कहा, "संसार और उसकी सारी अभिलाषाएं और अभिलाषाएं एक दिन मिट जाएंगी, परन्तु जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा जीवित रहेगा।" प्रतिबद्ध होने के लिए हमें उस नज़दीकी दृष्टि पर काबू पाना होगा।

### 2. स्वार्थ - केवल अपने बारे में सोचना।

कई लाखों लोग अपने चारों ओर अपनी पूरी दुनिया का निर्माण करते हैं और उनके पास भगवान के लिए समय नहीं होता है। मेरे पास भगवान के लिए समय नहीं है; मैं अपने करियर में बहुत व्यस्त हूँ। मेरे पास मेरे जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए समय नहीं है, मेरे पास जाने के लिए जगह है, लोगों को देखने के लिए और काम करने के लिए है। मेरे पास सपने हैं, मेरे पास योजनाएं हैं, मेरे पास महत्वाकांक्षा है। अब ये वे लोग हैं जो संक्षेप में कह रहे हैं, "अब भगवान, मैं अपने जीवन के बारे में तुमसे ज्यादा जानता हूँ। मुझे पता है कि मुझे क्या खुश करने वाला है, मुझे पता है कि मुझे क्या पूरा करना है।" लेकिन भगवान कहते हैं, "नहीं, तुम नहीं करते। मैंने तुम्हें डिजाइन किया और मैंने तुम्हें बनाया। तुम सोचते हो कि तुम जानते हो, लेकिन तुम इसे उड़ा रहे हो।"

आप में से कुछ ने अखबार में कार्टून केल्विन और हॉब्स को पढ़ा। कुछ समय पहले मैंने एक देखा था जो मुझे लगा कि वास्तव में प्यारा है। केल्विन हॉब्स को देख रहा था और उससे कहा, "मैं दुनिया के साथ शांति में हूँ, और मैं पूरी तरह से शांत हूँ।" हॉब्स ने कहा, "अच्छा, ऐसा क्यों है?" केल्विन ने कहा, "ठीक है, मैंने अपने जीवन के उद्देश्य को खोज लिया है, मुझे पता है कि मुझे यहाँ क्यों रखा गया था और क्यों सब कुछ मौजूद है।" हॉब्स ने कहा, "0 वास्तव में?" केल्विन ने कहा, "हाँ, मैं यहाँ इसलिए हूँ ताकि हर कोई वह कर सके जो मैं चाहता हूँ।" हॉब्स ने कहा, "ठीक है, इसे साफ करना अच्छा है।" केल्विन ने कहा, "हाँ, और एक बार जब हर कोई इसे स्वीकार कर लेता है, तो वे भी शांत हो जाएँगे।"

हम उस पर हंसते हैं, लेकिन दुनिया में बहुत सारे केल्विन हैं। दुनिया उनके इर्द-गिर्द घूमती है। एक बार जब दूसरे लोग इसका पता लगा लेंगे, तो वे भी शांत हो जाएँगे। लेकिन जब आप अपने लिए जीते हैं, तो आपके पास जीवन में बहुत छोटा लक्ष्य होता है। लेकिन यीशु ने मरकुस 8:35 में दर्ज के रूप में कहा, "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।"

### 3. डर।

उन लोगों में जिन्होंने अभी तक वास्तव में मसीह के लिए

reason. So immediately somebody says, "Why doesn't everybody do it then? Why doesn't everybody commit to Jesus?" Everybody doesn't really commit to Christ because of the resistance to commit, three of which are discussed below.

**Resistance to commitment to Christ:**

**1. Nearsightedness- failure to take the long look.**

We don't look 20 or 30 years down the road, much less from an eternal perspective. We just tend to live for now. C. S. Lewis wrote something excellent in one of His books, "We have the wrong view. We tend to think of ourselves as human beings who have a spiritual dimension, when in fact, we are spiritual beings simply passing through the human experience. The big picture is, I'm a spiritual being, and I'm going to live forever somewhere. But, we get nearsighted and see ourselves packaged in the flesh. Nearsightedness keeps our focus on what's the easy thing, the fun thing and the convenient thing, ignoring our long-term values.

Jesus said "'But the worries of this life, the deceitfulness of wealth and the desires for other things come in and choke the word, making it unfruitful.'" (Mark 4:19) Our Lord hit the nail right on the head. We focus on the urgent, not the important. We lose sight of those real values that we evaluated in the "What Are My Values" lesson. We stopped asking, "When I'm 90 years old and looking back, what is it that I most want to have done? How do I most want to be remembered?" All we think about is now. We don't commit!

I love the story of John Skulley. In the mid-70s, he was the president and chief executive officer of Pepsi Cola. He became president at age 34. He had his face on the cover of every major magazine. At age 42, he was on top of the world making more money than he could ever spend if he doled it out every second. A fellow by the name of Steve Jobs had started up a fledgling little computer company called, Apple Computer. He had taken it about as far as he could take it. He knew this man John Skulley was the man who could take it to heights as yet unperceived. He begged, and begged, and begged, and begged him to come, but Skulley was

अपना जीवन समर्पित नहीं किया है, शुद्ध और सरल भय शायद सबसे आम कारण है। जैसे ही भय उत्पन्न होता है, हम स्वयं से प्रश्न पूछते हैं जैसे: इसकी कीमत क्या होगी? यदि मैं वास्तव में मसीह के प्रति प्रतिबद्ध हूं, तो परमेश्वर मुझसे क्या अपेक्षा करेगा यदि मैं वास्तव में उसका हाथ थाम लूं और उसे अपनी अगुवाई करने दूं? क्या मैं कट्टर हो जाऊंगा? दूसरे लोग क्या सोचेंगे? क्या मैं अपने धर्मनिरपेक्ष मित्रों को खो दूंगा? क्या मैं अब शांत नहीं रहूंगा? अगर मैं अपनी प्रतिबद्धता नहीं रख सकता तो क्या होगा? मैं विफल हो गया तो क्या हुआ?

वे इस प्रकार के भय हैं जो लोगों को प्रतिबद्ध होने से रोकते हैं। अब, यदि इसमें आप भी शामिल हैं और उन भयों ने आपको वह होने से रोक रखा है जो परमेश्वर चाहता है कि आप बनें, तो मैं आपको पुराने शैतान को छोड़कर उन भयों का स्रोत बताता हूं। भय का स्रोत यह है कि तुम परमेश्वर के चरित्र को नहीं समझते हो। या तो आप वास्तव में उसकी बुद्धि पर भरोसा नहीं करते हैं, या आप वास्तव में उसके प्यार पर भरोसा नहीं करते हैं। अफसोस की बात है, मैं बहुत से लोगों के लिए सोचता हूं, यह बाद वाला है।

दोस्तों, मैं आपको बताना चाहता हूं कि भगवान आकाश में कोई लौकिक मारक आनंद नहीं है जो आपको एक धमाकेदार सौदा करने के लिए इंतजार कर रहा है। उसने कहा, "मैं तुम्हारे लिए अपनी योजनाएँ जानता हूँ। वे भलाई के लिए हैं, बुराई के लिए नहीं।" (यिर्मयाह 29:11) हर पिता, हर माता-पिता इससे तादात्म्य स्थापित कर सकते हैं। यदि आपका बच्चा आपके पास आए और कहे, "पिताजी, मैं आपका सम्मान करता हूँ और मैं आपसे प्यार करता हूँ, आप मेरे पिता हैं, और मैं उस तरह से जीवन जीना चाहता हूँ, जैसा आप चाहते हैं कि मैं इसे जीऊँ।" आप इसका जवाब कैसे देंगे? पिताजी, क्या आप उस बच्चे को देखेंगे और कहेंगे, "हा, हा, हा, 0 लड़के, तुम यह नहीं जानते, लेकिन तुम यहाँ से आगे दुखी होने जा रहे हो। अब और आइसक्रीम नहीं - पालक, आटिचोक, और तुम्हारे लिए एंकोवी। मैं तुम्हारा प्ले स्टेशन तोड़ने जा रहा हूँ। तुम उस कोने में बैठने जा रहे हो और जीवन भर डंस कैप पहनोगे और कभी बाहर नहीं जाओगे।" क्या यह हास्यास्पद नहीं है? यह बिल्कुल बेतुका है। फिर भी, यही अवधारणा बहुत से लोगों के पास अपने जीवन के बारे में है यदि वे इसे परमेश्वर को समर्पित करते हैं। वह मुझे दयनीय बनाने के लिए किसी न किसी बाधा से गुजरने वाला है।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अगर मेरा बेटा मेरे पास आए और कहे, "पिताजी, मैं अपना जीवन आपके उद्देश्यों और लक्ष्यों के लिए समर्पित करना चाहता हूँ, मैं वह बेटा बनना चाहता हूँ जो आप मुझे बनाना चाहते हैं।" मैं उनके जीवन को जितना संभव हो उतना शानदार बनाने के लिए सब कुछ, अपनी शक्ति में सब कुछ करूँगा। परमेश्वर, हमारे पिता, कहते हैं, "मैं भी ऐसा ही करना चाहता हूँ।" इसलिए यीशु ने कहा, "पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज

making too much money. Finally, in a New York penthouse, he looked at John and he asked him this fateful question: "John, do you want to spend the rest of your life making sugared-water, or do you want to change the world?" That did it. It broke him out of his nearsightedness, and he did take Apple Computer to unprecedented heights.

But there are heights beyond computers. The apostle John said in 1 John 2:17, "The world and all its passions and desires will one day disappear, but anyone who does the will of God will live forever." We've got to get over that nearsightedness to commit.

## 2. Selfishness - thinking only about self.

Many millions of people build their whole world around themselves and they don't have time for God. I don't have time for God; I'm too busy with my career. I don't have time for God's purposes in my life, I've got places to go, people to see and things to do. I've got dreams, I've got plans, I've got ambition. Now these are people who are in essence saying, "Now God, I know more about my life than you do. I know what's going to make me happy, I know what's going to fulfill me." But God says, "No, you don't. I designed you and I built you. You think you know, but you're blowing it."

Some of you read *Calvin and Hobbs*, the cartoon in the newspaper. There was one I saw some time back that I thought was really cute. Calvin was looking at Hobbs and said to him, "I'm at peace with the world, and I'm completely serene." Hobbs said, "Well, why is that?" Calvin said, "Well, I've discovered my purpose in life, I know why I was put here and why everything exists." Hobbs said, "0 really?" Calvin said, "Yes, I'm here so that everybody can do what I want." Hobbs said, "Well, it's nice to have cleared that up." Calvin said, "Yes, and once everybody else accepts it, they'll be serene, too."

We laugh at that, but there are a whole lot of Calvins in the world. The world revolves around them. Once everybody else figures that out, they'll be serene, too. But when you live for yourself, you have a pretty small

करो, और मैं इन सब वस्तुओं को तुम में मिला दूंगा।"

भजन संहिता 37:3 को देखें, "यहोवा पर भरोसा रख और भलाई कर; देश में बसा रह, और सुरक्षित चराई का आनन्द उठा। यहोवा के कारण सुखी रह, वह तेरे मन की इच्छा पूरी करेगा। अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; उस पर भरोसा रख।" वह और वह यह करेंगे:" यही वादा है। अपना जीवन मसीह को सौंपने से मेरे पास डरने की कोई बात नहीं है। जीवन इससे कहीं अधिक अद्भुत होने जा रहा है अन्यथा यह हो सकता है।

## हमें मसीह के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता क्यों है।

मैं मसीह के प्रति समर्पण के साथ कैसे प्रत्युत्तर दूँ? जाहिर है, अगर आप एक ईसाई नहीं हैं, तो आपको मसीह में अपना भरोसा रखने और सुसमाचार का पालन करने की जरूरत है। जाहिर है, आपको यीशु को पहचानने की जरूरत है कि वह कौन है, परमेश्वर का पुत्र। आपको उसके पास घुटनों के बल यह कहते हुए आने की आवश्यकता है, "मैं उस पर विश्वास करता हूँ," उसके नाम का अंगीकार करते हुए। आपको अपने पापों की क्षमा के लिए, मसीह के साथ गाड़े जाने, मसीह में बपतिस्मा लेने की मृत्यु में डूबे रहने की आवश्यकता है। यही वह साधन है जिसके द्वारा कोई उस अनुग्रह को स्वीकार करता है जो परमेश्वर ने प्रदान किया है। लेकिन आप में से कुछ लोग पहले ही ऐसा कर चुके हैं। आप पहले ही सुसमाचार का पालन कर चुके हैं। आपने मसीह को उसके साथ बपतिस्मा में गाड़ा गया है। आप में से कुछ नियमित रूप से एक कलीसिया के साथ एकत्रित होते हैं, परन्तु यदि सत्य ज्ञात है, तो आपने अभी तक वास्तव में अपना जीवन मसीह को समर्पित नहीं किया है। आपने वास्तव में उसकी शक्ति और अनुग्रह पर कदम रखते हुए कहा है, "

आपको अभी भी क्या करने की आवश्यकता है? सबसे पहले आपको जो करना है वह गणना करना है। लूका 14:25 में, यीशु प्रतिबद्धता के बारे में सबसे आगे है। उन्होंने कहा कि यदि आप मेरा अनुसरण करने जा रहे हैं, तो आप इसके बारे में बेहतर सोचेंगे। उन्होंने कहा कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो पहले अपने पैसे और सामग्री की सूची लिए बिना एक टावर का निर्माण करेगा। वह सुनिश्चित करेगा कि वह समाप्त कर सके। वह आधे रास्ते से उठने और छोड़ने वाला नहीं है। उसने कहा कि ऐसा कोई राजा नहीं है जो युद्ध पर जाने से पहले अपनी सेना की गिनती न करे। अगर उसके पास 10,000 हैं, तो उसके 20,000 के साथ किसी के खिलाफ लड़ाई करने की संभावना नहीं है। उन्होंने कहा, "यदि आप मेरे लिए प्रतिबद्ध होने जा रहे हैं, तो आप इसके बारे में बेहतर सोचते हैं, आप इसकी बेहतर गणना करते हैं।" हर प्रतिबद्धता में, होने वाले लाभ और भुगतान की जाने वाली कीमतें हैं। आप तय करें कि आप आप इस आधार पर प्रतिबद्ध हैं कि क्या आपको लगता है कि लाभ लागत से अधिक हैं। इतना ही। दूसरे शब्दों में, क्या कारण लागत के लायक है?

मैं चाहता हूँ कि आप एक छोटा सा प्रयोग करें। अपने दिमाग में

goal in life. But Jesus said as recorded in Mark 8:35, "For whoever wants to save his life will lose it, but whoever loses his life for me and the gospel will save it."

### Fear.

Among those who have not yet really committed their life to Christ, pure and simple fear is probably the most common reason. As fears come up, we ask ourselves questions like: What will it cost? If I really commit to Christ, what will God require of me if I really took His hand and let Him lead me? Would I become a fanatic? What will other people think? Will I lose my secular friends? Will I no longer be cool? What if I can't keep my commitment? What if I fail?

Those are the kind of fears that keep people from committing. Now, if that includes you and those fears have kept you from being what God wants you to be, let me tell you what the source of those fears is, aside from the old devil himself. The source of the fears is you don't understand the character of God. Either you don't really trust His wisdom, or you don't really trust His love. Sadly, I think for too many people, it's the latter.

Folks, I want to tell you God is not some cosmic killjoy in the sky waiting to deal you a bummer. He said, "I know the plans I have for you. They are for good, and not for evil." (Jeremiah 29:11) Every father, every parent can identify with this. If your child was to come to you and said, "Dad, I respect you and I love you, you're my dad, and I want to live life the way you want me to live it." How would you respond to that? Dad, would you look at that child and say, "Ha, ha, ha, 0 boy, you don't know it, but you're going to be miserable from here on out. No more ice cream—spinach, artichokes, and anchovies for you. I'm going to break your play station. You're going to sit in that corner and wear a dunce cap the rest of your life and never go out." Isn't that ridiculous? It's absolutely absurd. Yet, that is the very concept many people have about their life if they commit it to God. He's going to put me through some obstacle course to make me miserable.

दो बहीखाता चित्र। इस खाता-बही में एक ओर प्रश्न है: यीशु मसीह के पीछे चलने की कीमत क्या है, क्योंकि कीमत है? बहीखाता के दूसरी तरफ सवाल यह है: वास्तव में यीशु मसीह को समर्पित न करने की क्या कीमत है? इन सवालों के जवाब में आप एक प्रतिबद्धता बना रहे हैं।

**जब आप मसीह को समर्पित करते हैं, तो आप क्या छोड़ते हैं?**

1. व्यक्तिगत संप्रभुता का अधिकार.

मैं कोई मुक्का नहीं मारने जा रहा हूँ। मत कहो "मैं मसीह के लिए प्रतिबद्ध हूँ" यदि आप प्रतिबद्ध नहीं होने जा रहे हैं। दूसरे शब्दों में, यह अब वह नहीं है जो मैं चाहता हूँ, परन्तु परमेश्वर, आप क्या चाहते हैं? यह वह नहीं है जो मैं करना चाहता हूँ, यह भगवान है, आप मुझसे क्या चाहते हैं?

देखिए, आश्चर्यजनक रूप से, ब्रह्मांड को बनाने वाले परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को यह चुनने की क्षमता दी है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर का हमारे जीवन में कितना प्रभाव होगा। उसे ऐसा नहीं करना था। वे चाहते तो हम सभी को कठपुतली, रोबोट या जानवर, पक्षी या मछली बना सकते थे। लेकिन उसने हमें सोचने, तर्क करने और चुनने की क्षमता दी है। उसने आपको निर्णय लेने की क्षमता दी है, ठीक है। इसलिए यदि आप यीशु मसीह के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो आप कह रहे हैं, "परमेश्वर, मैं इसे ठीक आपके पास वापस कर रहा हूँ।" देखें कि गलातियों 2:20 में पौलुस ने क्या कहा, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।" एक प्रतिबद्धता थी, और उन्होंने व्यक्तिगत संप्रभुता को पलट दिया।

2. आपके संसाधनों की व्यक्तिगत प्राथमिकता.

वाह! वह चुभता है! यह अब नहीं है कि मैं अपने समय के साथ क्या करना चाहता हूँ, यह भगवान है कि आप मुझे अपने समय के साथ क्या करना चाहते हैं? यह अब नहीं है कि मैं अपने पैसे का क्या करने जा रहा हूँ, लेकिन भगवान आप क्या चाहते हैं कि मैं आपके पैसे का क्या करूँ? देखिए, यह भण्डारीपन की अवधारणा है। जब आप यीशु मसीह के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं, तो आप कह रहे होते हैं, "मुझे एहसास है कि मेरे पास सब कुछ परमेश्वर का है और वह चाहता है कि मैं उसकी महिमा के लिए बस थोड़ी देर के लिए इसका प्रबंधन करूँ। मैं "मेरा और मेरा अवधारणा" को छोड़ देता हूँ। भगवान मैं अपने संसाधनों, किसी भी तरह के संसाधन की प्राथमिकता छोड़ देता हूँ।

3. सांसारिक मूल्य प्रणाली.

इस अवधारणा पर "मेरे मूल्य क्या हैं?" पाठ। "क्योंकि संसार की हर वस्तु - पापी मनुष्य की लालसा, आंखों की अभिलाषा, और जो कुछ उसके पास है और जो उसके पास है, उस पर घमण्ड करना - पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है।" (1 यूहन्ना 2:16) शक्ति, सुख, प्रतिष्ठा और संपत्ति, ऐसा नहीं है कि आपके पास इनमें से कुछ भी नहीं है; यह है कि आप अपना सारा ध्यान, अपना समय और अपनी भावनाओं

I want to tell you what, if my son walks up to me and says, "Dad, I want to commit my life to your purposes and goals, I want to be the son you want me to be." I would do everything, everything in my power to make his life as wonderful as it could possibly be. God, our Father, says, "I want to do the same." That's why Jesus said, "Seek ye first the kingdom of God and His righteousness, and I'll add all these things to you."

Look at Psalm 37:3, "Trust in the Lord and do good; dwell in the land and enjoy safe pasture. Delight yourself in the Lord and He will give you the desires of your heart. Commit your way to the Lord; trust in Him and He will do this:" That's the promise. I've got nothing to fear by committing my life to Christ. Life is going to be more wonderful than it could be otherwise.

Why we need to commit to Christ.

How do I respond with commitment to Christ? Obviously, if you're not a Christian, you need to put your trust in Christ and obey the gospel. Obviously, you need to recognize Jesus as who He is, the Son of God. You need to come to Him on your knees saying, "I believe that," confessing His name. You need to be immersed into the death of Christ being buried with Him, baptized into Christ, for the forgiveness of your sin. That is the means by which one accepts the grace that God has offered. But some of you have already done that. You've already obeyed the gospel. You have put on Christ having been buried with Him in baptism. Some of you assemble with a church regularly, but if the truth is known, you've yet to really commit your life to Christ. You've yet to really step on His power and grace saying, "I want His way more than my way."

What do you still need to do? The first thing you need to do is calculate. In Luke 14:25, Jesus is up front about commitment. He said if you're going to follow me, you'd better think about it. He said there's not a man who would build a tower without first taking inventory of his money and his materials. He would make sure he could finish. He's not going to get halfway up and quit. He said there's not a king who's not going to take care to count his own forces before he goes to war. If he's got 10,000,

को इसे हासिल करने की कोशिश में खर्च नहीं करते हैं। यदि मैं अपना जीवन मसीह को समर्पित करता हूँ, तो मैं इस बात का निरंतर पीछा करना छोड़ देता हूँ कि संसार क्या महत्वपूर्ण कहता है। अब यह बहुत बड़ी कीमत है, है ना?

जब आप अपनी व्यक्तिगत संप्रभुता को छोड़ देते हैं तो आपको एहसास होता है कि आप ब्रह्मांड के प्रबंधक नहीं हैं, आप अपने जीवन के प्रबंधक भी नहीं हैं। आप भगवान को निर्णय लेने देंगे। अपने संसाधनों की प्रधानता छोड़ दें, सांसारिक मूल्य व्यवस्था के पीछे भागना।

**जब आप मसीह के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होने का चुनाव करते हैं, तो आप क्या छोड़ते हैं?**

1. यह मेरे जीवन के सर्वोत्तम उपयोग के लिए परमेश्वर की योजना की कीमत चुकाता है।

अगर मैं तय करता हूँ कि मैं मसीह के लिए समर्पित नहीं होने जा रहा हूँ, लेकिन बस जीवन के माध्यम से बहता हूँ। मुझे इधर-उधर आनंद के छोटे-छोटे अंश मिलते हैं, लेकिन मैं कभी भी उस चीज़ का दोहन करने के करीब नहीं आता जो परमेश्वर कर सकता है और अपने जीवन के साथ क्या करना चाहता है क्योंकि यह केवल वास्तव में प्रभु के हाथ में हाथ डालकर चलने से आता है।

2. संतोष और आनंद

आप में से जो शायद वर्षों में उन्नत हैं जिन्होंने कभी भी प्रतिबद्धता नहीं बनाई है, वे इस बात की गवाही दे सकते हैं कि आपने लंबे समय तक एक खोखलापन महसूस किया है। वह खाली या खोखला अहसास संतुष्टि और आनंद की कमी है जिसे आपने छोड़ दिया।

3. अनन्त जीवन।

आपने स्वर्ग में एक इनाम छोड़ दिया, पूर्ण आनंद का अनंत काल जहाँ मैं फिर कभी चोट नहीं पहुँचाऊँगा, रोऊँगा या शोक मनाऊँगा। आप कभी भी प्रभु को यह कहते नहीं सुनेंगे, "शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक। अब प्रभु के आनंद में प्रवेश करो।"

एक बार जब आप वह प्रतिबद्धता बना लेते हैं, तो चार्ज करें! मेरा मतलब है चार्ज करना, समर्पित करना, इसके लिए जाना, और पीछे मत मुड़ना। "सो हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूँ, कि अपने शरीरोंको जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ - यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" (रोमियों 12:1)

जब एक पायलट मुड़ता है और हवाई अड्डे के रनवे के नीचे एक बड़ा 747 शुरू करता है, तो वह वापसी के बिंदु पर पहुँच जाता है। वह अधिक से अधिक गति प्राप्त कर रहा है, या तो वह हवा में उड़ने वाला है या दुर्घटना और आत्म-विनाश करने वाला है। मुझे डर है कि आप में से कुछ ऐसे हैं जिनके इंजन रेव कर रहे हैं। और भी बहुत सारे लोग हैं जो हवाई अड्डे पर भी नहीं हैं। कुछ को पता



he's not likely to go do battle against somebody with 20,000. He said, "If you're going to commit to me, you better think about it, you better calculate it." In every commitment, there are benefits to be had and prices to be paid. You decide whether you're committed based on whether you think the benefits outweigh the costs. That's it. In other words, is the cause worth the costs?

I want you to do a little experiment. Picture in your mind two ledgers. On one side in this ledger is the question: What is the cost to follow Jesus Christ, because there is a cost? On the other side of the ledger the question is: What does it cost not to really commit to Jesus Christ? By your response to these questions you are making a commitment.

When you commit to Christ, what do you give up?

#### The right to personal sovereignty.

I'm not going to pull any punches. Don't say "I'm committed to Christ" if you're not going to commit. In other words, it's no longer what do I want, but God, what do you want? It's not what I want to do, it's God, what do you want me to do?

See, amazingly, the God who created the universe gave each of us the ability to choose how much influence the Almighty God will have in our lives. He didn't have to do that. If He wanted to, He could have made every one of us puppets, robots or animals, birds or fish. But He made us with the ability to think, reason and choose. He gave you the ability, right, to decide. So if you commit to Jesus Christ, you're saying, "God, I'm turning that right back over to you." Look at what Paul said in Galatians 2:20, "I have been crucified with Christ and I no longer live, but Christ lives in me." There was a commitment, and He turned over personal sovereignty.

#### Personal priority of your resources.

Whew! That one stings! It's no longer what do I want to do with my time, it is, God what do you want me to do with your time? It's no longer what am I going to do with my money, but God what do you want me to do with your money? See, it's the concept of stewardship. When you commit to Jesus Christ, you're saying, "I

भी नहीं है कि एक विमान है। क्या आप में से कुछ जीवन के रनवे पर बैठे हैं, गति बढ़ा रहे हैं, थोड़ी गति बढ़ा रहे हैं, लेकिन हवा में उड़ने के लिए पर्याप्त गति नहीं है? आप मसीह के साथ अपने संबंध में कभी भी जमीन से नीचे नहीं उतरे हैं। आप उसके बारे में जानते हैं, लेकिन आप उसे जानने के लिए वास्तविक प्रतिबद्धता में कभी जमीन पर नहीं उतरे हैं।

आप में से कुछ लोग वर्षों से उस रनवे पर बैठे होंगे, अपने इंजनों को चालू कर रहे होंगे और कह रहे होंगे, "इन दिनों में से एक, इन दिनों में से एक, मैं प्रतिबद्ध होने जा रहा हूँ। इनमें से एक दिन मैं अपनी जान देने जा रहा हूँ।" भगवान के लिए। इन दिनों में से एक, मैं अपनी योजना को जीना बंद कर रहा हूँ और भगवान की योजना को जीना शुरू कर रहा हूँ।" मैं वास्तव में चिंता करता हूँ कि किसी दिन आप बड़े पछतावे के साथ यीशु मसीह के सामने खड़े होने जा रहे हैं कि मैंने ऐसा बेवकूफी भरा काम किया! मैंने अपना जीवन लगाया, मैंने अपना समय लगाया और मैंने अपनी प्रतिभा को गलत उद्देश्य के लिए निवेश किया। काश मैं इसे फिर से कर पाता। लेकिन बहुत देर हो चुकी होगी।

वह क्या है जो आपको अपनी प्रतिबद्धता से पीछे खींच रहा है? ऐसा क्या है जो आपको हवा में उड़ने के बजाय रनवे पर खड़ा कर रहा है? क्या यह डर है? डर है कि भगवान आपके साथ क्या करेगा? क्या यह निकट दृष्टिदोष है, क्या आप अभी भी अपने चारों ओर इन सभी चीजों को देख रहे हैं? क्या यह सिर्फ शुद्ध स्वार्थ है? क्या यह एक रिश्ता है? क्या है वह? क्या आपके जीवन में कभी ऐसा समय आया है जब आपने मसीह के प्रति अपनी प्रारंभिक प्रतिबद्धता की थी कि आपने बिना किसी हिचकिचाहट या आरक्षण के अपनी प्रतिभा, अपने समय, अपने खजाने या अपने जीवन की एक अनारक्षित प्रतिबद्धता की थी। आप देखते हैं कि असली मुद्दा यह है कि क्या आप अपने शेष जीवन में एक आकस्मिक, गुनगुने, ईसाई बने रहना चाहते हैं? आप आंशिक रूप से मसीह के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हो सकते। एक चीज जो ईसाई धर्म नहीं हो सकती वह मामूली रूप से महत्वपूर्ण है। आप छिप सकते हैं, आप अप्रतिबद्ध रह सकते हैं, और मूल रूप से, किसी को पता नहीं चलेगा - लेकिन भगवान जानता है। पाठ # 1299 - 2 फरवरी, 1997

अध्याय 5

## आध्यात्मिक-आधारित लक्ष्य निर्धारित करना

### मिशन वक्तव्य

एक अच्छा मिशन वक्तव्य कभी नहीं बदलता है। यह आपके जीवन, आपके व्यवसाय, आपकी इच्छाओं या जो भी हो, के लिए निरंतर कम्पास बिंदु है।

उस बिंदु के सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक 19वीं शताब्दी का है जब ज्यादातर लोग घोड़े और बग्गी से यात्रा करते थे। हेनरी फोर्ड

realize that God owns everything I have and He wants me just to manage it for just a little while for His glory. I give up "the my and mine concept." It's God. I give up priority of my resources, any kind of resource.

### 3. Worldly value system.

This concept was discussed in the "What are My Values?" lesson. "For everything of the world—the cravings of sinful man, the lust of the eyes and the boasting of what he has and does—comes not from the Father but from the world." (1 John 2:16) Power, pleasure, prestige and possessions, it's not that you never have any of those things; it's that you don't spend all of your attention, your time, and your emotions trying to acquire it. If I commit my life to Christ, I give up a relentless pursuit of what the world says is important. Now that's a pretty big price, isn't it?

When you give up your personal sovereignty you realize you're not the manager of the universe, you're not even the manager of your life. You're going to let God call the shots. Give up the priority of your resources, the chasing after the worldly value system.

When you choose NOT to commit to Christ, what do you give up?

It costs me God's plan for the best use of my life.

If I decide I'm not going to commit to Christ, but just drift through life. I'll get little snatches of pleasure here and there, but I never come close to tapping into what God can and wants to do with my life because that only comes from really walking hand in hand with the Lord.

### Satisfaction and joy

Those of you who are maybe advanced in years who have never made that commitment could testify you've felt a hollow feeling for a long time. That empty or hollow feeling is the lack of satisfaction and joy that you gave up.

बग्गी निर्माताओं के स्कोर और स्कोर में से एक था। जैसे-जैसे तकनीक गैसोलीन से चलने वाले इंजन और ऑटोमोबाइल के बारे में लाई, उनमें से अधिकांश बग्गी निर्माता व्यवसाय से बाहर हो गए क्योंकि उन्हें लगा कि उनका मिशन बग्गी बना रहा है। हेनरी फोर्ड ने लोगों को परिवहन के रूप में अपनी कंपनी के मिशन की पहचान की। देखें कि हमेशा इसकी आवश्यकता होगी, लोगों को बिंदु A से बिंदु B तक ले जाना। नतीजतन, आप बाकी की कहानी जानते हैं।

बहुत से लोग अपने जीवन के मिशन को अस्थायी चीजों के इर्द-गिर्द केंद्रित करते हैं। यदि आप करते हैं, तो आप असफलता के लिए अभिशप्त हैं। जीवन में आपका जो भी मिशन है, वह स्थायी होना चाहिए। जीवन एक यात्रा है, और चाहे आप 20, 30, 60 या 80 वर्ष के हों, आपका जीवन मिशन एक ही होना चाहिए। मैं आपसे उस एक को अपनाने के लिए विनती करूंगा जो यीशु ने किया था - "परमेश्वर को प्रसन्न करो।"

### दृष्टि

हालांकि किसी के जीवन का मिशन कभी नहीं बदलना चाहिए, व्यक्ति की दृष्टि बदलनी चाहिए। विज्ञ किसी भी बिंदु और समय पर आपके मिशन का इष्टतम कार्यान्वयन है। दृष्टि आपके जीवन की आदर्श तस्वीर है। यह वह तस्वीर है जिसे आप तीन से पांच साल की अवधि में अपनी इच्छित स्थिति का चित्र बनाते हैं।

आइए फोर्ड के साथ अपने उदाहरण पर वापस जाएं। 1880 में हेनरी फोर्ड ने कहा था कि मेरा मिशन लोगों को ट्रांसपोर्ट करना है। अगले पांच सालों में मैं इसे सबसे अच्छा कैसे करूंगा? खैर, 1880 में इसका जवाब था अच्छी बग्गी बनाना। 1900 में, उन्होंने वही सवाल पूछा, अगले पांच वर्षों में मैं अपने मिशन को सर्वोत्तम तरीके से कैसे लागू करूँ? उनका जवाब अब पहले जैसा नहीं रहा। उनकी दृष्टि बदल गई थी।

मेरे जीवन में, मेरा मिशन भगवान को खुश करना है। अब मैं इसे अगले पांच वर्षों में सर्वोत्तम तरीके से कैसे करूँ? मैं उस प्रश्न का जो उत्तर देता हूँ वह मेरा विज्ञ स्टेटमेंट है। दृष्टि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होगी। आपकी दृष्टि आपके उपहारों, आपके अनुभवों, आपकी पृष्ठभूमि और आपके अवसरों के आधार पर अलग-अलग होगी। आपकी दृष्टि आपके अपने जीवन में समय-समय पर बदलती रहेगी। मैं अगले पाँच वर्षों में परमेश्वर को सर्वोत्तम तरीके से कैसे प्रसन्न करूँ? काफी स्पष्ट रूप से, एक 20-वर्षीय शायद उस प्रश्न का उत्तर 60-वर्षीय की तुलना में अलग तरह से देगा। लेकिन अगर आप अधिकतम जीवन जीने जा रहे हैं तो आपको 1) एक संक्षिप्त मिशन वक्तव्य, लिखा और याद किया जाता है जो आपको हमेशा याद दिलाता है कि आप अपने जीवन के साथ क्या करना चाहते हैं और 2) आप कैसे योजना बनाते हैं इसकी एक लिखित तस्वीर के साथ एक दृष्टि बयान अगले तीन से पांच वर्षों में उस मिशन को पूरा करने के लिए।

अब क्योंकि हम मनुष्य दुनिया की सबसे जटिल रचनाएँ हैं, एक दृष्टि हमेशा तैयार करना आसान नहीं होता है। समग्र समग्र चित्र

## Eternal life.

**You gave up a reward in heaven, an eternity of absolute bliss where I'll never hurt, cry, or mourn again. You will never hear the Lord say "Well done, good and faithful servant. Enter now into the joys of the Lord."**

**Once you've make that commitment, then CHARGE! I mean charge, dedicate, go for it, and don't turn back. "Therefore, I urge you, brothers, in view of God's mercy, to offer your bodies as living sacrifices, holy and pleasing to God—this is your spiritual act of worship." (Romans 12:1)**

**When a pilot turns and starts a big 747 down the airport runway, he gets to a point of no return. He is getting more and more speed, either he's going to get airborne or crash and self-destruct. I'm afraid there are some of you who've got your engines revving. There are a lot of other people out there who aren't even at the airport. Some don't even know there's a plane. Are some of you sitting on life's runway, revving up, building up a little speed, but not enough speed to get airborne? You've never gotten off the ground in your relationship with Christ. You know about Him, but you've never gotten off the ground in real commitment to know Him.**

**Some of you may have been sitting on that runway for years, revving your engines and saying, "One of these days, one of these days, I'm going to get committed. One of these days I'm going to give my life to God. One of these days, I'm going to stop living out my plan and start living God's plan." I really worry that someday you're going to stand before Jesus Christ with major regrets saying I did such a stupid thing! I invested my life, I invested my time and I invested my talent for the wrong purpose. How I wish I could do it over again. But it will be too late.**

**What is it that's holding you back from your commitment? What is it that's keeping you on the runway, instead of being airborne? Is it fear? Afraid of what God will do with you? Is it nearsightedness, are you just still looking at all these things around you? Is it just pure selfishness? Is it a relationship? What is it?**

को देखना बहुत कठिन हो सकता है, एक व्यापक दृष्टि कथन लिखें कि हम किस प्रकार परमेश्वर को सर्वोत्तम रूप से प्रसन्न करते हैं और उन उपहारों का उपयोग करते हैं जो उसने हमें दिए हैं। शायद आपके जीवन के लिए एक विजन स्टेटमेंट बनाने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप जीवन को कुछ बुनियादी क्षेत्रों में तोड़ दें और प्रत्येक प्रमुख क्षेत्र के लिए विजन स्टेटमेंट का एक टुकड़ा तैयार करें।

ऐसा करने के कई तरीके हैं, लेकिन यहाँ एक तरीका है जो मुझे पसंद है जो बहुत अच्छा काम करता है। मैं लोगों को प्रोत्साहित करता हूँ कि वे अपने विजन स्टेटमेंट को चार पी कहते हैं।

### **जुनून - आप जीवन को कैसे देखते हैं।**

आप क्या करना पसंद करते हैं? भगवान ने आपको कैसे बनाया है? आप जीवन को किस तरह के दृष्टिकोण से देखेंगे? जब आप उन सवालों का जवाब देना शुरू करते हैं, तो आपने अपना विजन स्टेटमेंट शुरू कर दिया है।

### **उद्देश्य - आप जीवन में क्या हासिल करना चाहते हैं?**

आप अपने जीवन में क्या प्रभाव डालने की योजना बना रहे हैं? एक बार मरने और चले जाने के बाद आप कैसे याद किया जाना चाहते हैं? आप अपने तत्काल समुदाय के लिए क्या योगदान देना चाहते हैं? जीवन में आपका उद्देश्य क्या है?

**लोग** - जिन लोगों से आप प्यार करते हैं और आप उन्हें कैसे प्यार करने की योजना बनाते हैं।

तुम किससे प्यार करते हो? आपके सबसे गहरे रिश्ते क्या हैं, और आप उन्हें कैसे पोषित करने जा रहे हैं?

इसकी विडंबना यह है कि व्यवसाय हर समय विजन स्टेटमेंट करते हैं। तो आप में से बहुत सारे व्यवसायी और व्यवसायी हैं, लेकिन व्यवसाय में वे चाहते हैं कि आप अपने व्यवसाय के चारों ओर एक विजन स्टेटमेंट तैयार करें। तो आप उद्देश्य के बारे में सोचते हैं, और यदि आप अपने काम से प्यार करते हैं, तो आप जुनून के बारे में सोचते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आप क्या भूल जाते हैं? आप उन लोगों को भूल जाते हैं जो आपके लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। यहाँ आपके पास यह तस्वीर है और इस दृष्टि से आने वाले ये सभी लक्ष्य हैं और यही कारण है कि बहुत से व्यवसायिक लोगों का कोई परिवार नहीं होता है क्योंकि वे जीवन के इस महत्वपूर्ण तत्व के बारे में पूरी तरह से भूल जाते हैं।

### **तारीफ़ करना - आप भगवान की पूजा कैसे करेंगे?**

मेरा मतलब रविवार की सुबह एक घंटे की सभा से नहीं है। मेरा मतलब है कि शब्द के सच्चे बाइबिल अर्थ में पूजा जहाँ बाइबिल के अनुसार, हमारा पूरा जीवन भगवान की पूजा होना चाहिए, आध्यात्मिक रूप से बलिदान किया हुआ जीवन। जैसा कि आप अगले तीन से पांच वर्षों में अपने जीवन के लिए एक विजन स्टेटमेंट तैयार करते हैं, ये प्रश्न पूछें। "लंबे समय तक मैं दिन-ब-दिन उसके प्रति अपना प्रेम कैसे प्रदर्शित करूँगा? मैं ऐसा कैसे करने जा रहा हूँ?" क्या आपने कभी

**Has there ever been a time in your life since you made your initial commitment to Christ that you made an unreserved commitment of your talent, your time, your treasure or your life without hesitation or reservation. You see the real issue is do you want to be a casual, lukewarm, Christian the rest of your life? You can't be partially committed to Christ. The one thing Christianity cannot be is moderately important. You can hide, you can stay uncommitted, and basically, nobody will know—but God knows.** Lesson # 1299 - February 2, 1997

## Chapter 5

### Setting Spiritually-Based Goals

#### Mission Statement

**A good mission statement never changes. It is the constant compass point for your life, your business, your desires or whatever.**

**One of the best illustrations of that point goes back to the 19th century when most people traveled by horse and buggy. Henry Ford was one of scores and scores of buggy makers. As technology brought about the gasoline-powered engine and the automobile, most of those buggy makers went out of business because they thought their mission was making buggies. Henry Ford identified his company's mission as transporting people. See there will always be a need for that, taking people from point A to point B. Consequently, you know the rest of the story.**

**Too many people focus their life mission around temporary things. If you do, you're doomed to failure. Whatever your mission is in life, it must be permanent. Life is a journey, and whether you're 20, 30, 60 or 80 years old, your life mission should be the same. I would implore you to adopt the one that Jesus did – "Please God."**

#### Vision

**Although one's mission of life should never change, one's vision should change. Vision is the optimum implementation of your mission at any point and time. Vision is your ideal picture of your life. It is the picture**

उसके बारे में सोचा है?

अब यदि आप उन सवालों का जवाब देंगे और अपने जुनून, उद्देश्य, लोगों और प्रशंसा पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने जीवन की एक तस्वीर चित्रित करेंगे, तो आप अधिकतम जीवन की ओर एक लंबा रास्ता तय कर चुके हैं। यह आपका विजन स्टेटमेंट है। मेरी बात सुनिए, हमारी आबादी के एक प्रतिशत से भी कम लोगों के पास अपने जीवन के लिए एक विजन स्टेटमेंट लिखा हुआ है। लेकिन जो ऐसा करते हैं वे उन लोगों से प्रकाश वर्ष आगे हैं जो नहीं करते हैं। उनके पास अधिकतम जीवन के लिए उपकरण हैं क्योंकि वे वास्तव में जानते हैं कि वे कहाँ जाना चाहते हैं। वे ही हैं जो अपनी दृष्टि या जीवन के मिशन से विचलित नहीं होने वाले हैं।

उन चार पी को फिर से देखें; जब आप अपने जीवन के जुनून के लिए एक दृष्टि को आकार देते हैं, तो आपमें उत्साह होता है। यदि आप उस दृष्टि को आकार नहीं देते हैं, तो आप बोरियत महसूस करते हैं। यदि आप अपने जीवन के उद्देश्य के लिए एक दृष्टि को आकार देते हैं, तो आपको संतुष्टि मिलेगी; यदि आप नहीं करते हैं, तो आपको निराशा होगी। जब आप अपने जीवन में लोगों के लिए एक दृष्टि को आकार देते हैं, तो आपको प्यार होता है; जब आप नहीं होते हैं, तो आपको अकेलापन होता है। जब आप अपने जीवन में प्रशंसा के लिए एक दृष्टि को आकार देते हैं, तो आपके पास भाग्य होता है; लेकिन जब आप नहीं करते हैं, तो आप में निराशा होती है।

यीशु उत्कृष्ट उदाहरण है। उनका मिशन वास्तव में मेरे जैसा ही था, और मुझे उम्मीद है, तुम्हारा। यह भगवान को खुश करने के लिए था, याद है? उसने कहा, "मैं उसकी इच्छा पूरी करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है।" वह वास्तव में जानता था कि उसका मिशन क्या था, लेकिन इतना ही नहीं। वह जानता था कि वह कैसे उस मिशन को पूरा करना चाहता है। दूसरे शब्दों में, जब वह इस पृथ्वी पर था तब उसके पास स्पष्ट दृष्टि थी कि वह क्या करना चाहता है। कई बार, लोग उनके पास आते और कहते, "हे प्रभु, आओ, यह करो, वह करो या कुछ और करो।" यीशु कहेंगे, "मेरा समय अभी नहीं आया है। मुझे यह बताने की कोशिश न करें कि मुझे क्या करना चाहिए। मुझे ठीक-ठीक पता है कि मुझे क्या करना है।" केवल तीन साल की सेवकाई के बाद, जब वह केवल 33 वर्ष का था, उसने यूहन्ना 17:4 में पिता से कहा, "मैंने वह काम पूरा कर लिया है जो तूने मुझे करने को दिया था।" अगर हम यह सुनते हुए वहाँ खड़े होते, तो हम सोचते, समाप्त हो गया? भगवान, आपने अभी शुरुआत ही नहीं की है। कभी घर से सौ मील से अधिक की यात्रा नहीं की। आपने अभी शुरुआत भी नहीं की है। लेकिन उनका मिशन और उनकी दृष्टि उनके दिमाग में स्पष्ट थी। वे अन्य लोगों द्वारा निर्धारित नहीं किए गए थे। आपका भी नहीं होना चाहिए।

#### शिल्प लक्ष्य

1. लक्ष्य आपकी दृष्टि प्रकट करते हैं।

अपने जीवन के विजन स्टेटमेंट से, आप लक्ष्य बनाना शुरू

**you paint of your desired state of affairs over a period of time, three to five years.**

**Let's go back to our example with Ford. In 1880, Henry Ford said my mission is transporting people. How will I best do that in the next five years? Well, the answer in 1880 was to build good buggies. In 1900, he asked that same question, how do I best implement my mission over the next five years? His answer was no longer the same. His vision had changed.**

**In my life, my mission is to please God. Now how do I best do that over the next five years? The answer I give to that question is my vision statement. The vision will vary from person to person. Your vision will vary based upon your gifts, your experiences, your background and your opportunities. Your vision will vary in your own life from time to time. How do I best please God over the next five years? Quite frankly, a 20-year-old will probably answer that question differently than a 60-year-old. But if you're going to live the maximum life you need 1) a concise mission statement, written down and memorized always reminding you of what you want to do with your life and 2) a vision statement with a written picture of how you plan to be fulfilling that mission over the next three to five years.**

**Now because we human beings are the most complex creations in the world, a vision is not always easy to craft. It could be pretty hard to look at a total composite picture, write out a comprehensive vision statement of how we best please God and use the gifts that He has given to us. Perhaps the best way to create a vision statement for your life is to break life down into some basic areas and craft a piece of the vision statement for each major area.**

**There are a number of ways to do that, but here's one way that I like that appears to work very well. I encourage people to construct their vision statement around what I call the four P's.**

**Passion - how you approach life.**

**What do you love to do? How has God made you? With what kind of attitude will you approach life? When you begin to answer those questions, you've started your vision statement.**

**Purpose - what do you want to accomplish in life?**

**What impact do you plan to make in your life? How do**

करते हैं। लक्ष्य केवल आपकी दृष्टि को पूरा करने के लिए विश्वास का कथन है। आप जहां जाना चाहते हैं, वहां पहुंचने के लिए आपको ये कदम उठाने होंगे। लक्ष्य आपको अपनी दृष्टि तक ले जाते हैं और ऐसा करने से आपको अपने जीवन के मिशन को पूरा करने में मदद मिलती है। मुझे पता है कि आप में से अधिकांश लक्ष्य निर्धारित करने के आदी नहीं हैं और आप में से कुछ के पास इसके खिलाफ धर्मशास्त्रीय अनुनय भी हो सकते हैं।

मैं अपने पूरे दिल से मानता हूं कि भगवान चाहते हैं कि हम सभी लक्ष्य निर्धारित करें। आप में से कुछ कहते हैं, "क्या यह पूर्वधारणा नहीं है। क्या यीशु ने पहाड़ी उपदेश में नहीं सिखाया, 'कल के बारे में मत सोचो'? क्या जेम्स ने यह नहीं कहा कि हमें यह नहीं कहना चाहिए, "हम जा रहे हैं यह या वह करने के लिए, लेकिन केवल अगर भगवान ने चाहा?" हां, तो आइए हम उन छंदों की जांच करें। छंद, "कल के बारे में मत सोचो।" किंग जेम्स संस्करण और नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण, "कल के बारे में चिंता मत करो।" यीशु योजना बनाने के बारे में बात नहीं कर रहा है। वह परेशान होने या अत्यधिक चिंतित होने के बारे में बात कर रहा है। वह एक असुरक्षित आत्मा के बारे में बात कर रहा है जो चारों ओर बैठती है और कहती है, "अरे नहीं, दुनिया में मेरे साथ क्या होने वाला है?" सच कहूं, अगर हमने और योजना बनाई,

याकूब की शिक्षा "यदि प्रभु चाहे," हमें लक्ष्य निर्धारित न करने के लिए नहीं कह रही है। बल्कि, यह हमें याद दिलाने के लिए है कि जिस भी दृष्टि और लक्ष्य के लिए हम प्रयास करते हैं, उसे उसकी सफलता के लिए परमेश्वर के ज्ञान की तलाश करनी चाहिए; अन्यथा असफलता उसकी सर्वोच्च शक्ति के अधीन होगी। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से, स्पष्ट रूप से, दृष्टि और लक्ष्यों की आवश्यकता को इंगित करता है। "बिना दृष्टि के लोग नाश हो जाते हैं।" (नीतिवचन 29:18) "समझदार मनुष्य बुद्धि की दृष्टि में रहता है, परन्तु मूर्ख की आंखें पृथ्वी की छोर तक भटकती रहती हैं।" (नीतिवचन 17:24) क्या आप देखते हैं कि वह क्या कहता है? इसका मतलब है कि जब आप योजना बनाने में विफल होते हैं तो आप अलग-अलग दिशाओं में चले जाते हैं। आपके पास जीवन में एक गेम प्लान होना चाहिए। अन्यथा, आप बस एक संकट से दूसरे संकट पर प्रतिक्रिया करने जा रहे हैं। आप एक समस्या से दूसरी समस्या पर उड़ाए जा रहे हैं। बिना दृष्टि और बिना लक्ष्य के, आप '

यीशु ने उचित योजना की सराहना की। लूका 14 में जब यीशु शिष्यों को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहा था कि वे "होंगे" तो वे जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं - उन्होंने कहा, आपको कीमत गिननी होगी, आपको आगे सोचना होगा। पद 28 में, उसने कहा, उदाहरण के लिए, कौन सा आदमी पहले अपने पैसे की गिनती किए बिना और आपूर्ति की अपनी सूची को देखे बिना एक टावर का निर्माण करेगा? वह यह जाने बिना कि वह पूरा कर सकता है, उस मीनार को बनाने की कोशिश नहीं करेगा। या पद 31

**you want to be remembered once you're dead and gone? What contribution do you want to make to your immediate community? What is your purpose in life?**

**People - people whom you love and how you plan to love them.**

**Whom do you love? What are your deepest relationships, and how are you going to nurture those?**

**The irony of it is that businesses do vision statements all the time. So a lot of you are businessmen and businesswomen, but at business all they want you to do is craft a vision statement around your business. So you think about purpose, and if you love your work, you think about passion. But do you know what you tend to forget? You tend to forget the people who mean the most to you. Here you've got this picture and all these goals coming from this vision and that's why many business people end up having no family because they totally forgot about this critical element of life.**

**Praise - how will you worship God?**

**I don't mean a one-hour assembly on Sunday morning. I mean worship in the truest biblical sense of the word where biblically, our entire lives should be a worship to God, a spiritually sacrificed life. As you craft a vision statement for your life over the next three to five years, ask these questions. "How will I demonstrate my love to Him, day in and day out over the long haul? How am I going to do that?" Have you ever thought about that?**

**Now if you will answer those questions and paint a picture of your life, focusing on your passion, purpose, people and praise, you're a long way down the road toward the maximum life. That's your vision statement. Hear me, less than one percent of our population has a vision statement written out for their lives. But those who do are light years ahead of the ones who don't. They've got the tools for the maximum life because they really do know where they want to go. They're the ones who are not going to get distracted from their vision or life's mission.**

**Look at those four P's again; when you shape a vision for the passion of your life, you have excitement. If you don't shape that vision, you have boredom. If you shape a vision for the purpose of your life, you'll have satisfaction; if you don't, you'll have frustration. When you shape a vision for the people in your life, you have love; when you don't, you have loneliness. When you**

में, उसने कहा, एक राजा युद्ध में तब तक नहीं जाएगा जब तक कि वह यह नहीं जानता कि उसके पास काम करने के लिए पर्याप्त सैनिक हैं। सुगठित लक्ष्य हमें एक दृष्टि प्राप्त करने में मदद करते हैं। वे अच्छे हैं, वे आवश्यक हैं।

2. अच्छे लक्ष्यों के लिए मानदंड

एक। उपयुक्त

वे आपके जीवन मिशन और दृष्टि के लिए प्रासंगिक हैं। आप केवल एक स्पर्शरेखा पर लक्ष्य निर्धारित नहीं करते हैं; आप इस तस्वीर को देखते हैं कि आप कैसे चाहते हैं कि आपका जीवन अब से तीन से पांच साल बाद हो और उन लक्ष्यों को बनाना शुरू करें जो आपको वहां पहुंचाएंगे।

बी। विशिष्ट

एक अच्छी तरह से बनाया गया लक्ष्य एक ऐसा लक्ष्य होता है जिसे आप बता सकते हैं कि आपने हिट किया है या नहीं। वे सामान्य या व्यापक नहीं हैं। वे बहुत विशिष्ट हैं।

सी। औसत दर्जे का

वे जानें/आप जानते हैं कि आप प्रगति कर रहे हैं। अब मैं आपको उन अंतिम दो, विशिष्ट और औसत दर्जे का उदाहरण देता हूँ। बहुत से लोग नए साल का संकल्प लेंगे और इसे एक लक्ष्य कहेंगे। वे कहेंगे, "मेरा लक्ष्य एक बेहतर पिता बनना है।" यह कोई लक्ष्य नहीं है, यह एक इच्छा है। आप कैसे जानेंगे कि आप एक बेहतर पिता हैं? यह मात्रात्मक नहीं है इसलिए इसे किसी भी मानक पर नहीं मापा जा सकता है। यह कोई लक्ष्य नहीं है, यह एक इच्छा है। इसे विशेष रूप से तोड़ दें जैसे, "मैं हर बच्चे को दिन में तीन बार गले लगाने जा रहा हूँ।" अब एक लक्ष्य है। "मैं अपने प्रत्येक बच्चे को रात में बिस्तर पर सुलाने जा रहा हूँ।" एक लक्ष्य है। "मैं हर दिन कम से कम 15 मिनट प्रत्येक बच्चे के साथ निर्बाध बातचीत करने जा रहा हूँ। एक लक्ष्य है। मैं हर दिन अपने बच्चों के साथ प्रार्थना करने जा रहा हूँ।" एक लक्ष्य है। ये चीजें आपको एक बेहतर पिता बनाएंगी। आप जान सकते हैं कि आपने उन चीजों को किया है या नहीं, वे मापने योग्य हैं।

डी। खींचे

मुझ पर एक एहसान करना। अपना दांया हाथ उठाओ। इससे पहले कि आप इसे नीचे रखें, क्या आप इसे इससे ऊपर उठा सकते हैं? क्या आप इससे भी ऊपर जा सकते हैं? क्या आप उस छोटे से दृष्टान्त का अर्थ देखते हैं? आप कभी भी उतनी ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकते जितना आप पहुँच सकते हैं।

इ। लचीला।

वे लचीले हैं ताकि यदि आप अपनी दृष्टि की खोज में एक लक्ष्य तक पहुँचते हैं, तो आप अगला लक्ष्य निर्धारित करते हैं। यदि आप कम पड़ जाते हैं और आप असफल नहीं हुए हैं, तो आप अपनी दृष्टि के करीब चले गए हैं। तो आप लगातार अपने लक्ष्यों को समायोजित कर रहे हैं, उस तस्वीर पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो आपके जीवन में

shape a vision for the praise in your life, you have destiny; but when you don't, you have hopelessness.

Jesus is the classic example. His mission was really the same as mine, and I hope, yours. It was to please God, remember? He said, "I've come to do the will of Him who sent me." He knew exactly what His mission was, but not only that. He knew how He wanted to fulfill that mission. In other words, He had a clear vision of what He wanted to do while He was on the face of this earth. Several times, people would come to Him and say, "Lord, come, do this, do that or do something else." Jesus would say "My hour is not yet come. Don't try to tell me what I need to do. I know exactly what I need to do." After only a three-year ministry, when He was only 33 years old, He said to the Father in John 17:4, "I have finished the work you have given me to do." If we had been standing there hearing that, we would have thought, finished? Lord, you've not even got started. You're only 33 years old. You've only been at it three years. You've never traveled more than a hundred miles from home. You've not even begun. But His mission and His vision were clear in His mind. They were not set by other people. Yours shouldn't be either.

## Craft Goals

### 1. Goals reveal your vision.

From the vision statement of your life, you begin to craft goals. Goals simply are the statement of faith to accomplish your vision. They are the steps you must take to get to where you want to go. Goals take you to your vision and in so doing they help you accomplish your life mission. I know most of you are not accustomed to setting goals and some of you may even have a theological persuasion against them.

I believe with all my heart that God wants all of us to set goals. Some of you say, "isn't that rather presumptive. Didn't Jesus teach in the Sermon on the Mount, 'take no thought for tomorrow'? Didn't James say that we shouldn't say, 'We're going to do this or that, but only if the Lord wills?'" Yes, so let us examine those verses. The verse, "Take no thought about tomorrow." (KJV) Matthew 6:34 is best rendered as it is in the New King James Version and the New International Version, "Don't worry about tomorrow." Jesus isn't talking about planning. He's talking about fretting or being overly concerned. He's talking about an insecure spirit that sits around and says, "Oh no, what in the world is

तीन से पांच साल का है।

## बाइबिल मॉडल

हम आपको एक ऐसा मॉडल दिखा कर इस पाठ को समाप्त करेंगे जो वास्तव में इनमें से प्रत्येक को और इससे भी अधिक को संपुटित करता है। इब्राहीम अपने बेटे इसहाक के लिए एक पत्नी ढूँढना चाहता है। वह ऐसा करने के लिए अपने सेवक एलीआजर को बाहर भेजता है। (उत्पत्ति 24)

एक। अब्राहम का एक मिशन था। वह एक अजीब देश में एक खानाबदोश के रूप में यात्रा कर रहा था। क्या आपको वह कारण याद है? परमेश्वर उसके पास आया था और कहा था, "इब्राहीम, मैं तुझे और तेरे वंश को एक महान राष्ट्र बनाने जा रहा हूँ; परन्तु पहले, मैं चाहता हूँ कि तू अपना सब कुछ समेट ले और चल फिर।" इब्राहीम ने किया, है ना? क्या आप जानते हैं कि अब्राहम के जीवन का मिशन क्या था? मेरा भी वही है— परमेश्वर को प्रसन्न करना। भगवान ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ कुछ करने जा रहा हूँ, मैं इसे यहाँ नहीं करना चाहता। उठाओ और आगे बढ़ो।" इब्राहीम ने कहा, हे परमेश्वर, जो कुछ तू कहता है, इसलिये कि मैं तुझे प्रसन्न करने के लिये जीवित हूँ। यही उनका मिशन है—कभी नहीं बदलता।

बी। अब्राहम के पास एक दर्शन था। दृष्टि ने उनके मिशन को पूरा किया। "अब्राहम अब बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया था, और यहोवा ने उसको सब प्रकार से आशीष दी थी। उस ने अपने घराने के मुख्य दास से, जो उसके पास सब कुछ का अधिकारी था, कहा, मैं चाहता हूँ, कि तू यहोवा की शपथ खा। हे स्वर्ग के परमेश्वर और पृथ्वी के परमेश्वर, कि तू मेरे पुत्र के लिथे कनानियोंकी लड़कियोंमें से, जिनके बीच मैं रहता हूँ, कोई स्त्री न पाएगा, परन्तु अपने देश और अपने कुटुम्बियोंमें जाकर मेरे लिथे एक स्त्री ले आएगा। बेटा इसहाक।" (उत्पत्ति 24:1-4)

क्या आप दृष्टि देखते हैं? इब्राहीम उसके लिए परमेश्वर के उद्देश्य को जानता था। वह एक महान राष्ट्र का पितामह बनने जा रहा था। परन्तु अब ऐसा होने के लिए, उसका एक पुत्र, इसहाक था, और उस लड़के को विवाह करने की आवश्यकता थी, ताकि उसके बच्चे हो सकें और अंततः वह महान राष्ट्र अस्तित्व में आ सके। तो यहाँ अब्राहम है, अपने मिशन के अनुरूप, और उसके पास एक दर्शन है। वह इसहाक को ऐसी पत्नी दिलाने की योजना बना सकता है जो परमेश्वर की योजना के अनुरूप हो।

सी। अब्राहम ने लक्ष्यों की एक श्रृंखला स्थापित की। उसने अपने नौकर को अपने देश की एक लड़की को खोजने के लिए भेजा। उन्होंने कहा, मैं चाहता हूँ कि वह लड़की मेरे रिश्तेदारों में से एक हो। मैं चाहता हूँ कि वह मेरे विश्वास की हो न कि इन बुतपरस्त कनानी स्त्रियों में से एक। वह इच्छुक और कुंवारी होनी चाहिए। क्या आप लक्ष्यों की इन सभी श्रृंखलाओं को देखते हैं जो इब्राहीम के पास इसहाक की पत्नी के लिए

going to happen to me?" Frankly, if we did more planning, vision shaping and goal setting, we would worry less about tomorrow.

The teaching of James "If the Lord will," is not to tell us not to set goals. Rather, it is to remind us that any vision and goals we strive for should seek God's wisdom for its success; otherwise failure will be under His sovereign power. Scripture clearly, CLEARLY, points out the need for vision and goals. "For without vision, the people perish." (Proverbs 29:18) "A discerning man keeps wisdom in view, but a fool's eyes wander to the ends of the earth." (Proverbs 17:24) Do you see what that says? That says when you fail to plan you just go off in a bunch of different directions. You've got to have a game plan in life. Otherwise, you're just going to react from one crisis to another. You're going to be blown from one problem to another. Without vision and without goals, you're not controlling your life, you're life is going to be controlling you.

Jesus commended proper planning. In Luke 14 when Jesus was trying to encourage "would be" disciples to make sure they knew what they were getting into—He said, you've got to count the cost, you've got to think ahead. In verse 28, He said, what man for example would build a tower without first counting up his money and looking at his inventory of supplies? He wouldn't try to build that tower without knowing he could finish. Or in verse 31, he said, a king won't go to war in a battle unless he knows he's got enough troops to do the job. Well-formed goals help us achieve a vision. They're good, they're necessary.

## 2. Criteria for good goals

### a. Relevant

They're relevant to your life mission and vision. You don't just set goals on a tangent; you look at the picture of how you want your life to be three to five years from now and begin to structure the goals that will get you there.

### b. Specific

A well-formed goal is a target that you can tell whether you've hit or not. They're not generic or broad. They're very specific.

### c. Measurable

थे?

अब यहाँ एक उत्कृष्ट उदाहरण दिया गया है कि जब आप अपनी दृष्टि और लक्ष्यों को आकार दे रहे हों तो क्या न करें। "सेवक (एलीआजर) ने उस से पूछा, 'क्या होगा यदि स्त्री मेरे साथ इस देश में लौटने को तैयार न हो? तो क्या मैं तेरे पुत्र को उस देश में वापस ले जाऊँ जहाँ से तू आया है?' उसने अब्राहम के दर्शन और लक्ष्य को समझ लिया है, लेकिन वह तुरंत ही संभावित समस्याओं पर कूद पड़ा। वह कहने से पहले शुरू भी नहीं करता है, "एक मिनट रुको, अगर वह वापस नहीं आती तो क्या होता है?"

समस्या-समाधान चरण के साथ लक्ष्य-निर्धारण चरण को भ्रमित न करें। उन दोनों को कभी मत मिलाइए। बहुत से लोग एक दृष्टि को नहीं लिखते हैं क्योंकि जब वे इसे लिख रहे होते हैं तो वे आने वाली सभी समस्याओं के बारे में सोचना शुरू कर देते हैं। वे सभी बाधाओं के बारे में सोचते हैं। मेरे पास पर्याप्त पैसा नहीं है। मेरे पास पर्याप्त समय नहीं है। मैं काफी समझदार नहीं हूँ। वे खुद इससे बाहर बात करते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप अपने जीवन के साथ असफल होने जा रहे हैं।

डी। निरंतर प्रार्थना करो। जैसे ही वह उस स्थान पर पहुँचता है जहाँ वह उस पत्नी को ढूँढ़ना चाहता है, एलीआजर झुक जाता है और वह प्रार्थना करता है। (उत्पत्ति 24:12) जब वह प्रार्थना कर रहा होता है, तो होनेवाली पत्नी रिबका उसके पास आती है। (बनाम 15) फिर वह उसके सामने प्रार्थना करता है परिवार। (बनाम 52)

जब आप अपने लक्ष्यों के लिए प्रार्थना करते हैं तो यह दो काम करता है। ए) यह आपकी इच्छा को प्रकट करता है और बी) यह आपकी निर्भरता का परीक्षण करता है। यदि मैं अपने जीवन में लक्ष्यों के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ, तो मैं परमेश्वर से कह रहा हूँ, "परमेश्वर, मुझे इसमें आपकी सहायता की आवश्यकता नहीं है।" मुझे नहीं पता कि आपने कभी इसके बारे में सोचा है या नहीं, लेकिन जिस चीज के बारे में आप प्रार्थना नहीं करते हैं, आप भगवान से कह रहे हैं, मुझे इसके लिए आपकी जरूरत नहीं है। आपकी प्रार्थनाएँ परमेश्वर पर आपकी निर्भरता का संकेत देती हैं। आपकी अधिकांश प्रार्थना सूची उन लक्ष्यों पर होनी चाहिए जो आपको आपकी दृष्टि की ओर ले जाते हैं जो आपके मिशन को पूरा करते हैं। बस इतना ही नहीं है। आपको अन्य चीजों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, लेकिन आपकी दैनिक प्रार्थना का एक बड़ा हिस्सा उन लक्ष्यों के बारे में होना चाहिए जिन्हें आपने अपने जीवन के लिए लिखा है कि यह क्या हो सकता है।

"फिर उसने (एलीआजर) ने प्रार्थना की, '0 भगवान, मेरे स्वामी अब्राहम के भगवान, आज मुझे सफलता दें।' मेरे जीवन में एक समय था जब मैंने सोचा था कि आप सफलता के लिए प्रार्थना नहीं कर सकते क्योंकि यह सिर्फ स्वार्थी होगा। लेकिन,



They let you know if you're making progress. Now let me give you an example of those last two, specific and measurable. A lot of people will make a New Year's type resolution and call it a goal. They'll say, "My goal is to be a better father." That's not a goal, that's a wish. How do you know if you're a better father? That's not quantifiable so it cannot be measured to any standard. That's not a goal, that's a wish. Break it down into specifics like, "I'm going to hug every child three times a day." Now there's a goal. "I'm going to tuck each of my children in bed at night." There's a goal. "I'm going to spend uninterrupted interaction with each child at least 15 minutes a day. There's a goal. "I'm going to pray with my children every day." There's a goal. Those things will make you a better father. You can know if you've done those things or not, they are measurable.

#### d. Stretchable

Do me a favor. Raise your right hand. Before you put it down, can you raise it higher than that? Can you go even higher than that? Do you see the point of that little illustration? You never reach as high as you possibly can.

#### e. Flexible

They're flexible so that if you reach a goal in your quest of your vision, you set the next one. If you fall short and you have not failed, you've moved closer to your vision. So you're constantly adjusting your goals, focusing on that picture that is three to five years out in your life.

#### Biblical Model

We will close this lesson by showing you a model that really capsulates every one of these and even more. Abraham wants to find a wife for his son, Isaac. He sends his servant Eleazar out to do that. (Genesis 24)

a. Abraham had a mission. He was in a strange country traveling as a nomad for one reason. Do you remember that reason? God had come to Him and said, "Abraham, I'm going to make of you and your descendants a great nation; but first, I want you to pack up everything you have and move." Abraham did, didn't he? Do you know what Abraham's mission was in life? The same thing mine is—to please God. God said, "I'm going to do something with you, I don't want

अगर आपका मिशन सही है और लक्ष्य पर है, तो आपको सफलता के लिए प्रार्थना करने की पूरी जरूरत है।

इ। चरण-दर-चरण योजना विकसित करें। हम इसे नहीं पढ़ेंगे, लेकिन पद 10 से 14 में, एलीआजर ने एक महान योजना विकसित की। देखें कि एक बार जब आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं, तो आपको थोड़ा समय लेना होगा और यह पता लगाना होगा कि हम उन लक्ष्यों को कैसे प्राप्त करने जा रहे हैं? एक-एक करके सब ठीक हो गया।

एफ। लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए खुद को अनुशासित करें। बिना अनुशासन के कभी कुछ भी पूरा नहीं होता। क्या आप जानते हैं कि अनुशासन क्या है? अनुशासन दर्द नहीं है। अनुशासन केवल विलंबित संतुष्टि है। सड़क पर कुछ बेहतर पाने के लिए अब आप कुछ अच्छा छोड़ देते हैं। एक एथलीट जो प्रशिक्षण के अनुशासन से गुजरता है, वह उस आराम को छोड़ रहा है जो उसे उन अभ्यास सत्रों के दौरान होता है क्योंकि उसका मानना है कि प्रतिस्पर्धा की खुशी और संभवतः सड़क पर जीतने की खुशी वह है जो वह अब छोड़ रहा है।

एलियाजर ने अनुशासित किया

#### a) उसका फैसला.

उसने रिबका नाम की उस स्त्री को ध्यान से देखा। यह तय करने से पहले कि वह वही है, उसने बारीकी से देखा।

#### b) उसकी भूख

जब वह उसके भाई के सामने आया और उसका भाई पहले खाना चाहता था। लाबान ने कहा, "यहाँ बैठकर खाओ, तब हम बातें करेंगे।" एलीआजर ने कहा, "नहीं, मैं कुछ भी खाने नहीं जा रहा हूँ। मैं बात करना चाहता हूँ क्योंकि मैं यहाँ एक मिशन के लिए आया हूँ।

#### c) उसके शब्दों

उसने सावधानी से उन शब्दों को चुना जो उसने लाबान को संबोधित किए थे, वह व्यक्ति जो निर्णय करेगा

#### d) उसका वक्त.

"मुझे मत रोको, मेरे स्वामी मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं, मुझे घर वापस जाने दो।" यदि आप अपने जीवन में किसी लक्ष्य तक पहुँचने जा रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि आप अपने समय को अनुशासित करना सीखें। आपका समय आपका जीवन है। यदि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, तो आप आत्महत्या कर रहे हैं।

लिखें कि आज से तीन से पांच साल बाद आप अपने जीवन को कैसे देखते हैं। वह आपकी दृष्टि है। चार पी का प्रयोग करें - जुनून, उद्देश्य, लोग और प्रशंसा। फिर उन लक्ष्यों को तैयार करें जो आपको उस दृष्टि तक पहुंचने में लगेगे।

आप में से कुछ लोग उन समस्याओं पर कूदना चाहेंगे जो आप

to do it here. Pick up and move." Abraham said, "God, whatever you say because I live to please you." That's his mission—never changes.

**b. Abraham had a vision.** The vision complemented his mission. "Abraham was now old and well advanced in years, and the Lord had blessed him in every way. He said to the chief servant in his household, the one in charge of all that he had, "I want you to swear by the Lord, the God of heaven and the God of earth, that you will not get a wife for my son from the daughters of the Canaanites, among whom I am living, but will go to my country and my own relatives and get a wife for my son Isaac." (Genesis 24:1-4)

Do you see the vision? Abraham knew God's purpose for him. He was going to be the patriarch of a great nation. But now for that to happen, he had one son, Isaac, and that boy needed to get married, so that he could have children and eventually that great nation could come about. So here's Abraham, in tune with his mission, and he has a vision. He can shape a plan to get Isaac a wife that will go along with God's plan.

**c. Abraham established a series of goals.** He sent his servant to go find a girl from his home country. He said, I want that girl to be one of my relatives. I want her to be of my faith not one of these pagan Canaanite women. She must be willing and a virgin. Do you see all these series of goals that Abraham had for Isaac's wife?

Now here is a classic illustration of what not to do when you're shaping your vision and goals. "The servant (Eleazar) asked him, 'What if the woman is unwilling to come back with me to this land? Shall I then take your son back to the country you came from?'" Do you know what Eleazar did? He's understood Abraham's vision and the goal, but he immediately jumped to the potential problems. He doesn't even get started before he says, "Wait a minute, what happens if she doesn't come back?"

Never confuse the goal-setting stage with the problem-solving stage. Don't ever mix those two. Many people don't write down a vision because while they're writing it down they begin thinking about all the problems that may come up. They think of all the hurdles. I don't have enough money. I don't have enough time. I'm not smart enough. They talk themselves out of it. If you do that, you're going to fail with your life.

जानते हैं कि वे पहले से ही आपके सामने हैं। ऐसा मत करो। अपने मिशन के साथ रहें, अपनी दृष्टि को आकार दें और अपने लक्ष्यों को तैयार करें। जब आप अपने जीवन के लिए उन लक्ष्यों पर कार्य करते हैं, तो परमेश्वर आप पर कार्य कर रहा होता है। वह आपको बेहतर के लिए बदल रहा है।

आपका जीवन कहाँ जा रहा है? क्या आपका जीवन भी सही दिशा में चल रहा है? क्या यह स्वर्ग की ओर जा रहा है? क्या यह उस सड़क पर है जो यीशु मसीह के लहू से पक्की है? उसके सिवा पिता के पास जाने का और कोई मार्ग नहीं है। क्या आप विचलित हो गए हैं और सड़क पर वापस आने के लिए मुड़ने की जरूरत है? यदि आप मसीह में नहीं हैं, एक ईसाई, आप वास्तव में उस ओर नहीं जा रहे हैं जहाँ आप जाना चाहते हैं। आज का दिन यीशु में अपना विश्वास और विश्वास रखने का है, यीशु के नाम को कबूल करने का, पाप के लिए मरने का और पानी में डुबकी लगाकर उसके लहू में गाड़े जाने का और अपने पापों को क्षमा करने के लिए उसे पुकारने का दिन है। पाठ # 1300 फरवरी 16, 1997

अध्याय 6

## मेरा समय व्यवस्थित करना

आप अपने जीवन के साथ क्या करने की कोशिश कर रहे हैं? आपका मिशन, आपकी दृष्टि क्या है? उस मिशन को पूरा करने के लिए आप अपने जीवन को कैसा देखना चाहते हैं? आपको लक्ष्य निर्धारित करने हैं। लक्ष्य वे कदम हैं जो आपको मिशन की सिद्धि में दृष्टि की ओर ले जाने वाले हैं और वे विशिष्ट और औसत दर्जे के होने चाहिए।

यह पाठ मुख्य रूप से उन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अपने दैनिक जीवन को व्यवस्थित करने के बारे में है। आप अपना समय कैसे प्रबंधित करते हैं? समय आपकी सबसे कीमती संपत्ति है। वास्तव में, आपका समय ही आपका जीवन है। तो स्पष्ट रूप से यदि आप अधिकतम जीवन जीने जा रहे हैं, तो आपको अपने समय का अधिकतम उपयोग करना होगा।

"बहुत सावधान रहो, तब तुम कैसे रहते हो - नासमझों के समान नहीं परन्तु बुद्धिमानों के समान... हर अवसर का पूरा लाभ उठाना..." (इफिसियों 5:15) क्या आप समझ रहे हैं कि पौलुस क्या कह रहा है? "हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं क्योंकि समय कीमती है।" समय आपके पैसे से कहीं अधिक मूल्यवान है क्योंकि, आपके पैसे के विपरीत, आप अपना समय नहीं बचा सकते। आप इसे उधार नहीं ले सकते हैं, इसे खरीद सकते हैं या इसका निर्माण कर सकते हैं। आप बस इतना कर सकते हैं कि इसका इस्तेमाल करें। यदि आप इसका उपयोग नहीं करते हैं, तो यह चला गया है। यदि आप अपने समय का प्रबंधन करना नहीं सीखते हैं, तो आपके जीवन में और कुछ भी प्रबंधित नहीं होगा। यह इतना महत्वपूर्ण है।

**d. Pray constantly.** As soon as he gets to the place where he wants to find that wife, Eleazar bows down and he prays. (Genesis 24:12) While he is praying, Rebekah, the wife to be, walks up to him. (vs. 15) He then prays in front of the family. (vs. 52)

When you pray about your goals it does two things. a) it reveals your desire and b) it tests your dependence. If I'm not praying about goals in my life, I'm saying to God, "God, I don't need your help with this." I don't know if you've ever thought about it, but anything you don't pray about, you're telling God, I don't need you for this. Your prayers indicate your dependence upon God. Much of your prayer list should be on the goals that lead you to your vision that fulfill your mission. That's not all of it. You should pray for other things, but a big chunk of your daily prayer should be about the goals that you have written down for your life to be what it can be.

"Then he (Eleazar) prayed, 'O Lord, God of my master Abraham, give me success today.'" There was a time in my life when I thought you couldn't pray for success because that would just be selfish. But, if your mission is right and on target, you have every need to pray for success.

**e. Develop a step-by-step plan.** We won't read it, but in verses 10 through 14, Eleazar developed a great plan. See once you have your goals, you've got to take a little while and figure out now how are we going to get those goals done? One by one, it all worked out.

**f. Discipline yourself to reach the goals.** Nothing is ever accomplished without discipline. Do you know what discipline is? Discipline is not pain. Discipline is just delayed gratification. You give up something good now to get something better down the road. An athlete who goes through the discipline of training is giving up the comfort that he would have during those practice sessions because he believes the joy of competing and the joy of possibly winning down the road is worth what he's giving up now.

Eleazar disciplined

आप में से कितने लोग यह स्वीकार करेंगे कि "ऐसा लगता है कि मेरे पास वह सब कुछ करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है जो मैं करना चाहता हूँ"? मैंने एक केल्विन और हॉब्स कार्टून देखा जिससे मुझे एक किक मिली। केल्विन हॉब्स की ओर मुड़ा, और उसने उससे कहा, "मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे पृथ्वी पर कुछ चीजें पूरी करने के लिए रखा है। अभी, मैं बहुत पीछे हूँ, मैं कभी नहीं मरूँगा।" क्या आपने कभी ऐसा महसूस किया है? समस्या पर्याप्त समय नहीं होने की है। नहीं! इसके विपरीत, कई अर्थों में समय महान तुल्यकारक है।

जब तक दुनिया आज खत्म नहीं हो जाती, वस्तुतः हम में से हर एक आज तक जीवित रहेगा। यदि आप आज पूरी तरह से जीते हैं, तो यह एक ऐसी चीज है जो आप में उन सभी के साथ समान है जो दिन भर जीते हैं। आप समान बल, आयु, धन या अवसर के नहीं हैं। लेकिन एक बात है जो हम सभी के लिए समान है, हम में से प्रत्येक के पास 24 घंटे, 1,440 मिनट होंगे, न अधिक, न कम। समस्या यह नहीं है कि हमारे पास पर्याप्त समय नहीं है; हम सभी के पास वास्तव में समान राशि है। सवाल यह है कि आप अपने समय का सदुपयोग कैसे करते हैं?

क्या आप असंगठित हैं? क्या आप अपने समय का गलत प्रबंधन कर रहे हैं? बहुत से लोग नहीं जानते। वे इतने लंबे समय तक साथ-साथ चलते रहे हैं, या हलकों में चले गए हैं, वे वास्तव में उन लक्ष्यों को महसूस नहीं करते हैं जिन्हें पूरा किया जा सकता है और दृष्टि को प्राप्त किया जा सकता है यदि वे अपने समय का ठीक से प्रबंधन करते हैं। अपनी स्थिति का मूल्यांकन करें। क्या आप समय कुप्रबंधन के निम्नलिखित लक्षणों में से किसी को पहचानते हैं?

#### 1. मैलापन.

क्या आपकी डेस्क बरबाद है? अपने शयनकक्ष में अपने ड्रेसर के शीर्ष के बारे में कैसे? आप में से कुछ ठीक-ठीक जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ; वे सिर्फ सामान से भरे हुए हैं। आपकी कार के बारे में क्या? क्या यह अंदर और बाहर लगातार गंदा रहता है? क्या आपको याद है कि आखिरी बार आपने अपना तेल कब बदला था?

#### 2. अपॉइंटमेंट्स, मैसेज और डेडलाइन भूल गए।

अब काफी स्पष्ट रूप से, वे चीजें कभी-कभार हममें से सर्वश्रेष्ठ के साथ होती हैं। वे सबसे संगठित लोगों के साथ होते हैं। लेकिन असंगठित लोगों के लिए, वस्तुतः हर दिन टूटी हुई प्रतिबद्धताओं और लचर बहानों से भरा हो जाता है।

#### 3. उत्पादकता का अभाव।

आप खुद को छोटे-छोटे, उबाऊ काम करते हुए पाते हैं, बस इसलिए आपको लगेगा कि आपने कुछ कर लिया है। आप इसे अपनी "टू डू लिस्ट" से चेक कर सकते हैं। दिवास्वप्न देखने और वास्तविक निर्णय लेने से बचने की प्रवृत्ति होती है, टालमटोल की प्रवृत्ति होती है।

#### 4. गरीब या कम आत्मसम्मान।

### His decision.

He watched closely that woman whose name was Rebekah. He watched closely before he decided if she was the one.

### His appetite

When he came before her brother and her brother wanted to eat first. Laban said, "Here sit down and eat, and then we'll talk." Eleazar said, "Nope, I'm not going to eat a thing. I want to talk because I'm here for a mission.

### His words

He carefully chose the words that he addressed to Laban, the man who would make the decision

### His time.

"Don't detain me, my master waits for me, let me go back home." If you're going to reach any goals in your life, it is essential that you learn to discipline your time. Your time is your life. If you waste your time, you're committing suicide.

Write out how you see your life three to five years from today. That's your vision. Use the four P's — Passion, Purpose, People, and Praise. Then craft the goals that it will take you to reach that vision.

Some of you are going to want to jump to those problems that you know are already facing you. Don't do that. Stay with your mission, shape your vision and craft your goals. While you work on those goals for your life, God is working on you. He is changing you for the better.

Where is your life going? Is your life even headed in the right direction? Is it going toward heaven? Is it on a road that's paved by the blood of Jesus Christ? There is no other way to the Father except by Him. Have you been distracted and need to turn to get back on the road? If you're not in Christ, a Christian, you really are not headed where you want to go. Today is the day to put your faith and trust in Jesus, confess the name of Jesus, die to sin and be buried in His blood through Immersion in water calling on Him to forgive you of your sins. Lesson # 1300 February 16, 1997

असंगठित लोग अपने काम के बारे में खराब महसूस करते हैं। उन्हें दूसरों की तारीफ स्वीकार करना बहुत कठिन लगता है क्योंकि गहराई से वे जानते हैं कि वे वास्तव में वह नहीं कर रहे हैं जो वे कर सकते थे। सच कहूँ तो, गरीब समय प्रबंधक अक्सर खुद को बहुत पसंद नहीं करते।

### 5. व्यक्तिगत संबंधों की खराब गुणवत्ता।

यदि आप एक खराब समय प्रबंधक हैं, तो आप पा सकते हैं कि आपके और आपके जीवनसाथी या बच्चों के बीच महत्वपूर्ण बातचीत के बिना दिन बीत जाएंगे। जब आप बात करते हैं, तो वे बातचीत उथली हो सकती हैं और आत्म-रहस्योद्घाटन से रहित हो सकती हैं। वे अप्रमाणिक हो सकते हैं। आप महसूस कर सकते हैं कि आप घर में अधिकाधिक चिड़चिड़े होते जा रहे हैं। ये समय के कुप्रबंधन के प्रमुख संकेत हैं।

### 6. एलभगवान के साथ घनिष्ठता का प्रतीक।

असंगठित ईसाई ईश्वर के करीब महसूस करना चाहते हैं, लेकिन वे शायद ही कभी ऐसा करते हैं। एक प्रचारक को उठने और कहने की आवश्यकता नहीं है, "अब आपको दैनिक बाइबिल पढ़ने और व्यक्तिगत प्रार्थना के समय और ध्यान और प्रतिबिंब के समय के लिए अलग समय निर्धारित करने की आवश्यकता है।" वे वह सब जानते हैं। वे बस ऐसा नहीं कर रहे हैं। वे यह कहकर खुद को माफ़ कर देते हैं, "ठीक है, दिन में अभी पर्याप्त समय नहीं है।" लेकिन गहराई से वे जानते हैं कि यह वास्तव में प्राथमिकताओं, संगठन और व्यक्तिगत इच्छा का मामला है।

क्या उनमें से तीन या अधिक लक्षण आपके साथ घर पर आए थे? आप अधिकतम जीवन के लिए अपना समय कैसे प्रबंधित करते हैं? अब मैं आपके साथ आपके समय के प्रबंधन के लिए सात नियमों को साझा करना चाहता हूँ। उनमें से प्रत्येक के साथ मैंने आपको एक पवित्र शास्त्र का उदाहरण दिया है। मुझे लगता है कि उनमें से हर एक उतना ही आध्यात्मिक है जितना संभवतः हो सकता है। यदि आपकी इच्छा है, यदि आपका मिशन ईश्वर को प्रसन्न करना है, तो आपको इनकी गंभीरता से जांच करने और उन्हें लागू करने की आवश्यकता है।

### समय प्रबंधन के नियम

#### A. अपने समय पर नियंत्रण रखें।

सभी व्यक्तिगत समय संगठन का केंद्रीय सिद्धांत सरल है: समय का बजट होना चाहिए। जो लोग कहते हैं, "ठीक है, जब मेरे पास समय होगा, मैं उस पर बात करूँगा," उन्होंने इसे वहीं उड़ा दिया है। आपके पास कभी समय नहीं होता, आप समय बनाते हैं। अपने समय पर नियंत्रण रखें।

देखें कि दाऊद ने "हम को अपने दिन गिनना सिखा, कि हम बुद्धिमान हो जाएं।" (भजन 90:12) अब यह आपके लिए थोड़ा काव्यात्मक हो सकता है, लेकिन डेविड कह रहा है। यदि आप ज्ञानी हृदय रखने जा रहे हैं, तो आपको पता होना चाहिए

## Chapter 6

### Organizing My Time

**What are you trying to do with your life? What is your mission, your vision? How do you want your life to look in accomplishing that mission? You've got to set goals. Goals are those steps that are going to lead you to the vision in the accomplishment of the mission and they must be specific and measurable.**

**This lesson is primarily about how to organize your day-to-day living to accomplish those goals. How do you manage your time? Time is your most precious asset. In fact, your time is your life. So obviously if you're going to live the maximum life, you've got to make maximum use of your time.**

**"Be very careful, then how you live—not as unwise but as wise... making the most of every opportunity..." (Ephesians 5:15) Do you understand what Paul is saying? "Make the most of every opportunity because time is precious." Time is worth far more than your money because, unlike your money, you can't save your time. You can't borrow it, buy it or manufacture it. All you can do is use it. If you don't use it, it's gone. If you don't learn to manage your time, nothing else will be managed in your life. It's that critical.**

**How many of you would admit "I just don't seem to have enough time to get everything done I want to do"? I saw a *Calvin and Hobbs* cartoon that I got a kick out of. Calvin turned to Hobbs, and he said to him, "I know that God put me on earth to accomplish certain things. Right now, I'm so far behind, I'll never die." Have you ever felt like that? The problem is not having enough time. No! To the contrary, time in many senses is the great equalizer.**

**Unless the world ends today, virtually every one of us will live all the way through today. If you live all the way through today, it is the one thing that you have in common with everybody else who lives through the day. You're not of equal strength, age, money or opportunity. But there's one thing all of us who will live through the day have in common, each one of us will have 24 hours, 1,440 minutes, no more, no less. The problem is not that we don't have enough time; we all**

कि आपका समय कहाँ जाता है। बेहतर अभी तक, आपको यह तय करना होगा कि आपका समय कहाँ जाता है ताकि आप अपना समय अत्यावश्यक के बजाय महत्वपूर्ण समय पर समर्पित कर सकें।

ईसाइयों के लिए शैतान की सबसे प्रभावी रणनीतियों में से एक हमें कम महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रखना है। यदि शैतान आपको बुरा नहीं बना सकता, तो वह आपको व्यस्त ही करेगा। दूसरे शब्दों में, वह बेकार की गतिविधियों से आपका ध्यान भटकाकर आपके जीवन को निष्प्रभावी बना सकता है।

कुछ साल पहले टाइम मैगजीन ने एक अंक निकाला था और उसके कवर पर हेडलाइन थी "द रैट रेस, हाउ अमेरिका इज रनिंग इटसेल्फ रैग्ड।" इसने कहा "अस्सी के दशक में जो पैसा था, वह समय नब्बे के दशक में होगा क्योंकि हम समय से बाहर चल रहे हैं।" नहीं, हम समय से बाहर नहीं चल रहे हैं, हम अपना समय निर्धारित नहीं कर रहे हैं। हम अपने दिन के सही अंकन नहीं कर रहे हैं। अपने समय पर नियंत्रण रखें।

उदाहरण के लिए क्या आपने कभी गौर किया है कि हम गैर-अनुसूचित घटनाओं पर अनुसूचित घटनाओं को प्राथमिकता देते हैं? मुझे समझाने दो। यदि आपने सोमवार को केवल 2:00 डेंटल अपॉइंटमेंट निर्धारित किया है, तो आप अपना शेष दिन उस डेंटल अपॉइंटमेंट के इर्द-गिर्द घूमेंगे। ठीक है, मैं यहां जा सकता हूँ, मैं वहां जा सकता हूँ, लेकिन मुझे उस 2:00 दंत चिकित्सक की नियुक्ति के लिए जाना है। दूसरे शब्दों में, आप निर्धारित कार्यक्रमों को प्राथमिकता देते हैं।

अपने समय का निर्धारण करके हमेशा दूसरे लोगों को यह निर्धारित करने देने के बजाय कि आपके जीवन में क्या महत्वपूर्ण है, आप यह निर्धारित करते हैं कि क्या महत्वपूर्ण है। आप उन चीजों के लिए समय निर्धारित करते हैं जिन्हें आप महत्व देते हैं और जिन्हें आप पूरा करना चाहते हैं। वह आपकी जिम्मेदारी है। भण्डारीपन मसीही जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण है। आप अपने धन, क्षमताओं, गतिविधियों, कार्यों और समय के भण्डारी हैं। लोगों को इसे अनजाने में आपसे लेने न दें। यह तुम्हारा निर्णय है।

बी। भगवान के साथ शुरू करो।

जब आप अपने समय पर नियंत्रण करना शुरू करते हैं, तो आप सुनिश्चित करते हैं कि आप परमेश्वर के साथ समय बिता रहे हैं। "सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।" (1 कुरिन्थियों 10:31)

मैं आपके साथ एक अद्भुत सिद्धांत साझा करना चाहता हूँ। आप जो कुछ भी परमेश्वर को सौंपते हैं, वह आशीष देता है और आपको उस वस्तु का अधिक देता है। मैंने इसे नहीं बनाया। यह लूका 6:38 से है, "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। पूरा नाप दबा दबाकर, हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डाला जाएगा।" आप जो कुछ भी भगवान

have really the same amount. The question is: How do you use your time?

**Are you disorganized? Are you mismanaging your time? A lot of people don't know. They have plodded along, or gone in circles for so long, they really don't realize the goals that could be accomplished and the vision that could be achieved if they properly managed their time. Evaluate your situation. Do you recognize any of the following symptoms of time mismanagement?**

#### Messiness.

**Is your desk cluttered? How about the top of your dresser in your bedroom? Some of you know exactly what I'm talking about; they're just filled with stuff. What about your car? Is it dirty on the inside and the out, constantly? Do you remember the last time you had your oil changed?**

#### Forgotten appointments, messages, and deadlines.

**Now quite frankly, those things occasionally happen to the best of us. They happen to the most organized of people. But for the disorganized, virtually every day becomes filled with broken commitments and lame excuses.**

#### Lack of productivity.

**You find yourself doing small, boring tasks, just so you'll feel like you got something done. You can check it off your "To Do List." There's a tendency to daydream and to avoid making a real decision, a tendency toward procrastination.**

#### Poor or lower self-esteem.

**Disorganized people tend to feel poor about their work. They find it very hard to accept the compliments of others because deep down they know they're really not doing what they could do. Frankly, poor time managers often don't like themselves very much.**

#### Poor quality of personal relationships.

**If you're a poor time manager, you may be finding that days will pass without your having significant conversation between you and your spouse or children. When you do talk, those conversations may be shallow and devoid of self-revelation. They may be un-affirming. You may sense yourself becoming**

को देते हैं, वह आपको अधिक देता है।

अब पहली बात जो हम सोचते हैं वह है पैसा। अपना पैसा दो और वह तुम्हें वापस कर देगा; अच्छा उपाय करें और नीचे दबाएं। लेकिन यह अच्छे कामों के लिए उतना ही सही है जितना पैसों के लिए। यह सच है कि भगवान आपको और मौके देंगे। याद रखें, यीशु ने यह भी कहा, "यदि तुम थोड़े में विश्वासयोग्य हो, तो मैं तुम्हें बहुत में विश्वासयोग्य होने का अवसर दूंगा।" यह आपके प्यार के लिए सच है। क्या आपने अभी तक इसका पता लगाया है? तुम अपना प्रेम परमेश्वर को दो; वह आपको हर तरह से प्यार देगा। यदि आप अन्य लोगों से प्यार करते हैं, तो इसका अधिक हिस्सा आपके पास वापस आएगा। यह आपके समय के लिए भी सही है। यदि आप इसे परमेश्वर की ओर मोड़ देते हैं, तो वह आपको अधिक समय देगा।

खुशखबरी संस्करण नीतिवचन 10:27 में कहा गया है "ईश्वर के प्रति श्रद्धा प्रत्येक दिन में घंटे जोड़ती है।" यह शारीरिक रूप से असंभव हो सकता है, लेकिन यह एक आध्यात्मिक सत्य है। यदि आप प्रत्येक दिन की शुरुआत प्रभु के सामने समय के साथ करते हैं, तो यह आपको चकित कर देगा कि शेष दिन के लिए आपके पास कितना अतिरिक्त समय होगा। आपके पास भक्ति के लिए समय नहीं है? 15 मिनट पहले उठें। उस आदमी की तरह मत बनो जो मच्छर भगाने में इतना व्यस्त था, उसने कभी दलदल नहीं निकाला। यदि आप अधिक समय चाहते हैं, तो आपको समय के निर्माता को अधिक समय देकर प्रारंभ करना होगा। उसे आपके पास उपलब्ध समय को गुणा करने दें।

C. अपने लक्ष्यों के आसपास अपने दिन की योजना बनाएं। यदि आपके पास लक्ष्यों के साथ भगवान को खुश करने के लिए एक जीवन मिशन है, तो उन लक्ष्यों के आसपास अपने दिन की योजना बनाएं। यदि आपके पास कोई जीवन मिशन नहीं है, तो अभी अपनी दृष्टि को आकार दें और कल्पना करें कि आप कैसे चाहते हैं कि आपका जीवन अब से तीन से पांच साल बाद का हो। याद रखें, एक अच्छी दृष्टि आपके जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करती है। पी को छोड़ना सुनिश्चित करें उद्देश्य, जुनून, लोग और प्रशंसा, अन्यथा आप जीवन के प्रमुख हिस्सों को छोड़ देंगे। अब, अपनी दृष्टि को पूरा करने में मदद के लिए अपने लक्ष्य निर्धारित करें। एक बार जब आप उन्हें लिख लेते हैं, तो अपनी दैनिक गतिविधियों में नियमित रूप से उन पर विचार करें। यह निरंतर अनुवर्ती वह जगह है जहाँ लोग इसे याद करते हैं।

मुझे पता है कि लगभग सभी ने अपने जीवन में एक या दूसरे समय पर लक्ष्य निर्धारित किए हैं। हम में से अधिकांश ने नए साल का संकल्प लिया है। है न? यहां तक कि अगर आपके पास कभी भी जीवन मिशन नहीं था, भले ही आपके पास कभी जीवन दृष्टि नहीं थी, हम में से अधिकांश ने एक संकल्प किया था। यह लक्ष्य का एक रूप है।

increasingly irritable at home. These are a key sign of time mismanagement.

### Lack of intimacy with God.

Disorganized Christians want to feel close to God, but they seldom do. A preacher doesn't need to get up and say, "Now you need to set aside time for daily Bible reading and personal prayer time and time of meditation and reflection." They know all that. They simply are not doing it. They excuse themselves by saying, "Well, there's just not enough time in the day." But deep down they know it's really more a matter of priorities, organization, and personal will.

Did three or more of those symptoms hit home with you? How do you manage your time for the maximum life? Well I want to share with you now the seven laws for managing your time. Beside each of them I've given you a scriptural example. I think every one of them is as spiritual as it can possibly be. If your will, if your mission is to please God, you need to examine these seriously and apply them.

### Laws of Managing Time

#### Take control of your time.

The central principle of all personal time organization is simple: Time must be budgeted. People who say, "Well, I'll get to that when I have the time," they've blown it right there. You never have the time, you make the time. Take control of your time.

Look at what David said in "Teach us to number our days aright, that we may gain a heart of wisdom." (Psalm 90:12) Now that may be a little bit poetic for you, but David is saying. if you're going to have a heart of wisdom, you must know where your time goes. Better yet, you must decide where your time goes so you can devote your time to the important rather than the urgent.

One of Satan's most effective strategies for Christians is just to keep us busy doing less important things. If Satan can't make you bad, he'll just make you busy. In other words, he can make your life ineffective by distracting you with worthless activities.

A few years ago *Time Magazine* came out with an issue and on the cover there was the headline "The Rat Race,

हम लक्ष्य निर्धारित करते हैं और "टू डू लिस्ट" और उनके बारे में कभी सोचते भी नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हममें से अधिकांश गतिविधि-संचालित हैं। हम उन सभी चीजों के बारे में सोचते हैं जो हम कर सकते थे और करनी चाहिए। फिर हम अपने दिन की शुरुआत बेतरतीब ढंग से उस "टू डू लिस्ट" पर उन चीजों को करने से करते हैं, जिन्हें हम अच्छा और आवश्यक मानते हैं। "टू डू लिस्ट" के साथ समस्या यह है कि उस सूची की चीजें मूल्य में व्यापक रूप से भिन्न होती हैं। यदि आप अपनी सूची में चीजें करना शुरू करने जा रहे हैं, तो आप सबसे मूल्यवान चीजों को छोड़ सकते हैं। यदि आप केवल अपनी "टू डू लिस्ट" के अनुसार जीते हैं, तो आप उद्देश्य-संचालित नहीं हैं, बल्कि गतिविधि-संचालित हैं। यह मत सोचो कि यह समय प्रबंधन है क्योंकि आपके पास एक सूची है। आपको चाहिए **प्राथमिकताएं स्थापित करें।**

आपकी "करने की सूची" को आपके द्वारा लिखे गए लक्ष्यों को प्रतिबिंबित करना चाहिए। आपकी "टू डू लिस्ट" में वास्तव में उन महत्वपूर्ण चीजों को दर्शाया जाना चाहिए जिन्हें आप अपने जीवन में पूरा होते हुए देखना चाहते हैं। प्रत्येक दिन जब आप "टू डू लिस्ट" बनाते हैं, तो अपने जीवन के चार प्रमुख क्षेत्रों में से प्रत्येक में कम से कम एक लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढ़ने का प्रयास करें। अपने जुनून, उद्देश्य, लोगों या स्तुति लक्ष्यों की सिद्धि की ओर बढ़ें।

लक्ष्य निर्धारण पर सभी प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध हैं, लेकिन वे आपको सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं बताती हैं। वे आपको बताते हैं कि एक बिलियन डॉलर कैसे बनाया जाए। लेकिन किसी ने कभी यह उल्लेख नहीं किया कि एक दिन आप न्याय में परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। परमेश्वर उस अरबपति को असफल कहने जा रहा है यदि उसने अपने जीवन का निर्माण उन लक्ष्यों के इर्द-गिर्द नहीं किया जो परमेश्वर को भाता है।

पॉल ने कहा, "क्या आप नहीं जानते कि दौड़ में सभी धावक दौड़ते हैं, लेकिन पुरस्कार केवल एक को मिलता है? पुरस्कार पाने के लिए दौड़ें।" (1 कुरिन्थियों 9:24) जब आपके पास एक दौड़ हो; एक स्प्रिंट, एक मील या एक मैराथन, आपको फिनिश लाइन की दिशा में जाना है। "इसलिए मैं उस व्यक्ति की तरह नहीं दौड़ता जो बिना लक्ष्य के दौड़ता है..." (पद 26) क्या आप सौ गज की दौड़ लगाते हुए देख सकते हैं और कोई व्यक्ति दूसरी दिशा में उड़ान भरता है? यह कितना हास्यास्पद है! लेकिन बहुत से लोग अपने जीवन में यही करते हैं।

आपकी चुनौती अच्छे को बुरे से अलग नहीं करेगी; आपकी चुनौती हर संभव अच्छे से सर्वश्रेष्ठ को हथियाने की होगी। इसलिए, अपने लक्ष्यों के आसपास अपने दिन की योजना बनाएं।

D. अत्यावश्यक पर महत्वपूर्ण पर ध्यान दें।

अधिकांश लोग अपने जीवन को दो चीजों के इर्द-गिर्द

**How America is Running Itself Ragged." It said "What money was in the eighties, time is going to be in the nineties because we're running out of time." No, we're not running out of time, we're not scheduling our time. We're not numbering our day's right. Take control of your time.**

**Have you ever noticed for example that we tend to give priority to scheduled events over non-scheduled events? Let me explain. If the only thing you've scheduled on a Monday is a 2:00 dental appointment, you will revolve the rest of your day around that dental appointment. Well, I might can go here, I might can go there, but I've got to go to that 2:00 dentist appointment. In other words, you give priority to scheduled events.**

**Rather than always letting other people determine what's important in your life by scheduling your time, you determine what's important. You schedule time for the things that you value and that you want to accomplish. That is your responsibility. Stewardship is critical to living the Christian life. You are a steward of your money, abilities, activities, functions and time. Don't let people take it from you unconsciously. It's your decision.**

## **B. Start with God.**

**When you begin to take control of your time, you make sure you're spending time with God. "So whether you eat or drink or whatever you do, do it all for the glory of God." (1 Corinthians 10:31)**

**I want to share with you an amazing principle. Whatever you turn over to God, He blesses and gives you more of that thing. I did not make that up. It's from Luke 6:38, "Give and it will be given unto you. A good measure, pressed down, shaken together and running over, will be poured into your lap." Whatever you give to God, He gives more to you.**

**Now the first thing we think this means is money. Give your money and He'll give it back to you; good measure and press down. But it's true for good deeds just as it is for money. It's true God will give you more opportunities. Remember, Jesus also said, "If you're faithful in little, I'll give you the opportunity to be faithful in much." It's true for your love. Have you found that out, yet? You give your love to God; He'll give love to you in all kinds of ways. If you love other**

व्यवस्थित करते हैं: अत्यावश्यक और अधूरा। हम सुबह उठते हैं और सोचते हैं: आज क्या जरूरी है? पेट भरने के लिए मुझे किस आग की जरूरत है? याद रखें कि जो सबसे ज्यादा रोता है वह शायद ही कभी सबसे महत्वपूर्ण होता है। आपको यह प्राथमिकता देने की आवश्यकता है कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है।

ई। अपनी ताकत पर समय बिताएं।

हमने उस चीज़ को कम करके अधिकतम जीवन जीने पर चर्चा की है जिसे करने के लिए आप आकार में नहीं हैं और जो आप करने के लिए आकार में हैं उसे अधिक करके। वह कम करें जिसकी अपेक्षा परमेश्वर आपसे नहीं करता है, और वह अधिक करें जिसके लिए आप बने हैं। समय का कब्जा न होने के बारे में एक दुखद वास्तविकता यह है कि यह हमारी कमजोरियों की दिशा में बहने लगता है। हम उन चीज़ों को करने में अधिक समय व्यतीत करते हैं जिनमें हम बहुत अच्छे नहीं हैं। लेकिन उचित योजना के साथ, हम उन चीज़ों को करने में अधिक समय व्यतीत करेंगे जो हम बहुत अच्छे से करते हैं।

गलत मत समझो। हमें अपनी कमजोरियों को सुधारने और कौशल विकसित करने के लिए कुछ समय के लिए बजट की आवश्यकता है। लेकिन यह हमारे अधिकांश समय नहीं होना चाहिए। "क्योंकि हम परमेश्वर के बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।" (इफिसियों 2:10) मैं अपना आकार पाना चाहता हूँ और अपना अधिक से अधिक समय वह करने में लगाना चाहता हूँ जो मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मुझसे चाहता है क्योंकि उसने मुझे उन कार्यों से निपटने की शक्ति दी है।

एफ। बजट समय अग्रिम में।

सुलैमान ने कहा, "मेहनती की योजनाएँ लाभ की ओर ले जाती हैं जैसे जल्दबाजी गरीबी की ओर ले जाती है।" (नीतिवचन 21:5) उस कहावत में एक वित्तीय निहितार्थ है, लेकिन इसे देखें, वह कहते हैं, यदि आप आगे की योजना बनाते हैं, तो यह आपके पूरे जीवन को लाभ पहुँचाएगा। अगर आप हर काम जल्दबाजी में करेंगे तो आपको परेशानी होगी। मैंने कठिन तरीके से सीखा है कि मेरे समय के सिद्धांत तत्वों को तिथि से आठ सप्ताह पहले कैलेंडर पर होना चाहिए।

क्या आप जानते हैं कि किस प्रकार की चीज़ों के लिए पहले से बजट बनाने की आवश्यकता होती है?

- आध्यात्मिक अनुशासन।
- जीवनसाथी के साथ समय
- मेरे बच्चों और उनकी गतिविधियों के लिए समय
- यारियाँ
- आराम और मनोरंजन

यह सात कानूनों में से सबसे महत्वपूर्ण हो सकता है क्योंकि समय से पहले बजट बनाना मुझे अपने समय पर नियंत्रण



people, more of it will come back to you. It's also true for your time. If you turn it over to God, He'll give you more time.

In the *Good News Version Proverbs 10:27* states "Reverence for God adds hours to each day." That may be physically impossible, but it is a spiritual truth. If you start each day with time before the Lord, it will amaze you how much extra time you'll have for the rest of the day. You don't have time for devotions? Get up 15 minutes earlier. Don't be like the fellow who was so busy swatting mosquitoes, he never drained the swamp. If you want more time, you've got to start by giving more time to the Creator of time. Let Him multiply the time at your disposal.

### C. Plan your day around your goals.

If you have a life mission to please God with goals, then plan your day around those goals. If you do not have a life mission, shape your vision now and visualize how you want your life to be three to five years from now. Remember, a good vision covers all the facets of your life. Be sure not to omit purpose, passion, people, and praise, otherwise you'll leave out major parts of life. Now, set your goals to help you accomplish your vision. Once you've written them down, reflect on them regularly in your daily activities. This constant follow-up is where people miss it.

Almost everybody I know has set goals at one time or another in their lives. Most of us have made a New Year's resolution. Haven't you? Even if you never had a life mission, even if you never had a life vision, most of us made a resolution. That's a form of a goal.

We set goal and "To Do List" and never even thinking about them. That's because most of us are activity-driven. We think of all these things we could and should do. Then we start our day just randomly doing those things on that "To Do List," things that we believe are good and necessary. The problem with a "To Do List" is that the things on that list vary widely in value. If you're just going to start doing things on your list, you may leave out the most valuable things. If you just live by your "To Do List," you're not purpose-driven, but activity-driven. Don't think it's time management just because you have a list. You must establish priorities.

रखने की अनुमति देता है, यह मुझे भगवान के साथ समय आवंटित करने की अनुमति देता है, यह मुझे अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है और यह मुझे महत्वपूर्ण से निपटने की अनुमति देता है अगर मैं इसे समय से पहले करता हूँ तो अति आवश्यक है। मेहनती की योजनाएँ लाभ की ओर ले जाती हैं, लेकिन जल्दबाजी गरीबी का कारण बनेगी।

जी व्यस्त बेहतर नहीं है।

निर्गमन 18 में एक उदाहरण मिलता है। जब मूसा के ससुर यित्री, इस्राएल के बच्चों के नेता, मूसा को देखने आए, तो मूसा सूर्योदय से सूर्यास्त तक बीस से तीस लाख इस्राएलियों का न्याय कर रहा था। क्या आप नहीं जानते कि मूसा दिन के अंत तक चमक रहा था? जेथ्रो ने कहा, "तुम अपने आप को मार रहे हो, और तुम उनका समय भी बर्बाद कर रहे हो।" फिर जेथ्रो ने मूसा को सिखाया कि इसे अलग-अलग भागों में कैसे विभाजित किया जाए।

क्या आप प्रभावी होने के लिए अच्छी चीजें करने में बहुत व्यस्त हैं? क्या आप अपना समय वैसे ही व्यतीत कर रहे हैं जैसे परमेश्वर चाहता है कि आप इसे व्यतीत करें? क्या आप उसके छोटे पहिए पर सवार हम्सटर की तरह हैं?

मुझे 23वें स्तोत्र की एक छोटी सी पैरोडी मिली जो आपको व्यस्त रहने के बजाय प्रभावी होने को याद रखने में मदद कर सकती है। यह इस प्रकार चलता है:

घड़ी मेरी तानाशाह है, मैं आराम नहीं करूंगा।  
यह मुझे थकने पर ही लेटता है।

यह मुझे गहरे अवसाद की ओर ले जाता है, यह मेरी आत्मा को आहत करता है।  
यह गतिविधि के लिए मुझे उन्माद के घेरे में ले जाता है।

भले ही मैं एक कार्य से दूसरे कार्य के लिए पागलों की तरह दौड़ता हूँ,  
मैं यह सब कभी नहीं करवाऊंगा। क्योंकि मेरा आदर्श मेरे साथ है।

अनुमोदन के लिए समय सीमा और मेरी जरूरतें, वे मुझे ड्राइव करते हैं।  
वे मुझसे मेरे शेड्यूल की सीमा से परे प्रदर्शन की मांग करते हैं।

वे मेरे सिर पर आधासीसी का अभिषेक करते हैं। मेरी इन-बास्केट ओवरफ्लो हो गई।

निःसन्देह थकान और समय का दबाव जीवन भर मेरा पीछा करता रहेगा; और मैं हमेशा के लिए निराशा के बंधनों में रहूंगा।

दुख की बात यह है कि लोग उस 23वें स्तोत्र से अधिक जीते

Your "To Do List" should reflect your goals you have written down. Your "To Do List" should reflect the really important things you want to see done in your life. Each day when you shape a "To Do List," try to move toward the accomplishment of at least one goal in each of the four major areas of your life. Move toward the accomplishment of your passion, purpose, people or praise goals.

There are all kinds of books out there on goal setting, but they don't tell you the most important thing. They tell you how to make a billion dollars. But none ever mention that one day you will stand before God in the Judgment. God is going to call that billionaire a failure if he didn't construct his life around the goals of doing what is pleasing to God.

Paul said "Do you not know that in a race all the runners run, but only one gets the prize? Run in such a way as to get the prize." (1 Corinthians 9:24) When you have a race; a sprint, a mile or a marathon, you've got to go in the direction of the finish line. "Therefore I do not run like a man running aimlessly..." (vs. 26) Can you picture a hundred yard sprint and some guy takes off in another direction? How ridiculous that is! But that's what so many people do with their lives.

Your challenge will not be separating the good from the bad; your challenge will be grabbing the best from all possible good. Therefore, plan your day around your goals.

#### **D. Focus on the important over the urgent.**

Most people organize their lives around two things: the urgent and the unfinished. We wake up in the morning and we think: What's urgent today? What fire do I need to go stomp out? Remember that which cries the loudest is seldom the most important. You need to prioritize what's really important.

#### **E. Spend time on your strengths.**

We've discussed living the maximum life by doing less of what you're not shaped to do and doing more of what you are shaped to do. Do less of what God isn't expecting you to do, and do more of what you are created to do. One of the sad realities about un-seized time is that it

हैं, न कि वास्तविक स्तोत्र से। वे इसे स्वीकार नहीं कर सकते हैं, लेकिन वे करते हैं।

क्या आप सिर्फ बनाए रखने की कोशिश करके थक गए हैं? क्या आप गतिविधि संचालित होने से थक गए हैं? मेरे पास बहुत अच्छी खबर है यीशु मसीह आपको एक विकल्प प्रदान करता है। याद रखें जब उसने मत्ती 11:28-30 में कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ" भारी बोझ से दबे हुए, वैसे, इसका मतलब सिर्फ तनावग्रस्त है। "हे सब थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगो, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन से दीन हूँ, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (आरएसवी) मुझे नहीं पता कि आप क्या सोचते हैं इसका मतलब है, लेकिन यह हमारे भगवान से वादा है। वह कहता है, तुम मेरे पास आओ, अपनी इच्छा को मेरी इच्छा से मिलाओ, तुम्हारा जीवन मेरे उद्देश्य से निर्धारित है और यह वास्तविक कठिन होना बंद हो जाएगा। वास्तव में, मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि यह अब तक का सबसे उत्पादक और सहज जीवन है।

लोगों, हमारे पास इस पुराने संसार में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए पर्याप्त समय है। यदि हम और अधिक करने का प्रयास करेंगे, तो हमारे पास पर्याप्त समय नहीं होगा। एक "टू डू लिस्ट" के अनुसार जीना बंद करें और ईश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए अपने जीवन के मिशन पर आधारित लक्ष्यों के अनुसार जीना शुरू करें। आपको उन लक्ष्यों तक ले जाने के लिए उन गतिविधियों को शेड्यूल करें। यह केवल किसी प्रकार का व्यवसाय मुंबो जंबो नहीं है, ठीक यही हमारे प्रभु ने किया है। उसने हर किसी को यह नहीं बताया कि उसे क्या करना है। वह ठीक-ठीक जानता था कि वह क्या हासिल करना चाहता है। वह सुबह जल्दी उठा और प्रार्थना करने के लिए दूर स्थान पर चला गया। मुझे लगता है कि वह हमें बता रहा है कि उसने ऐसा हर दिन किया। उसने परमेश्वर के साथ शुरुआत की और फिर उसने अपने जीवन मिशन और वहां तक पहुंचने के लक्ष्यों के बारे में सब कुछ योजना बनाई। यह एक आध्यात्मिक गतिविधि है न कि कोई प्रबंधन गतिविधि। परमेश्वर के भण्डारी के रूप में, वह आपको ऐसा करने के लिए विवश करता है।

लेकिन वापस मत्ती 11:28-30 में जाते हैं "फिर यीशु ने कहा, 'हे सब थके-माँदे और भारी बोझ ढोनेवालों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो। मुझे तुम्हें सिखाने दो, क्योंकि मैं नम्र और नम्र हूँ, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सिद्ध है, और जो बोझ मैं तुझे देता हूँ वह हल्का है।'" (एनएलटी) यह तभी होगा जब आप यीशु में होंगे। वह कहीं और नहीं जीवन प्रबंधन की शक्ति है। यदि आप आज मसीह में नहीं हैं तो आपको उसके पास आने की जरूरत है, उस पर अपना भरोसा रखें और उसके सुसमाचार का पालन करें। पाठ # 1301 जनवरी 19, 1997

tends to flow in the direction of our weaknesses. We tend to spend more time doing things of what we're not very good at. But with proper planning, we'll spend more time on doing those things than what we do very well.

**Don't misunderstand. We need to budget some time to improve our weaknesses and to develop skills. But that should not be most of our time. "For we are God's workmanship, created in Christ Jesus to do good works, which God prepared in advance for us to do." (Ephesians 2:10) I want to find my shape and spend as much of my time doing that which I know God wants me to do because he's given me strength to tackle those tasks.**

#### **F. Budget time in advance.**

**Solomon said "The plans of the diligent lead to profit as surely as haste leads to poverty." (Proverbs 21:5) There's a financial implication in that proverb, but look at it, he says, if you plan ahead, it will profit your whole life. If you do everything in haste, you're going to have problems. I have learned the hard way that the principle elements of my time need to be on the calendar eight weeks in advance of the date.**

**Do you know the type of things that need to be budgeted in advance?**

**Spiritual disciplines.**

**Time with spouse**

**Time for my children and their activities**

**Friendships**

**Rest and recreation**

**This may be the most critical of the seven laws because budgeting time in advance allows me to take control of my time, it allows me to allocate time with God, it allows me to focus on my goals and it allows me to deal with the important over the urgent if I do it ahead of time. The plans of the diligent lead to profit, but haste will cause poverty.**

#### **G. Basier is not better.**

**There is a example found in Exodus 18. When Moses' father-in-law, Jethro, came to see Moses, the leader of**

अध्याय 7

## सही रिश्ते

"आपके जीवन की गुणवत्ता आपके रिश्तों की गुणवत्ता के सीधे अनुपात में होगी।" अब उस अच्छी तरह से चिन्हित करें, "आपके जीवन की गुणवत्ता आपके रिश्तों की गुणवत्ता के सीधे अनुपात में होगी।" इसलिए, आपको उन रिश्तों को चुनना और विकसित करना चाहिए जो आपके जीवन मिशन का समर्थन करते हैं, या आप उस अधिकतम जीवन को कभी नहीं जी पाएंगे।

### **आपको प्रेरित करने के लिए आपको मॉडल चाहिए।**

मॉडलिंग सीखने का सबसे अच्छा तरीका है। चाहे आप अपने जूते बांधना सीख रहे हों, कार चलाना सीख रहे हों या पर्सनल कंप्यूटर चलाना सीख रहे हों। हम उदाहरणों के माध्यम से तेजी से और बेहतर सीखते हैं। मुझे सिर्फ यह मत बताओ कि यह कैसे करना है, मुझे यह भी दिखाओ कि कैसे। सीखने का उद्देश्य जो भी हो, आप तेजी से और आसानी से और कम गलतियों के साथ सीखते हैं जब तक आपके पास एक उचित मॉडल है।

अब उसी तरह, जीवन में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का सबसे तेज़ तरीका किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना है जो पहले से ही अपने जीवन के साथ कर रहा है जो आप करना चाहते हैं और इसे कॉपी करें- यही कुंजी है। आप किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढते हैं जो पहले से ही वहां है जहां आप आध्यात्मिक, बौद्धिक, आर्थिक और संबंधिक रूप से होना चाहते हैं; देखें कि वह क्या कर रहा है और उसके बाद मॉडल करें।

यह बहुत बाइबिल है। प्रेरित पौलुस ने एक जीवन आदर्श के रूप में अपनी भूमिका को पहचाना जब उसने कहा, "हे भाइयो, औरों के साथ मिलकर मेरी सी चाल चलो, और उन को पहिचान लो, जो उस नमूने के अनुसार चलते हैं जो हम ने तुम्हें दिया है।" (फिलिप्पियों 3:17) उसने कहा, "मेरी मिसाल पर चलो, और उस नमूने पर चलो जो मैंने दिखाया है।" प्रक्रिया इस तरह से काम करती है, जैसा कि आप एक मॉडल का पालन करते हैं; आप बदले में एक मॉडल बन जाते हैं। "तुम हमारी और यहोवा की सी चाल चलने लगे; गंभीर पीड़ा के बावजूद, आपने पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए आनंद के साथ संदेश का स्वागत किया। और इस प्रकार तुम मकिदुनिया और अखाया के सब विश्वासियों के लिये आदर्श ठहरे।" (1 थिस्सलुनीकियों 1:6-7)

यीशु ने खुले तौर पर एक आदर्श होने का दावा किया। यूहन्ना 13, शिष्यों के पैर धोने के बाद उन्हें विनम्रता और सेवा का वह उदाहरण देते हुए, उन्होंने पद 15 में कहा, "मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे लिए किया है, वैसा ही तुम्हें भी करना चाहिए।" यह मानवीय है। अनुकरण करने की प्रकृति। जब आप एक शिशु थे, तो जिस तरह से आपने कुछ भी करना

**the Children of Israel, Moses was judging two to three million Israelites from sun-up to sundown. Don't you know Moses was glazed over by the end of the day? Jethro said, "You're killing yourself, and you're wasting their time, too." Jethro then taught Moses how to break it down into different divisions.**

**Are you too busy doing good things to be effective? Are you spending your time as God would have you spend it? Are you like a hamster on his little wheel?**

**I found a little parody of the 23rd Psalm which may help you remember to be effective not just busy. It goes like this:**

**The clock is my dictator, I shall not rest.**

**It makes me lie down only when exhausted.**

**It leads me to deep depression, it hounds my soul.**

**It leads me in circles of frenzy for activity's sake.**

**Even though I run frantically from task to task,**

**I will never get it all done. For my ideal is with me.**

**Deadlines and my needs for approval, they drive me.**

**They demand performance from me beyond the limits of my schedule.**

**They anoint my head with migraines. My in-basket overflows.**

**Surely fatigue and time pressure shall follow me all the days of my life; And I will dwell in the bonds of frustration, forever.**

**What's sad is more people live by that 23rd Psalm than the real one. They might not admit it, but they do.**

**Are you tired of just trying to keep up? Are you tired of being activity driven? I've got great news Jesus Christ offers you an alternative. Remember when He said in Matthew 11:28-30 "Come to me, all who labor and are heavy laden" heavy laden, by the way, just means**

सीखा, वह यह था कि आपने जो देखा उसे कॉपी करके किया। अब इसके साथ समस्या यह है कि एक बच्चे के रूप में आपको अपने मॉडल चुनने का मौका नहीं मिलता। आप केवल उन लोगों का अनुसरण करते हैं जो आपके सबसे करीब हैं। इसलिए, एक बच्चे के रूप में, यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के आस-पास थे जो एक सफल व्यक्ति था, तो आप एक उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति के रूप में विकसित हो सकते हैं। यदि आप दूसरी ओर एक नकारात्मक उदाहरण के आसपास थे, तो आपने संभवतः एक नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर लिया था। यदि आपने अपने घर में क्रोध को प्रतिरूपित देखा है, तो आश्चर्यचकित न हों यदि आपका स्वभाव खराब है।

सौभाग्य से, एक वयस्क के रूप में, हम अपने मॉडल चुन सकते हैं। इसलिए, एक वयस्क के रूप में, कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका अतीत क्या था, आप अपने दिमाग को फिर से पैटर्न और फिर से प्रोग्राम कर सकते हैं। ऐसे मॉडल चुनें जो आपके जीवन को वहां ले जाएं जहां आप इसे ले जाना चाहते हैं। मुझे नहीं पता कि आप इतिहास के किस तरह के छात्र हैं, लेकिन दुनिया के इतिहास में हर महान नेता ने एक मॉडल का अनुसरण किया है। जनरल जॉर्ज पैटन, द्वितीय विश्व युद्ध के नायक, सिकंदर महान के एक बहुत ही कठोर शिष्य थे। अहिंसक विरोध के लिए मार्टिन लूथर किंग का मॉडल गांधी थे। गांधी, जबकि एक ईसाई नहीं थे, ने कहा कि उन्होंने यीशु मसीह के बाद अपनी जीवन शैली का मॉडल तैयार किया।

मॉडल आपके जीवन मिशन में आगे बढ़ने का सबसे तेज़ तरीका है। किसी ऐसे व्यक्ति को खोजें जो पहले से ही वहां है जहां आप होना चाहते हैं और उस उदाहरण का अनुसरण करें। मॉडलों के बारे में सुंदरता यह है कि वे हमें प्रेरित करते हैं। क्योंकि जब वे बाधाओं को तोड़ते हैं और उपलब्धियां हासिल करते हैं, हम जानते हैं कि हम भी कर सकते हैं।

मुझे रोजर बैनिस्टर की कहानी बहुत पसंद है। वर्षों और दशकों तक, शरीर विज्ञानियों, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों ने सोचा कि मनुष्य चार मिनट के मील को कभी नहीं तोड़ सकता। वास्तव में एक डॉक्टर ने अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन जर्नल में एक बड़ा अंश लिखा। उन्होंने कहा, "क्या आपको एहसास है कि आपका दिल फट जाएगा और आपके फेफड़े गिर जाएंगे अगर कोई इंसान कभी चार मिनट की बाधा के पास जाएगा?" फिर रोजर बैनिस्टर के नाम से एक साथी ने किया। 15 महीने के भीतर चार मिनट मील दौड़ने के बाद, 32 अन्य लोगों ने भी ऐसा ही किया। क्या आप देखते हैं कि एक मॉडल आपके लिए क्या कर सकता है?

आपके मॉडल कौन हैं? वे कौन लोग हैं जिनका आप सम्मान करते हैं, जीवित या मृत, आध्यात्मिक, बौद्धिक और संबंधपरक? आप किसके बाद अपना जीवन मॉडलिंग कर रहे हैं? यदि आपके पास ऐसा कोई नहीं है, तो आप हार रहे हैं। आप समय और ऊर्जा बर्बाद कर रहे जीवन से गुजर रहे हैं, ऐसे सबक सीखने की कोशिश कर रहे हैं जो आपको पहले सीखने की जरूरत नहीं है; आप उन्हें किसी और के अनुभव से बेहतर तरीके से सीख सकते हैं। आपको प्रेरित करने के लिए आपको मॉडल चाहिए।

stressed out. "All you who are weary and heavy laden and I will give you rest. Take my yoke upon you, and learn from me; for I am gentle and lowly in heart, and you will find rest for your souls. For my yoke is easy, and my burden is light." (RSV) I don't know what you think that means, but it's a promise from our Lord. He says, you come to me, get your will in sync with my will, your life set by my purpose and it will quit being real hard. In fact, I'll make sure that it's the most productive and effortless life that you'd ever live.

People, we've have just enough time in this old world to do God's will. If we try to do more, then there won't be enough time. Stop living by a "To Do List" and start living by goals based upon your life's mission to do God's will. Schedule those activities to lead you to those goals. That's not just some kind of business mumbo jumbo, that is exactly what our Lord did. He didn't let everybody else tell him what to do. He knew exactly what he wanted to accomplish. He got up early in the morning and went to a far place to pray. I think that's telling us He did that every day. He started with God and then He planned everything around His life mission and the goals to getting there. It's a spiritual activity not some management activity. As God's steward, He compels you to do it.

But going back to Matthew 11:28-30 "Then Jesus said, 'Come to me, all of you who are weary and carry heavy burdens, and I will give you rest. Take my yoke upon you. Let me teach you, because I am humble and gentle, and you will find rest for your souls. For my yoke fits perfectly, and the burden I give you is light.'" (NLT) It will only happen if you're in Jesus. He is the power for life management no place else. If you are not in Christ today you need to come to Him, put your trust in Him and obey His gospel. Lesson # 1301 January 19, 1997

## Chapter 7

### Right Relationships

"The quality of your life will be in direct proportion to the quality of your relationships." Now mark that well, "The quality of your life will be in direct proportion with the quality of your relationships." Therefore, you must choose and develop relationships that support your life mission, or you'll never live that maximum life.

## आपको ढालने के लिए मेंटर्स की जरूरत होती है।

एक संरक्षक एक परामर्शदाता, व्यक्तिगत कोच या प्रशिक्षक होता है; एक मॉडल के विपरीत, जिसे आप व्यक्तिगत रूप से जानते हों या नहीं जानते हों। वास्तव में, एक मॉडल आपके जीवनकाल से कई पीढ़ियों पहले जीवित हो सकता है, लेकिन दूसरी ओर, एक संरक्षक आपको बहुत अच्छी तरह से जानता है और आपकी बहुत परवाह करता है। एक संरक्षक आपके विकास के लिए, आपके लक्ष्यों के लिए और आपकी आत्मा के लिए प्रतिबद्ध है। मेंटर्स आपके जीवन में बेहद शामिल हैं। वास्तव में, ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर आपके जीवन में आपके सर्वोत्तम को बाहर लाने के लिए उपयोग करता है।

परामर्शदाताओं की आवश्यकता पूरे पवित्रशास्त्र में पाई जाती है। नीतिवचन 15:22 को देखें, सुलैमान ने कहा, "बिना सम्मति के योजनाएँ निष्फल होती हैं, परन्तु बहुत सम्मति देनेवालों के रहते हुए वे सफल होती हैं।" मेरी बाइबिल में, मैंने उन दो शब्दों पर घेरा डाला है, सलाह और सलाहकार। आप कितने भी सफल क्यों न हो जाएं, आपको हमेशा एक कोच की जरूरत होती है।

आज दोपहर टेलीविजन पर देखें और माइकल जॉर्डन देखें। माइकल जॉर्डन के पास एक कोच है। स्टेफी ग्राफ के पास एक कोच है। पैट रोडी के पास एक कोच है। अभिनेता टॉम हैंक्स के पास एक कोच है; एक निर्देशक उसकी हर हरकत की कोचिंग कर रहा है। यही एक कारण है कि वे लोग पेशेवर हैं। यदि आप सफल लोगों को पाते हैं जो वास्तव में अपने कौशल को तेज कर रहे हैं, तो आप आश्चर्य हो सकते हैं कि उनके पास एक सलाहकार है।

"सलाह सुनो और निर्देश स्वीकार करो, और अंत में तुम बुद्धिमान हो जाओगे।" (नीतिवचन 19:20) इस सप्ताह जब मैं इस बिंदु के बारे में सोच रहा था, तो मैंने इसे गिन लिया और मेरे जीवनकाल में मेरे पास छह अलग-अलग गुरु थे—ऐसे लोग जिन्होंने मेरी काफी परवाह की और मेरे जीवन को ढालने के लिए मुझे पर्याप्त समय दिया। मैं अभी एक जीवन परिवर्तन से गुजर रहा हूँ, मैं स्पष्ट रूप से कुछ और की तलाश कर रहा हूँ। मैं अपने जीवन में कभी भी किसी भी काम को करने के लिए अपने दम पर इतना स्मार्ट नहीं रहा और न कभी बनूँगा। लेकिन गुरुओं ने मेरी जान ली और उसे ढाला है। उन्होंने इसे सफल निष्कर्ष के लिए अस्थिर पानी के माध्यम से निर्देशित किया है।

दोस्तों, आपके आस-पास ऐसे लोग हैं जो आपके गुरु हो सकते हैं और यदि आपके पास वे नहीं हैं तो आपको उन्हें खोजने की आवश्यकता है। उन्हें हर क्षेत्र में आपसे ज्यादा चालाक होने की जरूरत नहीं है। उन्हें सिर्फ उस चीज में अच्छा होना चाहिए जिसमें आप अच्छा होना चाहते हैं। देखिए मामले की सच्चाई यह है कि, हम सभी अज्ञानी हैं, बस अलग-अलग विषयों पर, है ना? लेकिन वहां ऐसे लोग हैं जो आपको अपने लक्ष्यों के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं। लाभ उठाने के कई तरीके हैं।

**आप एक संरक्षक से कैसे लाभान्वित होते हैं।**

**You need models to motivate you.**

**Modeling is the best way to learn. Whether you are learning how to tie your shoes, drive a car, or operate a personal computer. We learn faster and better through examples. Don't just tell me how to do it also show me how. Whatever the learning objective, you learn faster and easier and with fewer mistakes as long as you have a proper model.**

**Now in the same way, the quickest way to achieve your goals in life is to find somebody who is already doing with their life what you want to do and copy it—that's the key. You find somebody who is already where you want to be spiritually, intellectually, financially and relationally; look at what he is doing and model after it.**

**This is very biblical. The apostle Paul recognized his role as a life model when he said "Join with others in following my example, brothers, and take note of those who live according to the pattern that we gave you." (Philippians 3:17) He said, "Follow my example, and follow the pattern I've set forth." The process works this way, as you follow a model; you in turn become a model. "You became imitators of us and of the Lord; in spite of severe suffering, you welcomed the message with the joy given by the Holy Spirit. And so you became a model to all the believers in Macedonia and Achaia." (1 Thessalonians 1:6-7)**

**Jesus openly claimed to be a model. John 13, after He had washed the disciples' feet giving them that example of humility and service, He said in verse 15, "I have set you an example that you should do as I have done for you." It is human nature to imitate. When you were an infant the way you learned to do anything was by copying what you saw done. Now the problem with that is as a child you don't get to choose your models. You just model after those who are closest to you. Therefore, as a child, if you were around somebody who was a successful person, you likely developed into a high achiever. If you on the other hand were around a negative example, you probably developed a negative attitude. If you saw anger modeled in your home, don't be surprised if you've got a bad temper. Some of us grew up under very positive models and others under negative, but most of us probably with a mix.**

**Fortunately, as an adult, we can choose our models.**

### 1. प्रश्न पूछें.

प्रश्न पूछने से न डरें। आप जानते हैं कि हम जितने बड़े होते जाते हैं, उतना ही अधिक हम ऐसे कार्य करते हैं जैसे हमें कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं है। क्या यह मूर्खता नहीं है?

"मनुष्य के मन की युक्ति गहिरा सागर होती है, परन्तु समझदार मनुष्य उसको खींच लेता है।" (नीतिवचन 20:5) यदि आप एक समझदार पुरुष या स्त्री बनने जा रहे हैं, तो बेहतर होगा कि आप यह सीखें कि उस बाल्टी को एक बुद्धिमान व्यक्ति के जीवन के गहरे पानी में कैसे उतारा जाए और उस पानी को कैसे निकाला जाए। ऐसा करने का तरीका प्रश्न पूछना है।

मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन मेरे पास उन प्रश्नों की एक अपेक्षाकृत मानक सूची है, जिन्हें मैं तुरंत पूछने के लिए तैयार हूँ, जब मैं बुद्धिमान लोगों के आसपास होता हूँ, जो मुझे सलाह दे सकते हैं। जब मैं ऐसे लोगों के आस-पास होता हूँ जो कुछ ऐसा जानते हैं जिसे मैं नहीं जानता, जिसने कुछ ऐसा अनुभव किया है जिसका मैंने अनुभव नहीं किया है, जो मुझे ढालने में मदद कर सकता है, तो मेरे पास इस तरह के प्रश्न होते हैं:

- क) "मुझे अपने अब तक के सबसे महान निर्णयों के बारे में बताओ।
- ख) मुझे अपने जीवन की सबसे बड़ी सफलताओं के बारे में बताएं और आपने उनसे क्या सीखा।
- ग) मुझे अपने जीवन की सबसे बड़ी असफलता के बारे में बताएं और आपने इससे क्या सीखा।
- घ) आप अपना समय कैसे प्रबंधित करते हैं?
- ई) आप तनाव को कैसे संभालते हैं?
- च) वे कौन सी किताबें हैं जिन्हें आपने पढ़ा है जिन्होंने आपके जीवन में सबसे बड़ा बदलाव किया है?

इसे अच्छी तरह से चिन्हित करें: ज्ञान का सच्चा चिह्न अन्य लोगों से अच्छी सलाह लेने की क्षमता है। जब आप ऐसा कर सकते हैं, तो यह आपको अधिकतम जीवन जीने में मदद करेगा।

मैंने एक साथी के बारे में एक सच्ची कहानी पढ़ी जो अब प्रचार कर रहा है, लेकिन जब वह एक प्रचारक के लिए इंटरन था, तो वह पूरे एक साल के लिए वहाँ था। और उसने कहा, "तुम्हें पता है कि जब तक मैं वहाँ था, उस आदमी ने उठकर प्रचार किया और उसने कभी भी गलत प्रचार नहीं किया। हर उपदेश सिर्फ एक हिट नहीं था, यह एक होम रन था; तो मैं वहाँ उनका इंटरव्यू लेने गया और कहा, 'मैं तुम्हारे साथ एक साल रहा हूँ, और तुमने कभी पंगा नहीं लिया, तुम कभी फ्लॉप नहीं हुए, मैं तुम्हारा राज जानना चाहता हूँ।' उपदेशक ने कहा, 'मेरे पास कोई रहस्य नहीं है।' इंटरन ने जोर देकर कहा, 'नहीं, नहीं, मुझे वह मत दो। आपमें अन्य लोगों की तुलना में कुछ अलग है, जिन्होंने उपदेश दिया है, मैं जानना चाहता हूँ कि यह क्या है।' उसने कहा, "वास्तव में, वास्तव में, मैं वही करता हूँ जो अन्य प्रचारक करते हैं।" और इंटरन ने पूछा, 'नहीं, तुम मुझे बताओ, क्या आपके जीवन में कुछ है?' उपदेशक ने कहा, 'तीस वर्ष पहले जब मैं मंच पर गया, मैंने परमेश्वर के साथ एक

Therefore, as an adult, no matter what your past was, you can re-pattern and re-program your mind. Choose models that will take your life where you want it to be. I don't know what kind of student you are of history, but every great leader in the history of the world has patterned after a model. General George Patton, World War II hero, was a very, very stringent disciple of Alexander the Great. Martin Luther King's model for non-violent protest was Gandhi. Gandhi, while not a Christian, said he modeled his lifestyle after Jesus Christ.

Models are the fastest way to move forward in your life mission. Find somebody who is already where you want to be and follow that example. The beauty about models is that they motivate us. Because as they break through barriers and make accomplishments, we know we can, too.

I love the story about Roger Bannister. For years and decades, physiologists, doctors, scientists thought that the human being never could break the four-minute mile. In fact one doctor wrote a big piece in *the American Medical Association Journal*. He said, "Do you realize that your heart would explode and your lungs would collapse if a human being ever would approach that four-minute barrier?" Then a fellow by the name of Roger Bannister did it. After he ran the four-minute mile, within 15 months, so did 32 other people. Do you see what a model can do for you?

Who are your models? Who are the people that you respect, living or dead, spiritually, intellectually and relationally? Who are you modeling your life after? If you don't have anybody like that, you're losing out. You're going through life wasting time and energy, trying to learn lessons that you don't have to learn firsthand; you can better learn them through the experience of someone else. You need models to motivate you.

You need mentors to mold you.

A mentor is a counselor, personal coach or trainer; Unlike a model, whom you may or may not know personally. In fact, a model may have lived generations before your lifetime but a mentor, on the other hand, knows you very well and cares about you very much. A mentor is committed to your growth, to your goals, and to your soul. Mentors are extremely involved in your life. In fact, they are the people God uses in your life to

वाचा बाँधी। मैंने उससे कहा कि अगर वह मेरे काम पर आशीष देगा, तो मैं हर हफ्ते न्यू टेस्टामेंट पढ़ूंगा। उसने कहा, '30 वर्षों में, मैंने उस प्रतिबद्धता में एक सप्ताह भी नहीं गंवाया।' क्या आप ज्ञान के उस गहरे जल के बिना - वचन में बने रहने से नफरत नहीं करेंगे?

2. सुझाव स्वीकार करें या प्रतिक्रिया स्वीकार करें.

"बुद्धिमान सुनें और अपनी विद्या में वृद्धि करें, और समझदार को मार्गदर्शन प्राप्त होने दें-" (नीतिवचन 1:5) कभी-कभी जब आप सुनते हैं, तो आपको आलोचना सुननी पड़ती है। यह तब तक ठीक है जब तक यह एक अच्छे स्रोत से है जो आपसे प्यार करता है और जो बुद्धिमान है। नीतिवचन 25:12 पर विचार करें, "जैसे सोने की बाली वा कुन्दन का गहना, सुननेवाले के कान में बुद्धिमान की डांट होती है।"

दोस्तों, जब आप किसी ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति में हों जो जानकार हो, जिस पर आप भरोसा करते हों और जो आपसे प्यार करता हो, तो उनकी बात सुनें। चाहे वे आपको प्रोत्साहित करें या वे आपको सुधारें, प्रतिक्रिया अधिकतम जीवन के लिए आवश्यक है। मैं नहीं जानता कि आप में से कितने रॉकेट मार्गदर्शन में हैं; शायद इतने सारे नहीं, लेकिन जब नासा ने चंद्रमा या मंगल या जो कुछ भी ऊपर जाने के लिए एक रॉकेट लॉन्च किया, क्या आप जानते हैं कि वे ऐसा कैसे करते हैं? ऐसा करना इतना आसान नहीं है क्योंकि पृथ्वी लगातार घूम रही है, चंद्रमा लगातार पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा है, वे दोनों पिंड सूर्य के चारों ओर घूम रहे हैं और हमारा पूरा सौर मंडल अंतरिक्ष में घूम रहा है। आप उस रॉकेट को ट्रैक पर कैसे रखते हैं? वे केवल दिशा में प्रोग्राम नहीं करते और कहते हैं, "ठीक है, यह अपने आप हो जाता है।" उस रॉकेट पर एक कंप्यूटर है जो हर मिलीसेकंड होम कंप्यूटर को डेटा वापस भेज रहा है जो लगातार सही करने के लिए वापस भेज रहा है। उस रॉकेट को सही दिशा में रखने के लिए लगातार फीडबैक मिल रहा है। जीवन में ऐसा ही होता है और इसलिए हमें मेंटर्स की जरूरत होती है।

अब जब भी मैं किसी बुजुर्ग ईसाई से यह कहता हूँ, तो उसकी पहली प्रतिक्रिया यही होती है, "ठीक है, मैंने अपने जीवन में बहुत सारी गलतियाँ की हैं, मैं एक संरक्षक नहीं बन सकता।" आपको एक संरक्षक बनने के लिए पूर्ण होने की आवश्यकता नहीं है; आपको बस एक कदम आगे रहने की जरूरत है। हमें प्रेरित करने के लिए आदर्शों की आवश्यकता है और हमें ढालने के लिए परामर्शदाताओं की।

3. भागीदार आपको आगे बढ़ाने के लिए।

जो लोग उसी जीवन मिशन के लिए प्रतिबद्ध हैं जो आपने प्रेरित किया है और आपको अपने सामान्य लक्ष्यों की ओर प्रेरित करते हैं। यीशु के पास उनमें से 12 थे न? यदि आप नया नियम पढ़ते हैं, तो पौलुस के पास नौ थे। हर किसी को एक पार्टनर की जरूरत होती है।

बहुत कम लोग कभी रुकते हैं और पूछते हैं: "मैं अपने जीवन के

bring out the best in you.

**The need for mentors is found throughout Scripture. Look at Proverbs 15:22, Solomon said, "Plans fail for lack of counsel, but with many advisers they succeed." In my Bible, I've circled those two words, counsel and adviser. No matter how successful you become, you always need a coach.**

**Look on television this afternoon and watch Michael Jordan. Michael Jordan has a coach. Steffi Graf has a coach. Pat Roddy has a coach. The actor Tom Hanks has a coach; there's a director coaching his every move. That's one of the reasons those people are professionals. If you find successful people who are really sharpening their skills, you can be assured they have a mentor.**

**"Listen to advice and accept instruction, and in the end you will be wise." (Proverbs 19:20) As I was thinking about this point this week, I counted it up and I have had in my lifetime six different mentors—people who have cared enough about me and have given me enough of their time to mold my life. I am going through a life transition right now, I am frankly looking for a couple more. I've never been smart enough on my own to do any job I've ever had in my life and I will never be. But mentors have taken my life and molded it. They've guided it through the choppy waters to successful conclusions.**

**Folks, there are people all around you who could be your mentors and you need to find them if you don't have them. They don't have to be smarter than you in every area. They just have to be good at what you want to be good at. See the fact of the matter is, we're all ignorant, just on different subjects, right? But there are people out there who could guide you to your goals. There are several ways to benefit.**

**How you benefit from a mentor.**

#### **Ask questions.**

**Don't be afraid to ask a question. You know the older we get, the more we act like we don't need to know anything. Isn't that foolish?**

**"The purposes of a man's heart are deep waters, but a man of understanding draws them out." (Proverbs 20:5) If you're going to be a man or woman of**

साथ क्या करने जा रहा हूँ?" यदि आप इस अध्ययन के बारे में गंभीर हैं, यदि आपने नोट्स लिए हैं, यदि आपने एक जीवन मिशन और एक जीवन दृष्टि विकसित की है और यदि आपके पास आपको उस अधिकतम जीवन तक ले जाने के लिए ठोस लक्ष्य हैं, तो आप एक प्रतिशत से भी कम हैं इस राष्ट्र में लोगों की। इसका मतलब है कि आपको सक्रिय रूप से अन्य लोगों की तलाश करनी होगी जो आपके साथ बढ़ना चाहते हैं क्योंकि स्पष्ट रूप से, आप स्वयं एक कक्षा में हैं। आपको ऐसे लोगों को खोजने की जरूरत है जो आपको बढ़ने में मदद करना चाहते हैं।

सुलैमान ने कहा, "एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके काम का अच्छा फल मिलता है।" (सभोपदेशक 4:9) हम सभी को भागीदारों की आवश्यकता है। बेंजामिन फ्रैंकलिन का एक सहायता समूह था जिसे उन्होंने "माई मोस्ट इनजेनियस फ्रेंड्स" कहा। वह समूह एक साथ मिलते थे, कागजात लिखते थे, उन पर चर्चा करते थे, प्रश्न पूछते थे और एक दूसरे की मदद करते थे। वे 40 साल तक हर शुक्रवार की रात को मिले। क्या आपको आश्चर्य है कि अस्सी के दशक के अंत तक फ्रैंकलिन रचनात्मक और प्रतिभावान क्यों थे? क्या आपको आश्चर्य है कि उनके सबसे अच्छे आविष्कार 70 वर्ष की आयु के बाद क्यों हुए? मैं आपको बताता हूँ क्यों, क्योंकि उसके साथी थे जिन्होंने उसे प्रेरित किया। क्या आप?

थॉमस एडिसन का एक समूह था जिसे उन्होंने अपना "मास्टरमाइंड एलायंस" कहा। छह साल की अवधि में वह समूह 300 अलग-अलग पेटेंट आविष्कारों के साथ आया। आप कहते हैं, "मैं बुद्धि नहीं हूँ। आप स्वर्ग के लिए अपने मिशन में हाथ बताते हैं। भगवान ने अपने चर्च को आंशिक रूप से संपादित करने के लिए डिज़ाइन किया है।

"सो मसीह में हम जो बहुत हैं, एक देह बनते हैं, और हर एक अंग दूसरे सब का है।" (रोमियों 12:5) लेकिन इसे देखें, मानव शरीर के रूपक का उपयोग करते हुए, पॉल ने संक्षेप में कहा, "ईसाई, आप जीवन नामक इस यात्रा में भागीदार हैं और आप एक दूसरे से संबंधित हैं जैसे हृदय फेफड़ों से संबंधित है, या हाथ से हाथ, या गर्दन से सिर तक। आपके पास झुकना और ताकत खींचने के लिए एक दूसरे के पास होना चाहिए।

हम माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली पर्वतारोही टीम की तरह हैं। वे उन रस्सियों से बंधे हुए हैं। वे अपनी सुरक्षा और ताकत के लिए बंधे हैं। वे सभी एक दूसरे के साथ काम कर रहे हैं ताकि टीम को शीर्ष पर पहुंचने में मदद मिल सके। ईसाई एक दूसरे को ऊपर खींच रहे हैं। हम एक दूसरे की ताकत पर भरोसा कर रहे हैं। सच कहूँ तो, अगर हम में से एक गिरता है, तो हम सभी के गिरने का खतरा है। हम आपस में जुड़े हुए हैं। तो अगर आपके पास एक जीवन मिशन है और आपका जीवन कहीं जा रहा है, तो यह वास्तव में मायने रखता है कि आप किसके साथ बंधे हैं।

"अविश्वासियों के साथ जूए में न जुतो। क्योंकि धार्मिकता और दुष्टता का क्या मेल है? या ज्योति का अन्धकार से क्या मेल हो सकता है?" (2 कुरिन्थियों 6:14) यदि आपके पास एक जीवन



**understanding, you better learn how to get that bucket down in the deep waters of a wise man's life and pull out that water. The way to do this is by asking questions.**

**I don't know about you, but I have a relatively standard list of questions that I'm ready to ask at the drop of a hat when I'm around wise people who can mentor me. When I'm around people who know something I don't know, who've experienced something I haven't experienced, who can help mold me, I have questions like these:**

- a) **"Tell me about the greatest decisions you've ever made.**
- b) **Tell me about the greatest successes in your life and what you learned from them.**
- c) **Tell me about the greatest failure in your life and what you learned from it.**
- d) **How do you manage your time?**
- e) **How do you handle stress?**
- f) **What are the books that you've read that have made the greatest difference in your life?"**

**Mark this well: The true mark of wisdom is the ability to draw good counsel out of other people. When you can do that, it will help you live the maximum life.**

**I read a true story about a fellow who is now preaching, but when he was an intern for a preacher, he was there for an entire year. And he said, "You know the whole time I was there, the guy got up and preached and he never preached a dud. Every sermon wasn't just a hit, it was a home run; he just knocked it out of the park. So I went in there to interview him and said, 'I've been with you a year, and you've never messed up, you've never flopped, I want to know your secret.' The preacher said, 'I don't have any secrets.' The intern insisted 'No, no, don't give me that. There is something different about you than other people who have preached, I want to know what it is.' He said, "Really, really, I do what other preachers do.' And the intern asked, 'No, you tell me, is there anything in your life?' The preacher said, 'Thirty years ago when I went into the pulpit, I made a covenant with God. I told Him if He would bless what I**

मिशन है और आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ साझेदारी में हैं जो इसे स्वीकार नहीं करता है, लेकिन इसका विरोध करता है, तो सबसे अच्छा वे इसका विरोध करेंगे, कम से कम वे इसे तोड़ देंगे। बेहतर होगा आप अपने जीवन साथी का चुनाव सोच-समझकर करें। मैं आपके व्यापारिक भागीदारों के बारे में बात कर रहा हूँ। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं आपके विवाह सहयोगियों के बारे में बात कर रहा हूँ। आपको एक साथी की जरूरत है जो आपको प्रेरित करे।

#### 4. ऐसे दोस्त चाहिए जो आपके लिए महसूस करें।

आपको कुछ ऐसे दोस्तों की जरूरत है जो आपका साथ दें। "मित्र सब समयों में प्रेम रखता है..." (नीतिवचन 17:17क) एक सच्चा मित्र वह होता है जो तब आता है जब बाकी सब चले जाते हैं। जब अन्य लोग आपके माध्यम से देखते हैं, तो एक मित्र आपको देखता है। जब आप कोई गलती करते हैं और बाकी सब उसमें घिसना चाहते हैं, तो एक दोस्त उसे रब कर देता है। वे सुसंगत हैं, वे आपके साथ हैं, और वे भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से आपका समर्थन करते हैं। वे आपको प्रोत्साहित करते हैं। वे वही करते हैं जो इब्रानी लेखक ने अध्याय 10:24 में कहा है, "और आओ हम इस पर विचार करें कि हम किस प्रकार प्रेम और भले कामों में एक दूसरे को उभार सकें।"

मित्र अधिकतम जीवन की कुंजी हैं क्योंकि आप कभी भी अपने निकटतम मित्रों के स्तर से ऊपर नहीं उठेंगे। इसे अच्छी तरह से चिन्हित करें। यह वास्तव में बहुत कुछ वैसा ही है जैसा मैं भागीदारों के साथ अभी बात कर रहा था। आप कभी भी अपने करीबी दोस्तों के स्तर से ऊपर नहीं उठते। यह सच है। एक पंख के पक्षी एक साथ झुंड में आते हैं। इसलिए, यदि आप बाज के साथ उड़ना चाहते हैं, तो आप टर्की के साथ नहीं दौड़ सकते।

"धोखा न खाओ: 'बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।'" (1 कुरिन्थियों 15:33) मैं यहाँ कुछ रिश्तों के बारे में आपके साथ बहुत खुलकर बात करना चाहता हूँ, बहुत स्पष्ट। यदि आप अधिकतम जीवन जीने के बारे में गंभीर हैं और भगवान होने का मतलब है कि आपको कुछ दोस्ती तोड़नी पड़ सकती है जो अभी आपके पास है। यह सच है। बुरी संगति अच्छे चरित्र को भ्रष्ट कर देती है। आप में से कुछ के अपने जीवन मिशन पर रुके होने या परमेश्वर के साथ पूरी तरह से आगे बढ़ने का एक कारण यह है कि आप इस बात से डरते हैं कि यह एक रिश्ते में क्या करेगा। आपको डर है कि आपको अस्वीकार कर दिया जाएगा। आपको डर है कि वे अस्वीकार कर देंगे। आपको डर है कि आपका उपहास किया जाएगा या जो भी हो। क्या आप अपना समय बर्बाद करना चाहते हैं, अपना जीवन बर्बाद करना चाहते हैं, बस लोकप्रिय होने की तलाश में हैं?

सीधे शब्दों में कहा जाए, तो मुख्य बात यह है: "क्या मैं परमेश्वर की स्वीकृति के बारे में अधिक परवाह करता हूँ या किसी और की?" यदि आप स्वयं के प्रति ईमानदार हैं और आपका उत्तर है: मैं वास्तव में किसी और के अनुमोदन की अधिक परवाह करता हूँ, तो बाइबल उसे मूर्तिपूजा कहती है। यह बस किसी और को

do, that I would read the New Testament each week.' He said, 'In 30 years, I've never missed a week in that commitment.'" Wouldn't you hate to have left without that deep water of wisdom—staying in the Word?

#### Accept suggestions or accept feedback.

"Let the wise listen and add to their learning, and let the discerning get guidance—" (Proverbs 1:5) Sometimes when you listen, you're going to have to listen to criticism. That's okay as long as it's from a good source one who loves you and who's wise. Consider Proverbs 25:12, "Like an earring of gold or an ornament of fine gold is a wise man's rebuke to a listening ear."

Folks, when you're in the presence of someone who is knowledgeable, someone you trust and someone who loves you, listen to them. Whether they encourage you or whether they correct you, the feedback is essential to the maximum life. I don't know how many of you are into rocket guidance; probably not all that many, but when NASA launches a rocket to go up to the moon or Mars or whatever, do you know how they do that? It's not that easy to do because the earth is constantly moving, the moon is constantly moving around the earth, both those bodies are moving around the sun and our whole solar system is moving through space. How do you keep that rocket on track? They don't just program in the direction and say, "All right, it's on its own." There is a computer on that rocket that every millisecond is feeding back data to the home computer which is constantly sending back to correct the course. There is a constant feedback to keep that rocket on course. That's the way it is in life and that's why we need mentors.

Now whenever I say that to an older Christian, his first reaction is, "Well, I've made so many mistakes in my life, I couldn't be a mentor." You don't have to be perfect to be a mentor; you just need to be just one step ahead. We need models to motivate us and mentors to mold us.

#### Partners to propel you.

People who are committed to the same life mission that you have motivate and spur you toward your common

भगवान के स्थान पर रखना है। आज हमारे पास इसके लिए एक और शब्द है, आज हम इसे सह-निर्भरता कहते हैं। सह-निर्भरता किसी और को आपके जीवन के लक्ष्यों, उद्देश्यों और महत्वाकांक्षाओं को निर्धारित करने देती है। आप इसे जो चाहें कह सकते हैं, लब्बोलुआब यह है कि यह गलत है। यह गलत है और यह अधिकतम जीवन को पानी से बाहर निकाल देता है।

आप में से कुछ लोगों को अपने कुछ करीबी रिश्तों के बारे में कुछ कठिन सवाल पूछने पड़ सकते हैं। आपको पूछने की आवश्यकता हो सकती है: "क्या वे मेरे जीवन मिशन में मदद कर रहे हैं या बाधा डाल रहे हैं?" "क्या वे बाहर ला रहे हैं जो भगवान मुझमें चाहते हैं?" "क्या वे मुझे ईश्वर के करीब खींच रहे हैं, या वे मुझे उससे दूर खींच रहे हैं?" जब आप अंतिम प्रश्न पर आते हैं और यदि आप पाते हैं कि वे आपको परमेश्वर से दूर खींच रहे हैं, तो वह व्यक्ति कोई मित्र नहीं है। मुझे परवाह नहीं है कि आप उन्हें कितने समय से जानते हैं। वे कोई मित्र नहीं हैं। फिर किसी को सही प्रकार के दोस्त कैसे मिलते हैं? आपको मिलता है। यदि आप चाहते हैं कि समय आपके लिए निवेश किया जाए, तो आपको वही करना होगा, लेकिन आपको मित्रों की आवश्यकता है, आपको ईश्वरीय मित्रों की आवश्यकता है, या आपका जीवन जीत जाएगा।

5. आपको बचाने के लिए आपको एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

यीशु ने कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत को उसके द्वारा बचाए।" (यूहन्ना 3:17) यह पुराना दृष्टांत इसे संक्षेप में समझाता है।

यदि हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता एक शिक्षक होती,  
भगवान ने हमें एक शिक्षक भेजा होगा।  
यदि हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता एक नए दर्शन की होती,  
भगवान ने एक दार्शनिक भेजा होगा।  
अगर यह पैसा होता,  
भगवान ने एक अर्थशास्त्री भेजा होगा।  
यदि हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता मनोरंजन में होती,  
भगवान ने एक कॉमेडियन भेजा होगा।  
लेकिन हमारी सबसे बड़ी जरूरत क्षमा थी,  
तो भगवान ने हमें एक उद्धारकर्ता भेजा।

रिश्ते बेहद जरूरी हैं। आपको प्रभु में आदर्शों, परामर्शदाताओं, भागीदारों, मित्रों और भाइयों और बहनों की आवश्यकता है। लेकिन वे वास्तव में किसी भी चीज़ के लायक नहीं हैं यदि वे उस रिश्ते की नींव पर नहीं बने हैं जो आपने व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह के साथ रखा है।

"देखो, ठीक समय पर, जब हम पापी ही थे, मसीह भक्तिहीनों के लिये मरा।" (रोमियों 5:6-8) बाद में उसी पहलू में उसने कहा, "उसने ऐसा इसलिए किया ताकि हम परमेश्वर के साथ मित्रता कर

goals. Jesus had 12 of them didn't he? If you read the New Testament, Paul had nine. Everybody needs a partner.

Very few people ever stop and ask: "What am I going to do with my life?" If you've been serious about this study, if you've taken notes, if you have developed a life mission and a life vision and if you've got concrete goals to take you to that maximum life you are among less than one percent of the people in this nation. That means you are going to have to actively seek out other people who want to grow with you because frankly, you're in a class by yourself. You need to find people who will want to help you grow.

Solomon said, "Two are better than one for they have a good return for their work." (Ecclesiastes 4:9) We all need partners. Benjamin Franklin had a support group that he called, "My Most Ingenious Friends." That group would get together, write papers, discuss them, ask questions and help each other. They met every Friday night for 40 years. Do you wonder why Franklin was creative and ingenious through his late eighties? Do you wonder why his very best inventions occurred after he was 70 years old? I'll tell you why, because he had partners who propelled him. Do you?

Thomas Edison had a group he called his "Mastermind Alliance." In a six-year period that group came up with 300 different patented inventions. You say, "I'm not an intellect." I'm no Edison, I'm no Franklin, and I don't need a 'Mastermind Alliance.'" If you're a Christian, you need partners to help pull you hand in hand on your mission to heaven. God designed his church in part to edify.

"So in Christ we who are many form one body, and each member belongs to all the others." (Romans 12:5) But look at this, using the metaphor of the human body, Paul in essence said, "Christians, you are partners in this journey called Life and you are relating to one another like the heart relates to the lungs, or the arm to the hand, or the neck to the head. You must have each other to lean on and draw strength from."

We're like a mountain-climbing team going up Mount Everest. They're tied together by those ropes. They're tied for their safety and strength. They're all working with one another to help the team reach the top of the peak. Christians are pulling each other up. We're relying on each other's strengths. Frankly, if one of us

सकें।" पूरे ब्रह्मांड में सबसे अधिक दिमाग को हिला देने वाली अवधारणाओं में से एक यह है कि भगवान, हर चीज का निर्माता मेरा दोस्त बनना चाहता है। वह अपना हाथ मेरे और आपके चारों ओर रखना चाहता है और कहता है, "मैं आपको आपके सबसे करीबी दोस्त की तरह प्यार करता हूँ। नहीं, मैं आपको आपके सबसे करीबी दोस्त से ज्यादा प्यार करता हूँ।" यह उस प्रेम के द्वारा संभव है जिसे यीशु ने प्रदर्शित किया।

अपने सभी रिश्तों की जांच करें। यीशु मसीह के साथ अपने रिश्ते से शुरू करें उसके वचन के प्रति आज्ञाकारिता के माध्यम से उस पर अपना विश्वास और भरोसा रखें। पाठ # 1302, 2 मार्च, 1997

अध्याय 8

## फिनिशिंग की कला

यह "अधिकतम जीवन - शक्ति के साथ और उद्देश्य के साथ जीना" श्रृंखला का अंतिम पाठ है। यदि आपने जीवन में अपने मिशन की जांच की है, एक दृष्टि को आकार दिया है, लक्ष्यों को निर्धारित किया है और सही रिश्ते सुरक्षित किए हैं, तो आपको अंत तक इसका पालन करने की आवश्यकता है।

आप दौड़ कैसे पूरी करते हैं? पवित्रशास्त्र कई बार जीवन की तुलना एक दौड़ से करता है। प्रेरितों के काम 20:24 में पौलुस कहता है, "...यदि मैं अपनी दौड़ पूरी कर लूँ और जो काम प्रभु यीशु ने मुझे दिया है उसे पूरा करूँ।" 2 तीमुथियुस 4 में पौलुस ने लिखा, "मैं ने दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" रूपक पर ध्यान दें, न केवल दौड़ में दौड़ने का, दोनों बार जब पौलुस ने दौड़ को पूरा करने की बात कीजाति। जीवन मैराथन है स्प्रिंट नहीं।

यदि आपने कभी कोई मैराथन देखी है, तो उसकी शुरुआत में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी होती है। जैसे-जैसे दौड़ आगे बढ़ती है, भीड़ कम होती जाती है। कुछ अच्छी तरह से समाप्त होते हैं, अन्य इतने अच्छे नहीं होते हैं, और कुछ बिल्कुल भी समाप्त नहीं होते हैं। यह वास्तव में जीवन का बहुत विशिष्ट है। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आप जीवन की शुरुआत कैसे करते हैं, महत्वपूर्ण यह है कि आप कैसे समाप्त करते हैं। अब तक आपके जीवन में आपके साथ जो कुछ हुआ है वह लगभग उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना आप इस बिंदु से आगे अपने जीवन के साथ करते हैं। आप इसे कैसे समाप्त करते हैं यह महत्वपूर्ण है। यदि इस श्रृंखला या अन्य अनुभवों या शिक्षाओं के माध्यम से आप अधिकतम जीवन जीने के रास्ते पर आ जाते हैं, तो मैं आपको इसे मरने तक जीने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। इसे समाप्त करो और पुरस्कार का दावा करो।

"इस तरह दौड़ो कि पुरस्कार पाओ।" (1 कुरिन्थियों 9:24) आप केवल दौड़ते ही नहीं हैं। तुम सिर्फ लक्ष्यहीन नहीं दौड़ते, तुम औसत दर्जे में नहीं दौड़ते, अगर दौड़ना ही है तो दौड़ो ऐसे कि

falls, then we're all in danger of falling. We are that interconnected. So if you've got a life mission and, your life is going somewhere, it really does matter who you're tied to.

**"Do not be yoked together with unbelievers. For what do righteousness and wickedness have in common? Or what fellowship can light have with darkness?" (2 Corinthians 6:14) If you have a life mission and you're in partnership with somebody who doesn't accept it, but opposes it, at very best they will resent it, at worst they will sabotage it. You'd better choose your life partners carefully. I'm talking about your business partners. But more importantly, I'm talking about your marriage partners. You need a partner who will propel you.**

### Need friends who will feel for you.

**You need some friends who will support you. "A friend loves at all times..." (Proverbs 17:17a) A true friend is someone who walks in while everybody else is walking out. When other people see through you, a friend sees you through. When you make a mistake and everybody else wants to rub it in, a friend rubs it out. They're consistent, they hang in there with you, and they support you emotionally, physically and spiritually. They encourage you. They do what the Hebrew writer said in chapter 10:24, "And let us consider how we may spur one another on toward love and good deeds."**

**Friends are a key to a maximum life because you will never rise above the level of your closest friends. Mark that well. It's really much like what I was just talking about with partners. You never rise above the level of your closest friends. It's true. Birds of a feather do flock together. So, if you want to soar with eagles, you can't run with the turkeys.**

**"Do not be misled: 'Bad company corrupts good character.'" (1 Corinthians 15:33) I want to be very frank with you about some relationships here, very frank. If you're serious about living the maximum life and being all God meant you to be, you may have to break off some friendships that you have right now. That's the truth. Bad company does corrupt good character. One of the reasons that some of you have stalled on your life mission or gone full steam ahead with God is because you're afraid of what that will do in a relationship. You're afraid you will be rejected. You're afraid they will disapprove. You're afraid you will be ridiculed or whatever. Do you want to waste your**

ईनाम पाओ। जैसा कि हम इस श्रृंखला को समाप्त करते हैं, मुझे आशा है कि एक्रोस्टिक फिनिश आपको उस पाठ्यक्रम को फिनिश लाइन तक बनाए रखने में मदद करेगा।

### **केंद्र**

यदि आपने अपने जीवन के लिए एक विजन स्टेटमेंट तैयार किया है, यदि आपने उस विजन को पूरा करने के लिए लक्ष्य तैयार किए हैं, तो उन चीजों को अपने सामने रखें। इसलिए मैं उन्हें लिखने पर जोर देता हूँ। अपने जीवन में आपको नियमित रूप से बैठने और अपने मूल्यों, अपने दृष्टिकोण और अपने लक्ष्यों की समीक्षा करने की आवश्यकता है, फिर "मैं कैसे कर रहा हूँ" का मूल्यांकन करें। जिग जिगलर ने कहा, "हम सभी को गर्दन के ऊपर से नियमित रूप से चेक-अप करने की आवश्यकता है।" प्लेटो ने कहा, "बिना जांचे-परखे जीवन जीने योग्य नहीं है।" पौलुस ने कहा, "अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आप को परखो।" (2 कुरिन्थियों 13:5) और नीतिवचन 4:26 में, सुलैमान ने कहा, "उन मार्गों पर ध्यान करो जिन पर तुम चलते हो।" इन महान कथनों को संक्षेप में कहा जा सकता है "नियमित रूप से अपने मूल्यों और लक्ष्यों को देखना और उनके बारे में प्रार्थना करना आपके जीवन में एक बड़ा बदलाव लाएगा। फिर जैसा कि आप अपना दैनिक एजेंडा बनाते हैं, प्रश्न पूछें: क्या मैं जो कहता हूँ वह महत्वपूर्ण है और मेरे दैनिक समय में परिलक्षित होता है? आप कैसे दौड़ पूरी करते हैं, यही अधिकतम जीवन की कुंजी है।

### **अवरोधन विकर्षण**

"इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें।" (इब्रानियों 12:1) जीवन की इस दौड़ में लेखक कहता है कि हर उस चीज़ को फेंक दो जो तुम्हें नीचे गिराने वाली है। आप कवच के सूट में मैराथन नहीं दौड़ते। आप एक ट्रायथलॉन में एक ओवरकोट में प्रवेश नहीं करते हैं। आप कुछ भी छोड़ देते हैं जो आपको वापस रोकता है, जो बाधा डालता है। आप विघ्नों को दूर करते हैं।

आपके जीवन में ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जो आपको अधिकतम जीवन जीने से विचलित करती हैं? खैर, हजारों बातें। यह क) पैसा बनाने के बारे में सोचने का विकर्षण हो सकता है; बी) गलत रिश्ते; या ग) यह विचार कि व्यस्त रहना बेहतर है। आप बस इन सब चीज़ों से अपने जीवन को अस्त-व्यस्त कर देते हैं। हजारों चीज़ें हैं। लेकिन शायद नंबर एक चीज़ जो ज्यादातर लोगों को अधिकतम जीवन से रोकती है, वह है उनका अतीत।

इतने सारे लोग अपने अतीत में फंस गए हैं। वे अपने स्वयं के गलत कार्यों के दोष को पकड़े हुए हैं। वे उन गलतियों की चोट को पकड़े हुए हैं जो उन पर की गई हैं। यदि इनमें से कोई भी आपका वर्णन करता है, तो आप अधिकतम जीवन नहीं जी रहे हैं। मैं आपको याद दिला दूँ, यदि आप अपने रियरव्यू मिरर में देखकर जीवन को नीचे गिराने जा रहे हैं, तो आप निश्चित रूप से बर्बाद हो जाएंगे।

time, waste your life, simply seeking to be popular?

Simply stated, the bottom line is: "Do I care more about God's approval or someone else's?" If you're honest with yourself and your answer is: I really do care about someone else's approval more, the Bible calls that idolatry. That is simply putting someone else in God's place. We've got another word for it today, today we call it co-dependency. Co-dependency is letting someone else set the goals, the purposes and the ambitions of your life. You can call it whatever you want, the bottom line is it's wrong. It's wrong and it blows the maximum life out of the water.

Some of you may need to ask some tough questions about some of your closest relationships. You may need to ask: "Are they helping or hindering my life mission?" "Are they bringing out what God wants in me?" "Are they drawing me closer to God, or are they drawing me farther away from Him?" When you get to the last question and if you find they're drawing you farther away from God, that person is no friend. I don't care how long you've known them. They are no friend. Then how does one get the right kind of friends?" In a nutshell, I think it's to be the right kind of friend. You attract what you are, you reap what you sow. What you give as a friend to others is usually what you get. If you want time invested in you, you'll have to do the same, but you need friends, you need godly friends, or your life won't be what it can be.

You need a Savior to save you.

Jesus said "'For God did not send his Son into the world to condemn the world, but to save the world through Him.'" (John 3:17) This old illustration explains it succinctly.

If our greatest need had been an educator,

God would have sent us a teacher.

If our greatest need had been a new philosophy,

God would have sent a philosopher.

If it had been money,

God would have sent an economist.

If our greatest need had been in entertainment,

God would have sent a comedian.

आपको ध्यान केंद्रित करते हुए अपने सामने देखना होगा और जो पीछे छूट गया है उससे विचलित नहीं होना है।

"भाइयो, मुझे नहीं लगता कि मैंने अभी तक इसे पकड़ लिया है। लेकिन एक काम मैं करता हूँ:" (इसे देखें) "जो पीछे है उसे भूलकर आगे की ओर बढ़ते हुए, मैं पुरस्कार जीतने के लिए लक्ष्य की ओर दौड़ता हूँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर ऊपर बुलाया है।" (फिलिप्पियों 3:13) पौलुस को उसकी महान मसीही सेवा के लिए याद किया जाता है लेकिन वह एक महान मसीही उत्पीड़क भी था। पॉल के पास दोषी महसूस करने के लिए बहुत कुछ था। लेकिन यह जानते हुए कि उसे उसके उद्धारकर्ता द्वारा क्षमा कर दिया गया था, पॉल ने कहा, "नहीं, नहीं, मैं अतीत को भूल जाता हूँ और आगे बढ़ता हूँ। मैं अपनी यादों से प्रभावित नहीं होऊंगा।"

अब आप जो मसीह में हैं या तो उन दोष भावनाओं का पूर्वाभ्यास कर सकते हैं या आप उन्हें मुक्त कर सकते हैं। यदि आप अधिकतम जीवन जीने जा रहे हैं, यदि आप दौड़ पूरी करने जा रहे हैं, तो दुःख को जाने दें, मनमुटाव को जाने दें, दोष को जाने दें। वे आपको वापस पकड़ रहे हैं, वे आपको बर्बाद कर रहे हैं और वे केवल आपको चोट पहुँचा रहे हैं। अपने अतीत, अपने भय, अपने अपराध और अपनी शंकाओं को एक तरफ फेंक दो; उन विकर्षणों को रोके।

**इनाम पर ध्यान दें।**

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ: सबसे पहले हम अधिकतम जीवन क्यों जीना चाहेंगे? भगवान के लिए सब कुछ क्यों करें? प्रयास क्यों करें? यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आप क्यों का उत्तर नहीं दे सकते हैं, तो आप फिनिश लाइन तक नहीं पहुंच पाएंगे। क्यों निर्धारित करता है कि कब तक। यह क्यों निर्धारित करेगा कि आप इसमें कितना प्रयास करते हैं। हमने जिस परेशानी के बारे में बात की है, उस पर क्यों जाएं? अपने मूल्यों की जांच क्यों करें? वे लक्ष्य क्यों बनाते हैं? रिशतों की चिंता क्यों?

1. उद्देश्य - याद रखें कि ईश्वर ने आपको इस धरती पर विशिष्ट उद्देश्यों के लिए रखा है। "क्योंकि हम परमेश्वर के बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।" (इफिसियों 2:10) परमेश्वर के पास कुछ चीजें हैं, कुछ अच्छी चीजें हैं जो उसने हमें करने के लिए दी हैं। हमारे जन्म से पहले ही उसके पास हमारे लिए एक खाका था। सच कहूँ तो, यदि आप उस उद्देश्य को पूरा नहीं करते हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितना पैसा कमाते हैं, कितने लोग आपको जवाब देते हैं या कितनी पत्रिकाओं में आपको कवर पर आपकी तस्वीर मिलती है; यदि आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा नहीं करते हैं, तो आप असफल हैं। यह कड़वा है, लेकिन यह सच है। जो कुछ भी वह नहीं करता है जिसे करने के लिए उसे डिजाइन किया गया है, वह परिभाषा के अनुसार विफल है। स्थायी संतोष और आनंद पाने का एकमात्र तरीका है परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करना। वह'

**But our greatest need was forgiveness,**

**So God sent us a Savior.**

**Relationships are extremely important. You need models, mentors, partners, friends and brothers and sisters in the Lord. But those really aren't worth anything if they're not built on the foundation of the relationship that you have personally with Jesus Christ.**

**"You see, at just the right time, while we were still sinners, Christ died for the ungodly." (Romans 5:6-8) Later in that same facet, he said "He did that so we could have friendship with God." One of the most mind-boggling concepts in all the universe is that God, the Creator of everything wants to be my friend. He wants to put His arm around me and you and say, "I love you just like your closest friend. No, I love you more than your closest friend." That's possible through the love that Jesus demonstrated.**

**Examine all your relationships. Start with your relationship with Jesus Christ put your faith and trust in Him through obedience to His Word. Lesson # 1302, March 2, 1997**

## **Chapter 8**

### **The Art of Finishing**

**This is the final lesson in "The Maximum Life - Living With Power and With Purpose" Series. If you have examined your mission in life, shaped a vision, set goals and secured right relationships, you need to follow through to the end.**

**How do you finish the race? Scripture several times compares life to a race. Paul says in Acts 20:24, "...if only I may finish the race and complete the task the Lord Jesus has given me." In 2 Timothy 4 Paul wrote "I have finished the race, I have kept the faith." Notice the metaphor, not just of running the race, both times Paul talked about finishing the race. Life is a marathon not a sprint.**

2. परम पुरस्कार। - "हर कोई जो खेलों में प्रतिस्पर्धा करता है, सख्त प्रशिक्षण में जाता है। वे ऐसा एक ऐसा ताज पाने के लिए करते हैं जो लंबे समय तक नहीं चलेगा, लेकिन हम ऐसा एक ऐसा ताज पाने के लिए करते हैं जो हमेशा के लिए चलेगा। इसलिए मैं लक्ष्यहीन होकर एक आदमी की तरह नहीं दौड़ता... " (1 कुरिन्थियों 9:25-26) क्या आप देखते हैं कि पौलुस क्या कहता है? वह कहता है, अरे हाँ, ग्रीक, वे लोग अपने छोटे ओलंपिक में, वे एक स्टेफानोटिस के लिए दौड़ते हैं, जीत का ताज; थोड़ा स्वर्ण पदक या कुछ और। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हम क्यों भागते हैं? यह हमारे स्वर्ग में जाने के लिए काम नहीं करना है क्योंकि परमेश्वर ने उन सभी को मुफ्त में उद्धार दिया है जो विश्वास, भरोसे और आज्ञाकारिता के माध्यम से इसका दावा करते हैं। हम इस तरह से दौड़ना चाहते हैं जो फिनिश लाइन तक बुलाने वाले के लिए सम्माननीय हो।

देखिए, जीवन में तीन तरह की प्रेरणा होती है। वहाँ है:

ए) आंतरिक - जब आप खुद को प्रेरित करते हैं।

बी) बाहरी - जब लोग या चीजें आपको प्रेरित करने के लिए उत्प्रेरक हों।

ग) शाश्वत - जब एक स्वर्गीय इनाम जो कभी नहीं मिटता आपको प्रेरित करता है। अधिक से अधिक मसीही जीवन में दौड़ को पूरा करने की कुँजी है अपनी आँखों को अंतिम रेखा पर रखना और उसके ठीक दूसरी ओर क्या है।

"इस प्रकार हम अपनी दृष्टि देखी हुई वस्तु पर नहीं, परन्तु अनदेखी वस्तु पर लगाते हैं। क्योंकि देखी हुई वस्तु थोड़े ही दिनों की है, परन्तु अनदेखी वस्तु सदा बनी रहती है।" (2 कुरिन्थियों 4:18) पौलुस अगले पद में उस विचार को जारी रखता है, "अब हम जान गए हैं कि यदि पहिले का तम्बू जिसमें हम रहते हैं नाश हो गया, तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग में एक चिरस्थायी भवन मिला है, जो मनुष्यों के हाथ से नहीं बना। " (2 कुरिन्थियों 5:1) क्या आप प्रतिदिन जागकर सोचते हैं, कि मैं इस तम्बू में अपनी यात्रा का पूरा लाभ उठाऊंगा, परन्तु मेरी दृष्टि सचमुच उस भवन पर है? दृढ़ता की कुँजी परिप्रेक्ष्य है। क्या आप खत्म करना चाहते हैं? आपको अपने उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करना है न कि अपनी समस्याओं पर। "बाधाएं वो हैं जो आप तब देखते हैं जब आप अपनी नजर लक्ष्य से हटा लेते हैं।"

### **अच्छी आदतों को शामिल करें।**

आप जानते हैं कि हमने जानबूझकर और व्यवस्थित रूप से जीवन में अपना रास्ता चुनने की बात की है, और यह सब सच है। लेकिन स्पष्ट रूप से, आप में से कुछ, आप में से बहुत से लोग अधिकतम जीवन के लिए कदम उठाने की कोशिश नहीं करेंगे क्योंकि आप सोच रहे हैं कि यह बहुत अधिक काम और बहुत अधिक परेशानी है। लेकिन जैसे-जैसे आप अपनी पसंद में सुसंगत होते जाते हैं और जैसे-जैसे आप अपने निर्णयों में अनुशासित होते जाते हैं, यह लगभग स्वचालित हो जाता है। दूसरे शब्दों में, आप अच्छी आदतें विकसित करते हैं। सच कहूँ तो, जीवन बहुत थकाऊ होगा, यह

If you've ever watched a marathon, in its beginning there's this huge crowd all clumped together. As the race progresses, the crowd thins out. Some finish well, others not so well, and some don't finish at all. That's really pretty typical of life. It's not how you start in life that really matters, it's how you finish. What has happened to you in your life up unto this point is not nearly as crucial as what you do with your life from this point forward. It's how you finish that's important. If through this series or other experiences or teachings you get on track to live the maximum life, then let me encourage you to live it until you die. Finish it and claim the prize.

"Run in such a way as to get the prize." (1 Corinthians 9:24) You don't just run. You don't just run aimlessly, you don't run in mediocrity, if you're going to run, then run in such a way as to get the prize. As we conclude this series I hope the acrostic FINISH will help you keep that course all the way to the finish line.

#### Focus

If you prepared a vision statement for your life, if you prepared goals to accomplish that vision, keep those things in front of you. That's why I stress writing them down. In your life you need to regularly sit down and review your values, your visions and your goals then evaluate "how am I doing". Zig Ziglar said, "We all need to regularly do a check-up from the neck up." Plato said, "The unexamined life is not worth living." Paul said "Examine yourselves to see whether you're in the faith; test yourselves." (2 Corinthians 13:5) And in Proverbs 4:26, Solomon said "Ponder the paths that you walk." These great statements can be summarized in "Regularly looking at your values and goals and praying about them will make a bigger difference in your life." Then as you make out your daily agenda ask the question: Is what I say important and reflected in my daily time? That's the key to the maximum life in how you finish the race.

#### Intercept distractions

"Therefore, since we are surrounded by such a great

बहुत भारी होगा अगर हमें हर विचार और क्रिया को तोड़ना और उसका विश्लेषण करना पड़े। क्या होगा अगर आपको हर सांस के बारे में सोचना पड़े, सांस लें और अब सांस छोड़ें, तो सोचिए कितना भयानक है। क्या होगा अगर आपको हर उस चीज़ के बारे में सोचना पड़े जिससे आप गुज़रे हैं? भगवान ने हमें ऐसा नहीं बनाया है। उसने हमें आदत के प्राणी बनने के लिए बनाया है।

एक मैराथन धावक की सादृश्यता पर वापस। जब वह पहले आधे मील या मील के लिए शुरू होता है, तो वह एक गति निर्धारित करने और लय में अपनी सांस लेने पर ध्यान केंद्रित करता है। लेकिन लगभग एक मील के बाद, उसे अब इसके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है। वास्तव में, वह अपनी गति या अपनी श्वास के बारे में सोचे बिना मीलों तक जाएगा। उनमें से ज्यादातर अपने मन को एक हजार मील दूर भटकने देते हैं। क्यों? क्योंकि उन्होंने गति विकसित कर ली है और दौड़ने की अच्छी आदतें बना ली हैं। तब वे वास्तव में आराम करने में सक्षम होते हैं। अनिवार्य रूप से, आप आदतें विकसित करेंगे। सुनिश्चित करें कि आप उन आदतों को विकसित कर रहे हैं जो अधिकतम जीवन की ओर ले जाती हैं।

#### निराशा का गला घोटना।

मैं जानबूझकर स्ट्रेंगल हतोत्साहित करने का उपयोग करता हूँ। इससे पहले कि यह आपका गला घोट दे, इसे दबा दें। गलातियों 6:9 में कहा गया है, "हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि (उस शब्द को देखें) "यदि हम हियाव न छोड़ें" तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। बाइबिल। दोस्तों, निराशा आपके जीवन मिशन का एक घातक दुश्मन है। वास्तव में, मुझे विश्वास है कि निराशा शैतान के पास सबसे बड़ा हथियार है क्योंकि कुछ भी आपको अधिक अप्रभावी नहीं बना सकता है। जिस क्षण आप अधिकतम जीवन जीने के बारे में गंभीर हो जाते हैं आपके जीवन को परमेश्वर के लिए उपयोगी बनाने के लिए, शैतान आपको हतोत्साहित करने का प्रयास करेगा, विशेष रूप से शुरुआती दिनों में।

फिर से दौड़ सादृश्य का उपयोग करते हुए, मेरे लिए हतोत्साहन दीवार से टकराने जैसा है। क्या आपने कभी वह शब्द सुना है? धावक "दीवार से टकराना" शब्द का उपयोग करते हैं, क्योंकि देर से दौड़ में एक बिंदु होता है जहां शरीर का हर हिस्सा चीखना शुरू कर देता है। यह बंद होने लगता है। एक धावक जिस तरह से "दीवार से टकराने" से आगे निकल जाता है, वह भाग शुद्ध दृढ़ता के माध्यम से होता है, और यह जीवन की दौड़ में सच है।

मैं आपको एक साफ सुथरा फार्मूला देना चाहता हूँ, कुछ ऐसा जो तुरंत आपका दर्द दूर कर देगा और बस इतना कहेगा, "अरे, इसके बारे में चिंता मत करो।" मैं ऐसा नहीं कर सकता। दृढ़ता कुंजी है। किसी ने एक बार कहा था, "सफलता का रहस्य अपने आलोचकों को मात देना है।" क्या यह अच्छा नहीं है? महान ब्रिटिश जनरल वेलिंगटन ने एक बार कहा था, "ब्रिटिश सेना की सफलता का रहस्य दुश्मन से पांच मिनट अधिक समय तक लड़ना है।" आप किसी व्यक्ति की महानता को उसके धन से नहीं मापते हैं। आप किसी व्यक्ति की महानता को उसकी प्रतिभा से नहीं मापते हैं। आप किसी व्यक्ति की महानता को उसकी शिक्षा से नहीं आंकते।

cloud of witnesses, let us throw off everything that hinders and the sin that so easily entangles, and run with perseverance the race marked out for us." (Hebrews 12:1) The writer says in this race of life to throw off everything that is going to weight you down. You don't run a marathon in a suit of armor. You don't enter a triathlon in an overcoat. You shed anything that would hold you back, that would hinder. You eliminate the distractions.

What are the things in your life that would distract you from living the maximum life? Well, thousands of things. It might be the distraction of a) thinking about making money; b) wrong relationships; or c) the idea that busy is better. You just clutter your life with all these things. There are thousands of things. But probably the number one thing that hinders most folks from the maximum life is their past.

So many people are stuck in their past. They're holding on to the guilt of their own wrongdoing. They're holding on to the hurt of the wrongs that have been inflicted on them. If either of these described you, you're not living the maximum life. Let me remind you, if you're going to drive down life looking in your rearview mirror, you're sure to wreck. You've got to look out in front of you staying focused and not distracted by what is left behind.

"Brothers, I do not consider myself yet to have taken hold of it. But one thing I do:" (look at this) "Forgetting what is behind and straining toward what is ahead, I press on toward the goal to win the prize for which God has called me heavenward in Christ Jesus." (Philippians 3:13) Paul is remembered for his great Christian service but he was also a great Christian persecutor. Paul had plenty to feel guilty about. But knowing he was forgiven by his Savior, Paul said, "No, no, I forget the past and I press on. I won't be manipulated by my memories."

Now you who are in Christ can either rehearse those guilt feelings or you can release them. If you're going to live the maximum life, if you're going to finish the race,

आप किसी व्यक्ति की महानता को इस बात से मापते हैं कि उसे हतोत्साहित करने में क्या लगता है। महान लोग असाधारण दृढ़ संकल्प वाले साधारण लोग होते हैं। वे बस नहीं छोड़ते।

"इस कारण, हे मेरे भाइयो, स्थिर रहो। कोई बात तुम्हें विचलित न होने पाए। सर्वदा यहोवा के काम में अपने आप को पूरा दे, क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम यहोवा में व्यर्थ नहीं है।" (1 कुरिन्थियों 15:58) क्या मैं इसे आपके लिए व्याख्या कर सकता हूँ? "वहाँ पर लटका हुआ। वहीं डटे रहो, भगवान तुम्हारे प्रयासों के लिए तुम्हें पुरस्कृत करने जा रहा है।

मैं यह कहना चाहता हूँ, हालांकि यह कोई जादू का इलाज नहीं है, अगर आप अभी वहाँ बैठे हैं और निराश हैं और सोच रहे हैं कि जीवन कैसे कठिन, कठिन, या बदतर हो सकता है, तो आश्चर्य रहें कि आपका उद्धारकर्ता आपके साथ वहीं बैठा है। यदि आप अधिकतम जीवन जीने जा रहे हैं, तो उस जीवन में ऐसे बिंदु होंगे जहाँ भगवान आपकी प्रतिबद्धता का परीक्षण करेंगे। अब वह इसका परीक्षण नहीं करता है ताकि उसे पता चले कि आप कितने प्रतिबद्ध हैं। हमारा भगवान सब कुछ जानता है। वह पहले से ही जानता है कि आप कितने प्रतिबद्ध हैं। वह आपकी प्रतिबद्धता का परीक्षण करता है ताकि आपको पता चले कि आप कितने प्रतिबद्ध हैं।

आप दृढ़ता के साथ कैसे कर रहे हैं? क्या आप खत्म करते हैं? आप असफलता को कैसे संभालते हैं? जब चीजें सही नहीं होती हैं, जब आप कोई गलती करते हैं, तो क्या आप थोड़ी दया पार्टी करते हैं और कहते हैं, "बेचारा मैं, गरीब मैं।" क्या आप शिकायत करते हैं, क्या आप बहस करते हैं या आप हार मान लेते हैं? नहीं! इससे पहले कि यह आपका गला घोंट दे, आप निराशा का गला घोंट देते हैं।

मसीह को थामे रहो।

यदि आप सहयोग करते हैं तो ईश्वर आपको धारण करने की शक्ति देगा। वह आपको इसे पूरा करने की शक्ति देगा। आपको इसे अकेले नहीं करना है। यदि आप सहयोग करेंगे तो वह आपकी सहायता करेगा।

"इस बात का भरोसा रखो, कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा करेगा।" (फिलिप्पियों 1:6) "वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ बनाए रखेगा, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।" (1 कुरिन्थियों 1:8) निःसंदेह आप में से कुछ इस पाठ का अध्ययन कर रहे हैं जो अभी कठिन समय से गुज़र रहे हैं। आपको पूरा करने का मन ही नहीं कर रहा है। आपको ऐसा लग सकता है कि आप नीचे जा रहे हैं। आप इसका पता नहीं लगा सकते। भगवान तुम्हारे साथ नहीं है। दौड़ खत्म नहीं हुई है। वह जिसने आप में अपना अच्छा काम शुरू किया है, उसे आपके जीवन में पूरा करना चाहता है। मसीह को थामे रहो।



**let go of the grief, let go of the grudges, let go of the guilt. They're holding you back, they're wrecking you and they're only hurting you. Throw aside your past, your fears, your guilt and your doubts; intercept those distractions.**

**Note the reward.**

**Let me ask you a question: Why would we want to live the maximum life in the first place? Why go all out for God? Why make the effort? It's really pretty important because if you can't answer the why, you won't make it to the finish line. The why determines the how long. The why will determine the effort you put into it. Why go to all the trouble we've talked about? Why examine your values? Why make those goals? Why worry about relationships?**

**1. The purpose - Remember that God put you on this earth for specific purposes. "For we are God's workmanship, created in Christ Jesus to do good works, which God prepared in advance for us to do." (Ephesians 2:10) God has some things, some good things that He made us to do. He had a blueprint for us before we were ever born. Frankly, if you don't fulfill that purpose it does not matter how much money you make, how many people answer to you or how many magazines you get your picture on the cover; if you don't fulfill God's purposes for your life, you're a failure. That's harsh, but it's true. Anything that does not do what it's been designed to do is a failure by definition. The only way you're going to have any lasting satisfaction and joy is by fulfilling God's purpose. That's why you make the effort.**

**2. The ultimate reward. - "Everyone who competes in the games goes into strict training. They do it to get a crown that will not last; but we do it to get a crown that will last forever. Therefore I do not run like a man aimlessly..." (1 Corinthians 9:25-26) Do you see what Paul says? He says, oh yes, the Greek, those folks in their little Olympics, they run for a stephanotis, a crown of victory; a little gold medal or something else. But do you know why we run? It's not to work our way into heaven because God gave salvation free to all who claim it through faith, trust and obedience. We want to run in**

"यह अंत करने के लिए मैं श्रम करता हूँ, उनकी सारी ऊर्जा के साथ संघर्ष कर रहा हूँ, जो मुझमें इतनी ताकत से काम करती है।" (कुलुस्सियों 1:29) आप में से कुछ गंभीरता से यात्रा की अभी शुरुआत ही कर रहे हैं। आश्वस्त रहें कि जो दौड़ को प्रभावी ढंग से चलाते हैं और जो पुरस्कार के लिए आगे बढ़ते हैं और जो अधिकतम जीवन जीते हैं, वे उनके भीतर काम करने वाली मसीह की शक्ति के कारण उन सभी से कहीं अधिक करेंगे जो उन्होंने कभी सोचा था या कल्पना की थी।

क्या आपने अपने जीवन की जाँच की है जैसा पौलुस 2 कुरिन्थियों 13:5 में कहता है? क्या आपने अपने विश्वास का परीक्षण किया है? क्या आप अंत में शुरुआत कर रहे हैं? क्या आप अधिकतम जीवन जीने के रास्ते पर हैं? या आप निराशा में लोट रहे हैं? मसीह को धामे रहो। यदि आप मसीह में नहीं हैं, तो यही समय है। उसके सुसमाचार संदेश, उसके मेल-मिलाप के संदेश के प्रति आज्ञाकारिता के द्वारा उस पर अपना भरोसा और विश्वास रखें।  
स्टीव फ्लैट एजीपाठ # 1303 9 मार्च, 1997

**a way that's honorable to that calling all the way to the finish line.**

**Observe, there are three kinds of motivation in life. There is:**

- a) internal - when you motivate yourself.**
- b) external - when people or things are catalysts to motivate you.**
- c) eternal - when a heavenly reward that never disappears motivates you. The key to finishing the race in the maximum Christian life is to keep your eyes on the finish line and what's just on the other side of it.**

**"So we fix our eyes not on what is seen, but on what is unseen. For what is seen is temporary, but what is unseen is eternal." (2 Corinthians 4:18) Paul continues that thought in the next verse, "Now we know that if the early tent we live in is destroyed, we have a building from God, an eternal house in heaven, not built by human hands." (2 Corinthians 5:1) Do you wake up every day and think, I'll make the most of my journey in this tent, but I really have got my eye on that mansion? The key to persistence is perspective. Do you want to finish? You've got to concentrate on your purpose and not your problems. "Obstacles are what you see when you take your eyes off the goal."**

**Incorporate good habits.**

**You know we have talked about deliberately and systematically choosing your course in life, and all that's true. But frankly, some of you, a lot of you won't try the steps to the maximum life because you're thinking that's too much work and too much trouble. But as you become consistent in your choices and as you become disciplined in your decisions, it almost becomes automatic. In other words, you develop good habits. Frankly, life would be too tedious, it would be too overwhelming if we had to break down and analyze every thought and action. What if you had to think about every breath, inhale and now exhale, think how terrible. What if you had to think about everything you went through? God didn't make us that way. He created us to become creatures of habit.**

Back to the analogy of a marathon runner. When he starts for that first half-mile or mile, he concentrates on setting a pace and getting his breathing in rhythm. But after about a mile, he doesn't have to think about that anymore. In fact, he will go miles without thinking about his pace or his breathing. Most of them let their minds wander a thousand miles away. Why? Because they have developed a pace and set good running habits. Then they're actually able to relax. Inevitably, you will develop habits. Make sure that you are developing the habits that lead to the maximum life.

**Strangle discouragement.**

I intentionally use Strangle discouragement. Choke it before it chokes you. Galatians 6:9 states "Let us not become weary in doing good, for at the proper time we will reap a harvest if (see that word) "if we do not give up." I have circled that "if" word in my Bible. Folks, discouragement is a deadly enemy of your life mission. In fact, I'm convinced that discouragement is the greatest weapon that Satan has because nothing will render you more ineffective more quickly. The moment you get serious about living the maximum life to make your life count for God, the devil will try to discourage you, especially early on. You've got to push past the discouragement to make it to the finish line.

Again using the race analogy, discouragement to me is like hitting the wall. Have you ever heard that term? Runners use the term, "hitting the wall," because late in a distance race there's a point where every part of the body just begins to scream. It begins to shut down. The only way a runner gets past the "hitting the wall," part is through pure perseverance, and that's true in the race of life.

I'd like to give you a neat little formula, something that would instantly make your pain go away and just say, "Hey don't worry about that." I can't do that. Perseverance is the key. Somebody once said, "The secret to success is to outlast your critics." Isn't that good? Wellington, the great British general, once said, "The secret of the British army's success is to fight five minutes longer than the enemy." You don't measure a

**man's greatness by his wealth. You don't measure a man's greatness by his talent. You don't measure a man's greatness by his education. You measure a man's greatness by what it takes to discourage him. Great people are just ordinary people with extraordinary determination. They just don't quit.**

**"Therefore, my brothers, stand firm. Let nothing move you. Always give yourselves fully to the work of the Lord, because you know that your labor in the Lord is not in vain." (1 Corinthians 15:58) Can I paraphrase that for you? "Hang in there. Hang in there, God is going to reward you for your efforts."**

**I do want to say this though it's no magic cure, if you're sitting there right now discouraged and wondering how life could get any harder, any tougher, or any worse, be assured that your Savior is sitting right there with you. If you're going to live the maximum life, there will be points along that life where God will test your commitment. Now He doesn't test it so that He'll know how committed you are. Our God knows everything. He already knows how committed you are. He tests your commitment so that you will know how committed you are.**

**How are you doing with perseverance? Do you finish? How do you handle failure? When things don't go right, when you make a mistake, do you have a little pity party and say, "Poor me, poor me." Do you complain, do you argue or do you give up? No! You strangle discouragement before it strangles you.**

**Hold on to Christ.**

**If you cooperate, God will give you the power to hold on. He'll give you the power to complete it. You don't have to do it alone. He'll help you if you'll cooperate.**

**"Being confident of this, that he who began a good work in you will carry it on to completion until the day of Christ Jesus." (Philippians 1:6) "He will keep you strong to the end so that you will be found blameless on**

**the day of our Lord Jesus Christ." (1 Corinthians 1:8)**

**No doubt some of you studying this lesson are going through difficult times right now. You don't feel like finishing at all. You may feel like you're going under. You can't figure it out. God is not through with you. The race is not over. He who began His good work in you wants to bring it into completion in your life. Hold on to Christ.**

**"To this end I labor, struggling with all His energy, which so powerfully works in me." (Colossians 1:29)**

**Some of you are just beginning the journey, seriously. Be assured those who run the race effectively and who head for the prize and who live the maximum life will do exceedingly more than all they ever thought or imagined because of the power of Christ working within them.**

**Have you examined your life as Paul says in 2 Corinthians 13:5? Have you tested your faith? Are you beginning at last? Are you well on your way to living the maximum life? Or are you wallowing in discouragement? Hold on to Christ. If you are not in Christ, now is the time. Put your trust and faith in Him by obedience to His gospel message, His message of reconciliation.**

**Steve Flatt AG lesson**

**# 1303 March 9, 1997**

--	--